मुद्रक—महावीरप्रसाद पोद्दार 'वणिक प्रेस' १०, मिर्जापुर स्ट्रीट, कलकत्ता.

लोक-रहस्य ।
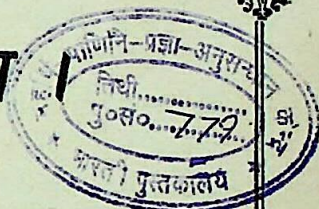
स्व० बा० बंकिमचन्द्र चटर्जी

-: के :-

बंगला "लोक-रहस्य" का

हिन्दी अनुवाद.

प्रकाशक

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी

१२६, हरिसन रोड,

कलकत्ता.

प्रथमवार] ज्येष्ठ सम्वत् १९७६ वि० [मूल्य ॥=)

वक्तव्य
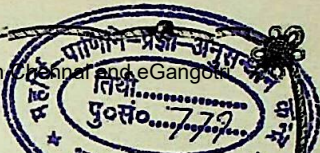
वङ्गभाषामें व्यङ्ग और हास्यरसकी पुस्तकोंमें लोकरहस्य का स्थान बहुत ऊंचा है। मार्मिकता इस पुस्तककी जान है। आप जानते हैं खुली बातका इतना असर नहीं होता जितना भेद भरी बातोंका, आप देखेंगे कि इस पुस्तकमें कोई बात बिल्कुल खोलकर नहीं कही गई है, किन्तु गुप्त रीतिसे ऐसी चोट की गई है कि पढ़कर मर्मज्ञ पाठकोंके हृदयमें गुदगुदी होने लगती है। इस विषयमें बङ्किम बाबू अपने ज़मानेमें अपना सानी नहीं रखते थे। प्रकट रूपसे कोई बात कहना आसान है लेकिन मज़ाकमें मार्केकी बात कहना और मनमानी रीतिसे घुमा फिरा कर कहना सहज साध्य कार्य नहीं है।

हर्षकी बात है कि हिन्दीकी गोद ऐसे सज्जनोंसे बिल्कुल सूनी नहीं है। स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट इस कलामें पण्डित थे, स्व० बाबू बालमुकुन्द गुप्त इन बातोंके गुरु थे और वर्त्तमान लेखकोंमें श्री पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी हिन्दी संसारमें सरस और मार्मिक रचनाके लिए प्रसिद्ध हैं। पण्डित बद्रीनाथ भट्ट और पण्डित मन्नन द्विवेदी गजपुरी भी समय-समय पर हिन्दीको ऐसी रचनाओंसे अलंकृत करते रहते हैं। गजपुरीजीने पिछले दिनोंमें प्रतापमें पटवारियोंपर एक ऐसा ही हास्यरस पूर्ण प्रबन्ध लिखा था जिसे पढ़कर बङ्किमबाबूके अङ्गरेजस्तोत्रकी याद आती थी। यदि ये सज्जन बराबर हिन्दीमें इस तरहके लेख लिखते रहें तो हिन्दीमें भी लोक-रहस्य सरीखी पुस्तकें प्रस्तुत हो सकती हैं।

हम पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदीके बड़े कृतज्ञ हैं, क्योंकि इस अनुवादमें उन्होंने बहुत अधिक सहायता दी है। आशा है आप इसे पढ़ परम पुलकित होंगे।

निवेदन ।

अपनी छठवीं भेंट "*कर्मवीर गान्धीके महत्वपूर्ण लेख और व्याख्यानोंमें*" जिन तीन नई पुस्तकोंके निकालनेकी चर्चा की गई थी उनमें से दो, *सेवासदन* और *संकृत कवियोंकी अनोखी सूझ*, पहले प्रकाशित हो चुकी है। तीसरा यह "*लोक-रहस्य*" आज आपके हाथमें है। हमारे कई मित्रोंका कहना है कि एजेन्सी धीरगतिसे अग्रसर हो रही है और हम भी जब *क० गान्धी* की पुस्तक पर अगस्त १९१८ छपा हुआ पाते हैं और उसके बाद आज मई १९१९ में देखते हैं कि ९ महीनेमें एजेन्सी केवल तीन पुस्तकें प्रकाशित कर सकी है तो यह कहनेकी हमारी हिम्मत नहीं पड़ती कि उलाहना झूठ है। हमें अपने बचावमें मित्रोंसे यही कहना है कि बीते वर्षमें एजेन्सीके काम पर यह समझकर सन्तोष प्रगट करें कि अभी उसकी बिल्कुल बाल्यावस्था है। इस अवस्थामें अधिक और दृढ़ काम की आशा करना कुछ अनुचित लोभ कहा जा सकता है। लेकिन हम अपने प्रेमियोंको भविष्यके सम्बन्धमें आशा दिला सकते हैं कि एजेन्सी अब आपकी अधिक सेवा करनेमें समर्थ होगी। एजेन्सीके लिए अब कई प्रकारके सुभीते हो गये हैं, जिनमें सबसे बड़ा सुभीता अपने निजके प्रेसका है। एजेन्सीका अब अपना बहुत अच्छा "*वणिक् प्रेस*" नामक एक प्रेस हो गया है। हमें आशा है कि हम बहुत शीघ्र ही कई नई और उपयोगी पुस्तकें आपकी भेंट करनेमें समर्थ होंगे।

विनीत—

प्रकाशक.

सूची ।

—:*:—

———

लोक-रहस्य

अंगरेज स्तोत्र
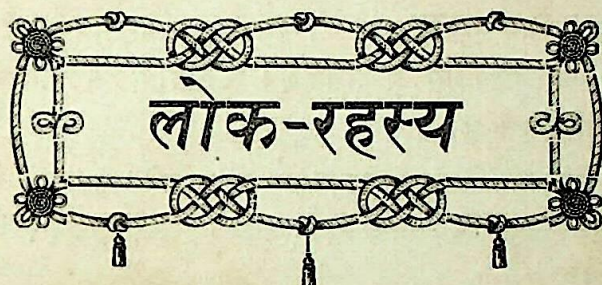
(महाभारतसे)

हे अंगरेज! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। १

तुम अनेक गुणोंसे विभूषित, सुन्दरकान्तिविशिष्ट और विपुल-सम्पद्सम्पन्न हो, अतएव हे अंगरेज! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २

तुम हर्त्ता हो शत्रुओंके, तुम कर्त्ता हो आईन कानूनके, तुम विधाता हो नौकरी चाकरीके, अतएव हे अंगरेज! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूं। ३

तुम समरमें दिव्यास्त्रधारी, शिकारमें बल्लमधारी, विचारालयमें आध इंच मोटा बेतधारी और भोजनके समय कांटा चम्मचधारी हो, इसलिये हे अंगरेज मैं तुम्हें दण्डवत करता हूं। ४

तुम एक रूपसे राजपुरीमें रहकर राज्य करते हो, दूसरे रूपसे हाट बाजारमें व्यापार करते हो, तीसरे रूपसे आसाममें चा की खेती करते हो, अतएव हे त्रिमूर्त्ते! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। ५

तुम्हारा सत्त्वगुण तुम्हारे रचे ग्रन्थोंमें प्रकाशित है, तुम्हारा रजोगुण तुम्हारे किये युद्धोंमें प्रगट है, तुम्हारा तमोगुण तुम्हारे लिखे भारतीय समाचारपत्रोंमें प्रकाशित है। अतएव हे त्रिगुणात्मक! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। ६

तुम विद्यमान हो इसीलिये तुम सत् हो, तुम्हारे शत्रु रणक्षेत्रमें चित हैं; तुम उम्मेदवारोंके आनन्द हो; अतएव हे सच्चिदानन्द! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। ७

तुम ब्रह्मा हो, क्योंकि प्रजापति हो; तुम विष्णु हो, क्योंकि लक्ष्मी तुम्हींपर कृपा करती हैं; और तुम महादेव हो, क्योंकि तुम्हारी घरवाली गौरी है। अतएव हे अंगरेज! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। ८

तुम इन्द्र हो, तोप तुम्हार वज्र है; तुम चन्द्र हो, इनकम टैक्स तुम्हारा कलंक है; तुम वायु हो, रेलवे तुम्हारी गति है; तुम वरुण हो, समुद्र तुम्हारा राज्य है। अतएव हे अंगरेज! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं।९

तुम्हीं दिवाकर हो, तुम्हारे आलोकसे हमारा अज्ञानान्धकार दूर होता है; तुम्हीं अग्नि हो क्योंकि सब कुछ स्वाहा किये जाते हो तुम्हीं यम हो, विशेषकर अपने मातहतोंके। अतएव मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। १०

तुम वेद हो, मैं ऋक् यजु आदिको नहीं मानता हूं, तुम स्मृति हो, मन्वादि भूल गया हूं, तुम दर्शन हो, न्याय मीमांसादि तो तुम्हारे ही हाथ हैं। अतएव हे अंगरेज! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। ११

हे श्वेतकान्त! तुम्हारे अमलधवलद्विरद-रद शुभ्र महाश्मश्रु शोभित मुखमण्डलको देखकर इच्छा होती है कि तुम्हारा स्तव करूं; अतएव हे अंगरेज! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। १२

तुम्हारी हरितकपिश पिङ्गल लोहितकृष्ण शुभ्रादि नाना वर्ण शोभित, अतियत्नरंजित, भ्रमरमर्जित कुन्तलावलि देखकर अभि-

लाषा होती है कि तुम्हारा गुण गाऊं। अतएव हे अंगरेज! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। १३

कलिकालमें तुम गौराङ्गके अवतार हो, इसमें सन्देह नहीं। हैट (टोप) तुम्हारा मुकुट, पेंट तुम्हारी काछनी और चाबुक तुम्हारी बांसुरी है। अतएव हे गोपीवल्लभ! मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। १४

हे वरद! मुझे वरदान हो। मैं सिरपर समला रखकर तुम्हारे पीछे पीछे फिरूंगा—मुझे नौकरी दो। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। १५

हे शुभङ्कर! मेरा भला करो। मैं तुम्हारी खुशामद करूंगा, ठकुर-सुहाती करूंगा, जो कहोगे वही करूंगा। मुझे बड़ा आदमी बना दो, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। १६

हे मानद? मुझे खिताब दो, खिलत दो, पदवी दो, उपाधि दो—मुझे अपना प्रसाद दो। मैं तुम्हारी वन्दना करता हूं। १७

हे भक्तवत्सल! मैं तुम्हारा उच्छिष्ट खाना चाहता हूं, तुमसे हाथ मिला कर लोगोंमें महासम्मानित होनेकी मेरी इच्छा है—तुम्हारे हाथ की लिखी दो चार चिट्ठियां अपने सन्दूकचेमें रख कर औरोंको नीचा दिखाना चाहता हूं। अतएव हे अंगरेज तुम मुझ पर प्रसन्न हो, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। १८

हे अन्तर्यामी! मैं जो कुछ करता हूं सो तुम्हारे रिझानेके लिये। तुम दाता कहोगे इस लिये दान करता हूं। तुम परोपकारी कहोगे इस लिये परोपकार करता हूं। तुम विद्वान कहोगे इसलिये पढ़ता हूं। अतएव हे अङ्गरेज! तुम मुझ पर प्रसन्न हो। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। १९

मैं तुम्हारे इच्छानुसार अस्पताल बनवाऊंगा, तुम्हारे प्रीत्यर्थ विद्यालय बनवाऊंगा, तुम्हारे आज्ञानुसार चन्दा दूंगा; तुम मुझ पर प्रसन्न हो। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २०

हे सौम्य ! जो तुम्हारी इच्छा है वही मैं करूंगा। मैं कोट पेंट पहनूंगा, ऐनक लगाऊंगा, कांटे चम्मचसे मेज पर खाऊंगा। तुम मुझ पर प्रसन्न हो। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २१

हे मिष्ट भाषी ! मैं मातृभाषा त्यागकर तुम्हारी भाषा बोलूंगा बाप दादोंका धर्म्म छोड़ कर तुम्हारा धर्म्म ग्रहण करूंगा। लाला बाबू न कहलाकर मिस्टर बनूंगा। तुम मुझपर प्रसन्न हो। प्रणाम करता हूं।२२

हे सुन्दर भोजन करने वाले ! मैं रोटी छोड़ कर पाव रोटी खाता हूं, निषिद्ध मांससे पेट भरता हूं। मुर्गेका कलेवा करता हूं। अतएव हे अंगरेज ! मुझे चरणोंमें स्थान दो। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २३

मैं विधवाओंका व्याह कराऊंगा, जातिभेद उठा दूंगा क्योंकि तुम मेरी बड़ाई करोगे, अतएव हे अंगरेज ! तुम मुझ पर प्रसन्न हो। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २४

हे सर्व्वद ! मुझे धन दो, मान दो, यश दो, मेरी सब इच्छाएं पूरी करो। मुझे बड़ी नौकर दो, राजा बनाओ, रायबहादुर बनाओ, कौन्सिलका मेम्बर बनाओ, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २५

यदि यह न दो तो अपनी गोठ और ज्योनारोंमें मुझे न्योत बुलाओ, बड़ी बड़ी कमेटियोंका मेम्बर बनाओ, सिनेटका मेम्बर बनाओ, असेसर बनाओ, अनाड़ी मजिस्टर बनाओ, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २६

मेरी स्पीच सुनो, मेरा प्रवन्ध पढ़ो, तारीफ करो और वाह वा कहो, फिर मैं सारी हिन्दूसमाजकी निन्दा की भी परवा न करूंगा, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं। २७

हे भगवन् ! मैं अकिंचन हूं, मैं तुम्हारे द्वार पर खड़ा हूं, भूल न जाना मैं तुम्हें डाली भेजूंगा। तुम मुझे याद रखना। मैं तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम करता हूं। २८

जनमेजय बोले, हे महर्षे! आपने कहा है कि कलियुगमें बाबू नामक एक प्रकारके मनुष्य पृथिवी पर आविर्भूत होंगे। यह कैसे होंगे और पृथिवी पर जन्म ग्रहणकर क्या करेंगे यह सुननेके लिये मैं उत्सुक हो रहा हूं। आप कृपा कर यह विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये।

वैशम्पायनने कहा हे राजन्! आहारनिद्राकुशली विचित्रबुद्धिवाले बाबुओंकी कथा कहता हूं, आप श्रवण करें। मैं चश्माधारी, उदार-चरित्र, बहुभाषी, मिष्टान्नप्रिय बाबुओंका चरित्र वर्णन करता हूं, आप श्रवण करें। हे राजन्! जो चित्र विचित्र कपड़े पहने हो, हाथमें बेत लिये हो, बाल संवारे हों और बूट चढ़ाये हो—वही बाबू है। जो बातोंमें हारे नहीं, परायी भाषामें पारदर्शी हो, मातृभाषाका विरोधी हो वही बाबू है। महाराज! बहुतसे ऐसे महाबुद्धिमान बाबू उत्पन्न होंगे जो मातृभाषामें बातचीत तक न कर सकेंगे। जिनकी दसों इन्द्रियां स्वाधीन होनेके कारण अपरिशुद्ध और जिनकी रसना परजातिके थूकसे पवित्र है, वही बाबू है। जिसके पैर सूखी लकड़ी की तरह और हाड़ मांससे रहित होने पर भी भागनेमें समर्थ हैं, हाथ दुबले और कमज़ोर होने पर भी कलम पकड़ने और तनख्वाह लेनेमें चतुर हैं, चमड़ा मुलायम होने पर भी सात समुद्र पार की बनी वस्तु विशेषकी चोट सहनेमें समर्थ है, जिनकी इन्द्रियमात्रकी इस प्रकार प्रशंसा की जा सकती हो वही

बाबू है। जो उद्देश्यके बिना धन जमा करे, जमा करनेके लिये पैदा करे, पैदा करनेके लिये पढ़े और पढ़नेके लिये प्रश्न चोरी करे, वही बाबू है।

महाराज! बाबू शब्दके अनेक अर्थ होंगे। कलिकालमें भारतवर्षका राजा होकर जो अंगरेज नामसे प्रसिद्ध होगा वह 'बाबू' का अर्थ सौदा खरीदनेवाला और लिखनेवाला मुनशी समझेगा। निर्धन लोग बाबूको अपनेसे धनी समझेंगे। दास 'बाबू'का अर्थ स्वामी करेंगे। इनके सिवा कितने ही मनुष्य केवल बाबूगिरी करनेके लिये ही जन्म ग्रहण करेंगे। मैं केवल उन्हींका गुणगान करता हूं। जो इसका उलटा अर्थ करेगा उसे इस महाभारत श्रवणका कुछ फल न मिलेगा। वह गो-जन्म ग्रहण कर बाबुओंके भक्ष्य बनेंगे।

हे नराधिप! बाबू लोग दूसरे अगस्त्यकी तरह समुद्ररूपी मदिराको कांचके गिलास रूपी चुल्लूसे सोख जायंगे। अग्नि इनकी आज्ञामें रहेगी। तम्बाकू और ,चुरुट नामके दो खाण्डवबनोंके सहारे अग्नि रातदिन इनके मुंहमें लगी रहेगी। इनके मुंहमें आग जैसे जलेगी वैसे पेटमें भी जलेगी और रातके तीसरे पहर तक इनकी गाड़ियोंकी दोनों लालटेनोंमें रहेगी। 'इनके आलोचित संगीत और काव्योंमें भी अग्निका वास होगा। उस समय इसका नाम मदनाग्नि और हृदयाग्नि होगा। वारविलासिनियोंके मतसे बाबुओंके मुंह सदा आगसे झुलसा करेंगे। यह लोग वायु ही भक्षण करेंगे और सभ्यताके विचारसे इस कठिन कार्य्यका नाम वायु सेवन या 'हवाखाना' रखेंगे। चन्द्रमा इनके घरके भीतर और बाहर नित्य विराजमान रहेगा कभी कभी मुंहपर बुरका भी डाल लेगा। कोई रातके पहले भागमें कृष्णपक्षका और पिछले भागमें शुक्लपक्षका चन्द्रमा देखेगा और कोई इसके विपरीत भी करेगा। सूर्य्य तो कभी इनके दर्शन भी न कर सकेगा। यमराज इन्हें

भूल जायगा। केवल अश्विनी कुमारोंकी यह लोग पूजा करेंगे। अश्विनी कुमारोंके मन्दिरका नाम अस्तवल या तवेला होगा।

हे नरश्रेष्ठ! जो काव्यका कलेवा कर जायंगे, संगीतका श्राद्ध कर डालेंगे, जिनकी पंडिताई वचपनकी पढ़ी हुई पुस्तकोंमें ही बन्द रहेगी और जो अपनेको परमज्ञानी समझेंगे वही वावू होंगे। जो समझकी सहायता लिये विना ही काव्य पढ़ने और समालोचना करनेमें लगे रहेंगे, जो वेश्याओंकी चिल्लाहटको ही संगीत समझेंगे, जो अपनेको निर्भ्रान्त समझेंगे वही वावू होंगे। जो रूपमें कामदेवके कनिष्ठ भ्राता, गुणमें निर्गुण, कर्म्ममें जड़भरत, और वात वनानेमें सरस्वती होंगे वही वावू होंगे। जो उत्सव मनानेके लिये शिवरात्रि मनावेंगे, घरवालीके कहनेसे दिवाली करेंगे, माशूक़ाकी खातिरसे होली करेंगे और मांसके लोभसे दसहरा करेंगे वही वावू होंगे। जो विचित्ररथ पर चलेंगे, मामूली घरमें सोयेंगे, द्राक्षारसका पान करेंगे और भूने शकरकन्द खायंगे वही वावू होंगे। जो महादेव वावाकी तरह मादकप्रिय, ब्रह्माके समान प्रजा उत्पादन करनेके इच्छुक और विष्णुके समान लीला करनेमें चतुर होंगे वही वावू कहलावेंगे। हे कुरुकुलभूषण, विष्णुके साथ इन वावुओंकी वड़ी समानता होगी। विष्णुकी तरह इनके पास लक्ष्मी और सरस्वती दोनों रहेंगी विष्णुके समान यह भी अनन्त-शय्याशायी होंगे। विष्णुके समान इनके भी दस अवतार होंगे जैसे, मुनशी, मास्टर, दयानन्दी, मुतसद्दी, डाकृर, वकील, हाकिम, ज़मींदार, समाचारपत्र सम्पादक, और निष्कर्म्मा। विष्णुके समान सब अवतारोंमें ही पराक्रमके साथ यह लोग असुरोंका वध करेंगे। मुनशी अवतारमें दफतरीका, मास्टर अवतारमें छात्रोंका, स्टेशन मास्टर अव-तारमें विना टिकटके मुसाफिरोंका, दयानन्दी अवतारमें भोजनभट्ट गुरु

पुरोहितोंका, मुतसद्दीअवतारमें अंगरेजव्यापारियोंका, डाकृर अवतारमें रोगियोंका, वकीलावतारमें मुवक्किलोंका, हाकिमावतारमें मुकद्दमा लड़नेवालोंका, ज़िमींदारावतारमें रैयतोंका, सम्पादकावतारमें भले-मानसोंका और निष्कर्म्मावतारमें मक्खियोंका वध होगा।

महाराज! और सुनिये। जिनका वचन मनमें एक गुना, कहनेमें दस गुना, लिखनेमें सौगुना, झगड़ेमें हजार गुना हो वही बाबू होंगे। जिनका बल हाथमें एक गुना, मुंहमें दसगुना, पीठमें सौगुना, और कामके समय लोप हो जाय वही बाबू होंगे। जिनकी बुद्धि लड़कपनके समय पुस्तकोंमें, जवानी आनेपर बोतलमें, बुढापेके समय घरवालीके आंचलमें रहे वही बाबू होंगे। जिनके इष्टदेवता अंगरेज, गुरु आर्य्य-समाजी, वेद अंगरेजी अखबार, और तीर्थ "अलफ्रेड थियेटर" होगा वही बाबू होंगे। जो पादड़ियोंके सामने क्रिस्तान, दयानन्दजीके आगे आर्य्य-समाजी, पिताके आगे सनातनी और भिक्षुक ब्राह्मणोंके आगे नास्तिक बनेंगे वही बाबू कहलावेंगे। जो अपने घरमें जल पीते, दोस्तोंके घर जाकर शराब पीते, रंडियोंके घरमें जूतियां खाते और अंगरेजोंके यहां धक्के खाते हैं वही बाबू होंगे। जो स्नानके समय तेलसे, खानेके समय अपनी उंगलियोंसे और बातचीतमें मातृभाषासे घृणा करें वही बाबू होंगे। जिनकी सारी कोशिश सिर्फ लिबासके बनानेमें, मुस्तैदी सिर्फ नौकरीकी उम्मीदवारीमें, भक्ति केवल पत्नी या उपपत्नीमें और घृणा सद्ग्रन्थों पर हो वही निस्सन्देह बाबू होंगे।

हे नरनाथ! मैंने जिनकी बात कही है वह मनही मन यही समझेंगे कि पान खानेसे, तकियोंके सहारे बैठनेसे, खिचड़ी भाषा बोलनेसे और सुलफे पर सुलफा पीनेसे भारतका उद्धार हो जायगा।

जनमेजय बोले हे मुनिपुङ्गव! बाबुओंकी जय हो अब दूसरा प्रसंग उठाइये।
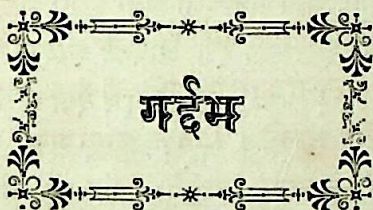
गर्द्दभजी ! मेरी दी हुई यह नयी घास भोजन कीजिये ।

गोवत्सादिके अगम्य स्थानोंसे यह नवजल सिञ्चित और सुगन्धित तृणोंके अग्रभाग बड़े प्रयत्नसे ले आया हूं, आप अपने सुन्दर मुख-मण्डलमें इन्हें ले मुक्ताविनिन्दित दांतोंसे कतरनेकी कृपा कीजिये ।

हे महाभाग ! आपकी पूजा करनेकी इच्छा हुई है क्योंकि आप ही सर्वत्र विराजमान हैं । अतएव हे विश्वव्यापी ! मेरी पूजा ग्रहण कीजिये ।

मैं पूज्य व्यक्तिके अनुसन्धानमें देश विदेश घूम आया पर सब जगह आपको ही पाया । सब आपकी ही पूजा करते हैं । इस लिये हे लम्बकर्ण ! मेरी भी पूजा ग्रहण कीजिये ।

हे गर्द्दभ महाराज ! कौन कहता है कि आपके पद छोटे हैं । यहां वहां चारों ओर तो आपके ही बड़े पद दिखाई देते हैं । आप ऊंचे आसन पर बैठकर घासके बड़े बड़े पूला चाखते हैं और खुशामदी आपको घेरकर आपके कानोंकी बड़ाई करते हैं ।

आप ही विचारासनपर बैठकर अपने दोनों लम्बे कान इधर उधर घुमाते हैं । इनकी अथाह कन्दराओंको देखकर वकील नामधारी कवि नाना प्रकारका काव्यरस इनमें ढालते हैं । उस समय कानोंके सुखसे मुग्ध हो आप ऊंघने लगते हैं ।

हे वृहन्मुण्ड! उस समय आप काव्यरससे मुग्ध होकर दया दिखाते हैं। दयाके वश होकर आप मोहनकी जमा पूंजी सोहन और सोहनकी धनसम्पत्ति रोहनको दे डालते हैं। आपकी दयाका ठिकाना नहीं है।

हे रजकग्रह भूषण! आप कभी तो दुम दवा कुर्सीपर बैठते हैं और सरस्वती मण्डपमें बालकोंको गर्द्दभ लोकप्राप्तिका उपाय बताते हैं। बालकके गर्द्दभ लोकमें प्रवेश करनेपर "प्रवेशिकामें उत्तीर्ण हुआ" कहकर चिल्लाते हैं। हम चिल्लाहट सुन डर जाते हैं।

हे विशालोदर! आप ही संस्कृत पाठशालाओंमें कुशासनपर बैठे माथेमें चन्दन लगा हाथमें पुस्तक लिये शोभायमान हैं। आपकी की हुई शास्त्रोंकी टीका सुनकर हम धन्य धन्य कहते हैं। अतएव हे महापशु! मेरा दिया हुआ यह कोमल तृणाङ्कुर भक्षण कीजिये।

आपपर ही लक्ष्मीकी कृपा है—आपके न रहनेसे और किसीपर उसकी कृपा नहीं होती है। वह आपको कभी त्याग नहीं करती है पर आप अपने बुद्धिबलसे सदा उसका त्याग करते हैं। इसीसे लक्ष्मीको चंचल होनेका कलंक है। अतएव हे सुपुच्छ, घास-भक्षण कीजिए।

आपही गानेवाले हैं। षड़ज, ऋषभ, गान्धार आदि सातों सुर आपके गलेमें हैं। बहुत दिनोंमें आपकी नकलकर बड़ी बड़ी दाढ़ी मूछें बढ़ाकर बहुत तरहकी खांसियोंका अभ्यासकर कहीं किसीको आपकासा सुर प्राप्त होता है। हे भैरवकण्ठ! घास खाइये।

आप बहुत दिनोंसे पृथिवीपर विचरण करते हैं। रामायणमें आप ही राजा दशरथ थे, नहीं तो रामचन्द्र बन कैसे जाते? महाभारतमें पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर आप ही थे, अन्यथा पाण्डव जूआ खेलकर अपनी स्त्रीको क्यों हारते? कलियुगमें आपही पृथ्वीराज हुए नहीं तो मुसलमान भारतमें क्यों आते?

आप युग युगमें अनेक रूपोंसे अनेक देशोंको प्रकाशित करते चले आते हैं। इस समय तपस्याके बलसे, ब्रह्माके वरसे, आप समालोचक होकर प्रकट हुए हैं। हे लोमशावतार! मेरे लाये हुए कोमल नवीन तृणके अङ्कुरोंको खाकर मुझे प्रसन्न कीजिये।

हे महापृष्ठ! कभी आप राज्यका भार ढोते हैं, कभी पुस्तकोंका, और कभी धोबियोंके गट्ठरोंका। हे लोमश! कौनसा बोझ भारी है मुझे बता दीजिये!

आप कभी घास खाते हैं, कभी लड्डू खाते हैं, कभी ग्रन्थकारोंका सिर खाते हैं। हे लोमश इनमें कौन मीठा है बता दीजिये।

हे सुन्दर! आपका रूप देखकर मैं मोहित हो गया हूं। जब आप पेड़के नीचे खड़े हो वर्षाके जलसे स्नान करते हो, दोनों कान खड़े कर मुखचन्द नीचा कर लेते, कभी आंखें बन्द करते और कभी खोलते और आपकी पीठ तथा गर्दनसे वसुधारा चलती है तब आप बड़े सुन्दर दिखाई देते हैं। हे लोकमनमोहन! लीजिये थोड़ी सी घास आरोगिये।

विधाताने आपको तेज नहीं दिया इसीसे आप शान्त हैं; वेग नहीं दिया इसीसे सुधीर हैं; बुद्धि नहीं दी इसीसे आप विद्वान् हैं और बोझ लादे विना खाना नहीं मिलता इसीसे आप परोपकारी हैं। मैं आपका यश गाता हूं, आप घास खाकर मुझे सुखी कीजिये।

वसन्त और विरह

रेवती—सखी! ऋतुराज वसन्त पृथ्वी पर उदय हुए हैं। अ
हम दोनों वसन्तका वर्णन करें; क्योंकि हम दोनों ही वियोगिन हैं
पहले की वियोगिनियां सदासे वसन्तका वर्णन करती आयी हैं। अ
हम भी करें।

सेवती—वीर! तैंने ठीक कहा। हम कन्या विद्यालयमें पढ़ लिखक
भी घरके चक्की-चूल्हेमें ही मरती हैं। आ आज कविताकी आलोचना करें

रेवती—सखी! तो मैं आरम्भ करती हूं। सखी! ऋतुरा
वसन्तका समागम हुआ है। देख, पृथ्वीने कैसा अनिर्वचनीय भा
धारण किया है। देख, चूतलता कैसी नव मुकुलित—

सेवती—और सहजने की फलियां लटकित—

रेवती—सीतल सुगन्ध मन्द वायु बहती—

सेवती—उड़ कर धूर देहपर जमती—

रेवती—चल हट। यह क्या बकती है। सुन, भ्रमर फूलों प
गूंज रहे हैं—

सेवती—मक्खियां मीठे पर भिन्न भिन्ना रही हैं—

रेवती—वृक्षों पर कोयल पंचम स्वरसे कूक रही है—

सेवती—गधा अष्टम स्वरसे रेंक रहा है।

रेवती—जा तेरे साथ बसन्त वर्णन न बनेगा। मैं मालतीको
पुकारती हूं। अरी ओ मालती! इधर आ बसन्त वर्णन करें।

(मालती आयी)

मालती—सखी, मैं तो तुम लोगोंकी तरह बहुत पढ़ी लिखी नहीं। कुछ गोद गाद लेती हूं। सब बातें मैं नहीं समझूंगी, मुझे बीच बीचमें समझाना पड़ेगा।

रेवती—अच्छा! देख तो वसन्त कैसा अपूर्व्व समय है! चूतलता कैसी नव मुकुलित—

मालती—सखी, आमके पेड़ तो मैंने देखे हैं; भला आमकी लता कैसी होती है?

रेवती—मैंने आमकी लता सुनी है पर कभी आंखोंसे देखी नहीं। देखी हो या न देखी हो इससे मतलब नहीं पर पुस्तकोंमें चूतलता ही पढ़ी है, चूतवृक्ष नहीं इस लिये चूतवृक्ष न कह चूत लता ही कहना होगा।

मालती—तब कहो।

रेवती—चूतलतिका नव मुकुलित हो कर—

मालती—सखी, अभी तो तैंने चूतलता कहा था फिर लतिका कैसे हो गयी?

रेवती—इसमें कुछ और मधुरता आ गयी। चूतलतिका नव मुकुलित हो चारों ओर सुगन्ध विकीर्ण कर रही है—

मालती—सखी, वसन्तमें तो आमकी मंजरी झर जाती और अमिया लगती है।

सेवती—इससे क्या। देख वर्णन कैसा मधुर हुआ है।

रेवती—मधुके लोभसे उन्मत्त हो मधुकर उन पर गूंजते हैं यह देख हमारे प्राण निकले जाते हैं।

मालती—अहा, तूने बहुत ठीक कहा है। सखी, मधुकर किसे कहते हैं?

रेवती—अरी, तू यह भी नहीं जानती है। मधुकर नाम भ्रमरका है

मालती—भ्रमर क्या सखी ?

रेवती—भ्रमर कहते हैं भौंरेको।

मालती—तो भौंरे आमकी मंजरी देख कर पागल क्यों हो जा हैं? उनका पागलपन कैसा होता है? वह क्या आंय वायं शा बकते हैं?

रेवती—कौन कहता है कि वह पागल होते हैं?

मालती—अभी तो तैंने ही कहा है कि "उन्मत्त हो गूंजते हैं।"

रेवती—झखमारा जो तेरे आगे वसन्तका वर्णन किया!

मालती—तो वीर लड़ती क्यों है? तू ज्यादा पढ़ी है। मै कम प हूं। मुझे समझा दे बस टंटामिटा। सब तो तुझसी रसियां नहीं हैं।

रेवती—(साहंकार) अच्छा तो सुन। भ्रमर मधुके लोभसे गूंज हैं। उनकी गुंजारसे हमारे प्राण जाते हैं।

मालती—भौंरेकी गुंजार होती है या भनभनाहट।

रेवती—कवि तो गुंजार ही कहते हैं।

मालती—तो गुंजार ही सही। पर उससे हमारे प्राण क्यों जा लगे? भौंरेके काटनेसे तो प्राण जाते सुना भी है पर अब क्या भौंरे भनभनाहटसे भी प्राण देने पड़ेंगे?

रेवती—भौंरेकी गुंजारसे बराबर विरहनी मरती आयी हैं। कहांसे रंगाके आयी है जो नहीं मरेगी।

मालती—अच्छा बहन! शास्त्रोंमें अगर लिखा है तो मरूंगी प पूछना यह है कि केवल भौंरे की भनभनाहटसे ही मौत आवेगी या भिड़, मधु मक्खियां गुबरीलों की भनभनसे भी?

रेवती—कवि तो भ्रमर की गुंजारसे ही मरनेकी कहते हैं।

सेवती—कवि बड़ा अन्याय करते हैं। गुवरीलोंने क्या अपराध किया है ?

रेवती—तुझे मरना होतो मर पर अभी तो सुन ले।

सेवती—कह क्या कहती है ?

रेवती—कोयल वृक्षों पर बैठ कर पञ्चम स्वरसे गान करती है।

मालती—पञ्चम स्वर क्या है बहन ?

रेवती—कोयल की कूक की तरह होता है—

मालती—कोयल की कूक कैसी होती है ?

रेवती—पंचम स्वर की तरह।

मालती—समझ गयी, अच्छा आगे कह।

रेवती—कोयल वृक्षों पर बैठ पंचम स्वरसे गान करती है। उससे विरहिनियोंकी देहमें आग लग जाती है।

सेवती—और मुर्गेके पंचम स्वरसे देहमें क्या होता है ?

रेवती—अरी चल। मुर्गेका और पंचम स्वर!

सेवती—मेरी देह तो उसीसे जल जाती है। मुर्गेके बोलते ही मालूम होता है कि—

रेवती—इसके पीछे मलय समीर। शीतल सुगन्ध मन्द मलय मारुतसे वियोगिनियोंके रोएं खड़े हो जाते हैं।

मालती—जाड़ेसे ?

रेवती—नहीं—विरहसे। मलय मारुत औरोंके लिये शीतल है पर हमारे लिये अग्निके समान है।

सेवती—बहन यह तो सबके लिये है। इस चैतकी दुपहर की हवा किसे आगकी तरह नहीं मालूम होती है ?

रेवती—अरी मैं उस हवा की बात नहीं कहती हूं।

मालती—शायद तू उत्तर की हवा की बात कह रही थी। है की हवा जैसी ठंढी होती है मलयाचलकी वैसी नहीं होती।

रेवती—वसन्तानिलके लगते ही शरीर रोमांचित हो जाता है।

सेवती—नंगे बदन रहनेसे उत्तरकी हवासे भी रोएं खड़े हो जाते हैं।

रेवती—चल हट। कहीं वसन्त ऋतुमें भी उत्तरकी हवा चलती है जो मैं उसकी बात वसन्त वर्णनमें लाऊंगी।

सेवती—अभी तो उत्तरकी ही हवा चल रही है। आजकल आंधी उत्तरसे ही आती है। मेरी समझमें वसन्तवर्णनमें उत्तर की हवाकी चर्चा जरूर होनी चाहिये। चलो हम सरस्वतीमें लिख भेजें कि अब कवि वसन्त वर्णनमें मलय वायुका नाम न ले कर उत्तर की आंधीका वर्णन करें।

रेवती—ऐसा होगा तो वियोगी विचारे क्या करेंगे? वह फिर क्या कह कर रोएंगे?

मालती—तो बहन रहने दे अभी तेरा वसन्त वर्णन। ओह मरी—मरी—

(गिरती और आंखें बन्द करती हैं)

रेवती—क्यों बहन क्या हुआ? एकायक ऐसा हाल क्यों हुआ?

मालती—(आंखें बन्द कर) अरी सुनती नहीं? थूहरके पेड़ पर कोयल कूक रही है।

रेवती—सखी धीरज धर धीरज। तेरे प्राणनाथ शीघ्र ही आवेंगे। बहन, मैं भी यही दुःख भोग रही हूं। प्राणनाथके दर्शन बिना जीवित रहना कठिन हो रहा है। (आंखें मीचकर) टोले मुहल्ले के कूएं अगर सूख न जाते तो मैं कब की डूब मरी होती। हे हृदय-

म, जीवतेश्वर हे रमनीजनमनोमोहन! हे निशाशेषोन्मेषोन्मुख कमलकोरकोपमोत्तेजित हृदयसूर्य्य! हे अतलजलदलतलन्यस्तरत्न राजिवन्महामूल्य पुरुषरत्न! हे कामिनी कण्ठविलम्बित रत्नहाराधिक प्राणाधिक! अब प्राण नहीं बचेंगे! मैं अबला, सरला, चंचला, विकला, दीना, हीना, क्षीणा, पीना, नवोना, श्रीहीना हूं अब प्राण नहीं बचेंगे। और कबतक तुम्हारी राह देखूं! सरोवरमें सरोजिनी जैसे भानुको चाहती है, कुमुदिनी कुमुद बान्धवको जैसे चाहती है, चातक स्वातिकी बून्दको जैसे चाहता है मैं भी तुम्हें वैसे ही चाहती हूं।

मालती—(रो कर) खोयी हुई गाय की आसमें चरवाहा जैसे खड़ा रहता है, हलवाई की दूकानसे नौकरके लौटनेकी आसमें लड़का जैसे खड़ा रहता है, घसियारे की आसमें घोड़ा जैसे खड़ा रहता है, हे प्यारे! वैसे ही मैं तुम्हारी आसमें खड़ी रहती हूं। दही बिलोनेके समय दाईके पीछे पीछे जैसे बिल्ली भागती है वैसे ही आपके पीछे मेरा मन भागता है। जूठन कूठन फेंकने वालेके पीछे पीछे जैसे भूखा कुत्ता दौड़ता है वैसे ही तुम्हारे पीछे मेरा बेकहा मन दौड़ता है। बड़े बड़े बैल जैसे कोल्हूमें घूमा करते हैं वैसे ही आसा भरोसा नामके मेरे बैल तुम्हारे प्रेम रूप कोल्हूमें फिर रहे हैं। लोहेकी कढ़ाईमें गर्म तेल बैंगनको जिस तरह भूनता है उस तरह विरहकी कढ़ाईमें बसन्तरूपी तेल मेरे हृदय रूप बैंगनको सदा भूनता है। इस बसन्त ऋतुमें जैसे गर्मीसे सहजनेकी फलियां फटती हैं तुम्हारे विरहमें वैसे ही मेरी हृदयफली फटती है। एक हलमें दो बैल जोत कर किसान जैसे खेतको जोत डालते हैं वैसे ही प्रेमके हलमें विरह और सौतकी भक्ति रूपी दो बैल जोतकर मेरे स्वामी किसान मेरे कलेजे रूपी खेतको जोत रहे हैं। और कहांतक कहूं? विरहकी जलनसे मेरी दालमें नोन नहीं, पानमें

चूना नहीं, कढ़ीमें मिर्च नहीं, दूधमें चीनी नहीं। वहन, जिस दिन विरहकी आग भड़क उठती है उस दिन मैं तीन वारसे ज्यादा नहीं खा सकती, मेरा दूधका कटोरा योंही रह जाता है। (आंसू पोछ कर) वहन! अव अपना वसन्त वर्णन पूरा करो। दुःखकी वातोंका अव काम नहीं है।

रेवती—मेरा वसन्त वर्णन पूरा हो चुका है। भ्रमर, कोकिल, मलय समीर और विरह इन चारोंकी वात तो कह चुकी अव वाकी ही क्या है?

सेवती—चुल्लूभर पानी।

कैलास शिखर पर फूले हुए देवदारु वृक्षके नीचे बाघाम्बर बिछाये शिवजी पार्वतीजीके साथ चौपड़ खेल रहे थे। दांवपर सोनेका एक पासा था। भोला बाबामें यही बड़ा दोष है कि वह कभी बाजी नहीं जीतते। अगर जीत ही सकते तो समुद्र मन्थनके समय विष उनके हिस्सेमें क्यों आता। पार्वती माताकी तो सदा ही जीत है। इसीसे पृथ्वी पर उनकी तीन दिन पूजा होती है। खेलना चाहे अच्छा न जानती हों पर रोनेमें वह बड़ी होशियार हैं, क्योंकि वही आद्या शक्ति हैं। अगर महादेव बाबाका दांव आ गया तो रोकर कुहराम मचा देती हैं। पर पांच दो सात पड़ते हैं तो पौबारह कहती और भोला-नाथको उस तिरछी चितवनसे देखती हैं जिससे सृष्टिकी स्थिति प्रलय होती है। इसका फल यह होता है कि बंभोला अपना दांव देख कर भी नहीं देखते। सारांश यह कि महादेवजी की हार हुई और यही सदाकी रीत भी है।

भंगड़नाथने हार कर सोनेका पासा पार्वतीके हवाले किया। उन्होंने उसे पृथ्वी पर फेंक दिया। वह बङ्गालमें जाकर गिरा। भवानी-पति भौंहे चढ़ा कर बोले "मेरे पासेको तुमने क्यों फेंक दिया?" गौरीने कहा "नाथ, आपके पासेमें अवश्य ही कोई अपूर्व शक्ति होगी जिससे जगका भला होगा। मनुष्योंके हितके लिये मैंने उसे नीचे फेंका है।

शिवजीने कहा "प्रिये! ब्रह्मा, विष्णु और मैं जिन नियमोंको बना कर सृजन पालन संहार करते हैं उनके तोड़नेसे कदापि मंगल न होगा। जो कुछ शुभाशुभ होगा वह नियमावलीके अनुसार ही होगा। सोनेके पासेकी आवश्यकता नहीं है। यदि इसमें कुछ शुभ गुण भी हो तो नियम भंग होजानेसे लोगोंका अनिष्ट ही होगा। खैर तुम्हारे अनुरोधसे उसे एक विशेष गुणसे युक्त कर देता हूं। बैठी बैठी उसकी करामात देखो।"

कालीकान्त वसू बड़े आदमी हैं। उम्र पैंतीस वर्षकी है, देखनेमें सुन्दर हैं और अभी उस दिन दूसरा व्याह हुआ है। आपकी स्त्रीका नाम काम सुन्दरी, अवस्था अठारह साल की है और अभी अपने मायके है। कालीकान्त बाबू स्त्रीसे मिलने सुसराल जा रहे हैं। आपके ससुर भी बड़े धनी हैं और गंगा किनारे एक गांवमें रहते हैं। कालीकान्त घाट पर नाव छोड़ पैदल चलने लगे। संगमें रामा नौकर था। वह सिर पर पोर्टमेन्टो लिये था। जाते जाते कालीकान्त बाबूको सोनेका एक पासा सड़क पर पड़ा दिखाई दिया। आश्चर्यमें आकर उन्होंने उसे उठा लिया। उलट पुलट कर देखा तो ठीक सोनेका पाया। प्रसन्न हो नौकरसे बोले "यह सोनेका है। किसीका खो गया है। अगर कोई खोज करे तो दे देना। नहीं तो घर ले चलूंगा। ले रखले।"

रामाने पोर्ट मेन्टो रख पासा अङ्गोछेमें बांध लिया। पर फिर पोर्ट मेन्टो सिर पर नहीं उठाया। कालीकान्त बाबूने स्वयं उसे माथे पर रख लिया। रामा आगे आगे चला और बाबू पीछे पीछे। रामा बोला "अरे ओ रामा!"

बाबूने कहा "जी" रामा बोला "तू बड़ा बेअदब है। ससुराल

पहुंच कर फिर बेअदबी मत कर बैठना।" वह लोग बड़े आदमी हैं। बाबूने कहा "जी नहीं, भला ऐसा कभी हो सकता है। आप ठहरे मालिक, आपके सामने क्या मैं बेअदबी कर सकता हूं।

कैलास पर गौरीने पूछा "नाथ, मेरी समझमें कुछ न आया। आपके सोनेके पासेका यह क्या गुण है?"

महादेव बोले "पासेका गुण चित्तविनिमय अर्थात् मन बदल-व्वल है। मैं यदि नन्दीके हाथमें यह पासा देदूं तो वह अपनेको महा-देव और मुझे नन्दी समझने लगेगा। मैं अपनेको नन्दी और नन्दीको शिव समझूंगा। रामा अपनेको कालीकान्त और कालीकान्तको रामा समझ रहा है। कालीकान्त भी अपनेको रामा नौकर और रामाको कालीकान्त समझ रहा है।"

कालीकान्त बाबू जिस समय ससुराल पहुंचे उस समय उनके ससुर घरके भीतर थे। यहां दरवाजे पर बड़ा हो हल्ला मचा। रामदीन पांड़े दरवान कहता है, "खानसामाजी! वहां मत बैठो, यहां मेरे पास आकर बैठो।" इतना सुनते ही रामाकी आंखें लाल हो गयीं। वह बिगड़ कर बोला "अबे जा तू अपना काम कर।"

दरवानने कालीकान्तके सिरसे पोर्टमेन्टो उतार लिया। काली-कान्त बोले "दरवानजी, बाबूसे इस तरह मत बोलो नहीं तो वह चले जायंगे।"

दरवान कालीकान्तको तो पहचानता था, पर रामाको नहीं। कालीकान्तकी बात सुनकर दरवानने सोचा कि जब जमाई बाबू ही इसे बाबू कहते हैं तो यह जरूर कोई बड़ा आदमी है, भेस बदल कर आया है। यह सोच कर रामासे उसने कहा "बाबू, कसूर माफ कीजिये।" रामा बोला "खैर, तमाकू ला।"

ऊधो बड़ा पुराना नौकर है। वह हुक्का भरकर ले आया। रामा तकियेके सहारे बैठकर गुड़ गुड़ाने लगा। कालीकान्त बेचारा नौकरोंकी कोठरीमें जा चिलम पीने लगा। ऊधो अचरज मान कर बोला "आप यहां क्या कर रहे हैं!" कालीकान्त बोला "उनके सामने मैं चिलम नही पी सकता।" ऊधो भीतर जा कर मालिकसे बोला "जमाई बाबूके साथ रूप बदल कर कोई बड़े आदमी आये हैं। जमाई बाबू उनके सामने तमाकू तक नहीं पीते।"

नीलरतन बाबू शीघ्र बाहर आये। कालीकान्त दूरहीसे साष्टांग प्रणाम कर अलग हट गया। रामा आकर नीलरतनबाबूसे गले गले मिला। नीलरतनने मनमें कहा, साथका आदमी साफ सुथरा तो है पर आज दामादका ऐसा हाल क्यों है?

नीलरतन बाबू रामाकी आव भगत करनेको बैठ गये पर उसकी बातचीत उनकी समझमें कुछ न आयी। इधर भीतरसे कालीकान्तको कलेवेके लिये दाई बुलाने आयी। कालीकान्त बोले "अरे राम क्या बाबूके सामने मैं कलेवा कर सकता हूं? पहले उन्हें कराओ, पीछे मैं कर लूंगा। माजी मैं तो आप ही लोगोंका खाता हूं।"

"माजी" कहते सुनकर दाईने मनमें कहा, दमादने मुझे सास समझ कर 'माजी' कहा है। कहेंगे क्यों नहीं? मैं क्या नीच जातिकी मालूम होती हूं? वह देस विदेस घूम चुके हैं उन्हें आदमी की परख हैं। खाली इसी घर वालोंको आदमी की पहचान नहीं है।" दाई कालीकान्तसे बड़ी खुशी हुई और भीतर जा कर बोली "जमाई बाबूने बहुत ठीक सोचा है। संगके आदमीके खाये बिना भला वह कैसे खा सकते हैं। पहले उनके साथीको खिलाओ तब वह खायंगे।

घरकी मालकिनने सोचा कि साथी तो ऊपरी आदमी है, उसे

भीतर नहीं बुला सकती और दमादको भीतर खिलाना चाहिये। मालकिनने ऐसा ही प्रबन्ध किया। रामा बाहर अपने खानेका बन्दोवस्त देख कर विगड़ा और बोला, यह कैसा शिष्टाचार है? इधर दाई कालीकान्तको बुलाकर भीतर ले गयी तो वह आंगनमें ही खड़ा हो गया और बोला" "मुझे घरके भीतर क्यों बुलाया? मुझे यहीं चना चवेना दे दो, मैं खाकर पानी पी लूंगा।" यह सुन कर सालियोंने कहा, जीजाजी तो अबके बड़ा मजाक सीख कर आये हैं।"

कालीकान्तने गिड़गिड़ाकर कहा "मुझसे आप क्यों दिल्लगी करती हैं? मैं क्या आपके योग्य हूं?" एक बुढ़िया साली बोल उठी "मेरे योग्य क्यों होने लगे। जिसके योग्य हो उसीके पास चलो।" इतना कह कालीकान्तको खेंच कर सब भीतर ले गयीं।

वहां कालीकान्तकी भार्य्या कामसुन्दरी खड़ी थी। कालीकान्तने उसे मालकिन समझ हाथ जोड़ कर प्रणाम किया। कामसुन्दरी हंस कर बोली "यह कैसी दिल्लगी! अबके यह नखरा सीख आये हो?" कालीकान्तने गिड़गिड़ा कर कहा "मेरे साथ ऐसी बात क्यों? मैं तो गुलाम हूं आप मालकिन हैं।"

कामसुन्दरीने कहा "तुम गुलाम मैं मालकिन, यह नयी बात नहीं है? जबतक जवानी है तब तक तो ऐसा ही रहेगा। अभी कलेवा करो" कालीकान्तने सोचा "अरे राम इसका लक्षण तो बुरा है! हमारे बाबू तो बेढब औरतके फन्देमें फंस गये, मेरा यहांसे चल देना ही ठीक है।"

यह सोच कर कालीकान्त फिर भागना चाहते थे कि कामसुन्दरीने आकर उसका दामन पकड़ लिया और कहा "अरे मेरे प्यारे, मेरे सरबस; कहां भागे जाते हो!" यह कह उसे पीढेकी तरफ खेंच कर ले जाने लगी।

कालीकान्त हाथ जोड़ और हा हा खा कर कहने लगा "दुहाई बहूजी की। मुझे छोड़ दो, मेरा सुभाव तुम नहीं जानती हो। मैं वैसा आदमी नहीं हूं।" कामसुन्दरीने हंस कर कहा "तुम जैसे आदमी हो मैं जानती हूं। खैर अभी कलेवा तो करो।"

कालीकान्त। अगर किसीने मेरी बाबत तुमसे कुछ कह दिया हो तो उसने तुम्हें धोखा दिया है। हाथ जोड़ता हूं छोड़ दो। तुम मेरी मालकिन हो।

कामसुन्दरी जरा दिल्लगीपसन्द औरत थी। उसने इसे भी दिल्लगी समझ कर कहा "प्यारे, तुम कितनी हंसी सीख कर आये हो यह मैं पीछे समझ लूंगी" यह कह वह कालीकान्तको दोनों हाथोंसे पकड़ पीढ़े पर बिठाने लगी।

हाथ पकड़ते ही कालीकान्तने समझा कि अब चौपट हुआ। बस-उसने चिल्लाना शुरू किया "अरे दौड़ो, मार डाला, मार डाला; बचाओ बचाओ।" चिल्लाना सुनकर घरके सबलोग घबरा कर दौड़ आये। मा बहनोंको देख कर कामसुन्दरीने कालीकान्तको छोड़ दिया। वह मौका पाते ही सिरपर पैर रखकर भागा।

मालकिनने पूछा "क्यों री वह भागा क्यों? क्या तैने मारा था?"

दुःखी होकर कामसुन्दरी बोली "मारूंगी क्यों? मेरा नसीब ही फूटा है।" बोली कि, मेरा नसीब फूट गया, किसीने जादू कर दिया है—हाय मेरा सत्यानाश होगया। आदि कह कर वह रोने धोने लगी।

सबने कहा "तैंने जरूर मारा है नहीं तो वह इतना दुःखी क्यों होता?" सबने ही कामसुन्दरीको डाईन चुड़ैल कहकर धिक्कारा और फटकारा। लाचार वह रोती कलपती द्वार बन्दकर घरमें जा बैठी।

इधर कालीकान्तने बाहर आकर देखा कि खूब मार पीट हो रही

है। नीलरतन बाबू और उनके नौकर चाकर रामाको बेतरह पीट रहे है। लात, जूता, लाठी, थप्पड़ोंसे उसकी गोधन लीला हो रही है।

रामा कहता जाता है कि छोड़ दो, छोड़ दो, दमाद पर ऐसी मार, कहीं सुनी नहीं। मेरा क्या बिगड़ेगा, तुम्हारी ही बेटी रांड होगी।" पास खड़ी हुई सुन्दरी दाई हंस रही है। वह बराबर कालीकान्तके घर आती जाती थी। इससे रामाको पहचानती थी। उसीने भण्डा फोड़ा था। कालीकान्त यह लीला देख आंगनमें टह-लता हुआ कहने लगा "यह क्या गजब! बाबूको सभोंने मार डाला" यह सुन नीलरतन बाबू और भी बिगड़ें और रामासे बोले "बदमाश तैंनेही कुछ खिला कर दमादको पागल कर दिया है। साले तूझे मैं जीता न छोडूंगा।" इतना कहते ही रामा पर मूसलधार जूतियां पड़ने लगी। इस खेंचातानीमें रामाकी चादरसे सोनेका पासा गिर पड़ा। सुन्दरीने उसे उठा कर नीलरतनके हाथमें दे दिया और कहा "अरे यह चोर है, कहींसे पासा चुरा लाया? नीलरतनने "देखूं क्या है" कहकर हाथमें ले लिया। बस फिर क्या था उन्होंने रामा-को छोड़ धोती खोल घूंघट काढ़ लिया और सुन्दरीने घूंघट खोल लांग मार ली। और फिर रामाको ठोंकने लगी।

ऊधोने सुन्दरीसे कहा "अरी तू औरत हो इस बीचमें क्यों आ कूदी?"

सुन्दरी बोली—तू औरत किसे कहता है?

ऊधो बोला—तुझे और किसको?

"मुझसे ठट्टा करता है" यह कह सुन्दरीने ऊधो पर जूतियां फटकारी। ऊधो औरत पर हाथ छोड़ना उचित न जान आगबबूला हो नीलरतनसे बोला "देखिये मालिक, इस औरतकी बदमाशी, मुझे जूतियां मारती

है।" इस पर नीलरतन ज़रा मुसकरा और घूंघट काढ़ कर बोले मारा तो क्या हुआ? मालिक हैं जो चाहें कर सकते हैं।" यह सुन ऊधोका गुस्सा और भी बढ़ गया। बोला "वह कैसी मालकिन, जैसा मैं नौकर वैसी वह! मैं आपका नौकर हूं—उसका नहीं। जाइये ऐसी नौकरी नहीं करता।" नीलरतनने फिर जरा हंस कर कहा "चल दूर हो, बुढ़ापेमें ठट्ठा करने चलाहै। मेरा नौकर तू क्यों होने चला?"

ऊधोकी अक्ल गुम हो गयी। उसने सोचा कि आज यह क्या मामला है, सबके सब पागल हो रहे हैं। वह रामाको छोड़ अलग जा खड़ा हुआ।

इतनेमें गाय चराने वाला गोवर्द्धनघोष वहीं आ पहुंचा। वह सुन्दरीका खसम था। वह सुन्दरीकी हालत देख अचम्भेमें आगया। सुन्दरी उसे देख टससे मस न हुई। पर नीलरतन घूंघट काढ़ एक ओर खड़े हो गये और धीरे धीरे बोले "उसके भीतर मत जाइये।" गोवर्द्धन सुन्दरीका रङ्ग ढङ्ग देख कर बहुत नाराज होगया था। उसने इनकी बात नहीं सुनी। "हरामजादी लुच्ची, तुझे जरा लाज शरम नहीं है।" यह कह गोवर्द्धन आगे बढ़ना ही चाहता था कि सुन्दरी बोली "गोवर्द्धन, तू भी पागल होगया क्या। जा गायको सानी दे।" इतना सुनते ही गोवर्द्धन सुन्दरीका झोंटा पकड़ पीटने लगा। यह देख नीलरतन बाबू बोले—"अरे डाढ़ी जार, मालिककी जान क्यों लेता है?" इधर सुन्दरी भी बिगड़ कर गोवर्द्धनपर हाथ साफ करने लगी। उस समय बड़ी हलचल मच गयी। गुल गपाड़ा सुनकर अड़ोस पड़ोसके राम, श्याम, गोविन्द आ इकट्ठे हुए। रामने सोनेका पासा पड़ा देख कर उठा लिया और श्यामको देकर कहा "देखो यह क्या है?"

कैलास पर पार्वतीने कहा—"नाथ, अब अपने पासेको रोकिये।

देखिये, गोविन्द बूढ़े रामके घरमें घुसकर उसकी बूढ़ी स्त्री को अपनी स्त्री कह रहा है। इसपर रामकी दासी उसे झाड़ू मार रही है। इधर बूढ़ा राम अपनेको गोविन्द समझ उसकी जवान स्त्रीसे छेड़ छाड़ कर गले लगा रहा है। अगर यह पासा पृथ्वी पर रहेगा तो घर घरमें उपद्रव खड़ा हो जायगा। इस लिये इसे अब रोकिये।

महादेवजी बोले "हे शैलसुते! इसमें मेरे पासेका क्या दोष है? यह लीला पृथ्वी पर क्या नयी हुई है? तुम क्या रोज नहीं देखती हो कि बूढ़े जवान बनते और जवान बूढ़े बनते हैं; मालिक नौकरकी तरह काम करते और नौकर मालिक की शानमें शान मिलाते हैं। तुमने क्या नहीं देखा है कि मर्द औरत और औरत मर्दका स्थान लेती जाती हैं। यह सब तो वहां नित्य होता है परन्तु कोई देखता नहीं। मैंने एकबार सबको दिखला दिया। अब पासेको रोकता हूं। मेरी इच्छासे अब सब होशमें आजायंगे और किसीको यह घटना याद न रहेगी। पर मेरे वरसे "वंगदर्शन"* यह कथा लोक हितार्थ संसारमें प्रचारित करेगा।
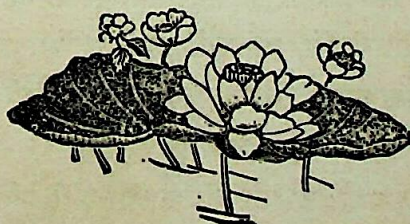
* वंगला मासिक पत्र जिसमें यह पहले छपा था

बड़ पुंछड़ा बाघाचारज

सुन्दर वनमें एकवार बाघोंकी महासभा हुई। घोर वनके भीत[र] लम्बी चौड़ी जगहमें वहुतसे खूंखार बाघ दांतोंकी दमकसे जंगलक[ो] जगमगाते हुए दुमके सहारे वैठ गये। सवने एक राय होकर वड़पेट[ा] नामके अति वूढ़े बाघको सभापति बनाया। वड़पेटा महाराज[ने] लाङ्गूलासन ग्रहण करके सभाका कार्य्य आरम्भ किया। उन्हों[ने] सभासदोंको सम्बोधन कर कहा :—

"आज हमारे लिये कैसा शुभ दिन है। आज हम जितने वनवास[ी] मांसाभिलाषी व्याघ्रकुलतिलक हैं सब परस्पर कल्याण करनेके लि[ये] इस वनमें एकत्र हुए हैं। अहा! निन्दक और दुष्ट स्वभावके औ[र] और जानवर कहते फिरते हैं कि वाघ बड़े असामाजिक होते हैं, जङ्ग[ल] में अकेले रहना पसन्द करते हैं और इनमें एकता नहीं है। पर आ[ज] सब सुसभ्य बाघमंडली यह बातें झूठी साबित करनेके लिये यह[ां] उपस्थित है। इस समय सभ्यताकी दिन दिन जैसी वृद्धि हो रही [है] इससे पूरी आशा है कि व्याघ्र शीघ्र ही सभ्योंके सिरताज हो जायंगे[।] अभी विधातासे यही चाहता हूं कि आपलोग प्रतिदिन इसी प्रका[र] जाति हितैषिता प्रकाश करते हुए परम सुखसे नाना प्रकारके पशुओंक[ो] मारते रहें।"

(सभामें दुमोंकी फटाफट)

"भाइयो, हम जिस कामके लिये यहां इकट्ठे हुए हैं अब वह संक्षेपसे बताता हूं। आप सबलोग जानते ही हैं कि सुन्दर बनके व्याघ्र-समाजमें विद्याकी चर्चा धीरे धीरे लोप होती जाती है, हमलोगों की विकट आभिलाषा है कि हम सब विद्वान् हों। क्योंकि आजकल सब ही विद्वान हो रहे हैं। विद्याकी चर्चाके लिये ही यह व्याघ्र-समाज स्थापित हुआ है। अब मेरा कहना यही है कि आपलोग इसका अनुमोदन करें।"

सभापतिकी वक्तृता समाप्त होने पर सभासदोंने तर्जन गर्जन कर इस प्रस्तावका अनुमोदन किया। पीछे यथारीति कई प्रस्ताव उपस्थित किये गये और यह अनुमोदित होकर स्वीकृत हुए। प्रस्तावों पर बड़ी बड़ी वक्तृताएं हुईं। यह व्याकरण शुद्ध और अलंकार विशिष्ट ज़रूर थीं पर शब्दोंकी छटा बड़ी भयंकर थी। वक्तृताओंकी चोटसे सारा सुन्दरवन कांप उठा।

इसके बाद सभाके और और काम हुए। सभापतिने फर्माया "आपलोग जानते हैं कि इस सुन्दर वनमें बड़ पुंच्छा नामके एक घोर विद्वान् बाघ रहते हैं। उन्होंने आज रातको हमारे अनुरोधसे मनुष्य चरित्रके सम्बन्धमें एक प्रबन्ध पाठ करना स्वीकार किया है।"

मनुष्यका नाम सुनते ही कुछ नवीन सभासदोंको बेतरह भूख लग आयी थी। पर पबलिक डिनरकी (गोठकी) सूचना न पा बेचारे मनमार कर रह गये। बड़ पुंच्छा बाघाचारज सभापति महाशयकी आज्ञा पा दहाड़ते हुए उठ खड़े हुए। आपने ऐसे स्वरमें प्रबन्ध पाठ करना प्रारम्भ किया कि जिसे सुन पथिकोंके प्राण सूख जायं।

आपका प्रबन्ध यों आरम्भ होता है—"सभापति महाशय, बाघनियों और भले बाघो! मनुष्य एक तरहका दोपाया जानवर है।

उसके पर नहीं होते इस लिये वह पक्षी नहीं कहे जा सकते। बल्कि चौपायोंसे वह मिलते जुलते हैं। चौपायोंके जो जो अङ्ग और हड्डियां हैं मनुष्योंके भी वैसी ही हैं। इस लिये मनुष्योंको एक तरहका चौपाया कहा जा सकता है। अन्तर इतनाही है कि चौपायोंकी बनावट जैसी है मनुष्योंकी वैसी नहीं है। केवल इसी अन्तरके कारण मनुष्योंको दोपाया समझ उनसे घृणा करना हमारा कर्त्तव्य नहीं है।

चौपायोंमें बन्दरोंसे मनुष्य बहुत मिलते जुलते हैं। विद्वानोंका कहना है कि समय पाकर पशुओंके अङ्गोंमें उत्कर्षता आ जाती है। एक तरह के अङ्गके पशु धीरे धीरे दूसरे सुन्दर पशुओंके रूपको प्राप्त करते हैं। हमें आशा है कि मनुष्यपशुके भी समय पाकर दुम निकलेगी और फिर वह धीरे धीरे बन्दर हो जायगा।

यह तो आप लोग सब ही जानते हैं कि मनुष्य पशु अत्यन्तस्वादिष्ट और भक्षणके योग्य पदार्थ है। (यह सुनकर सभ्योंने अपना अपना मुंह चाटा) मनुष्य सहज ही मरते हैं। हरिणकी तरह वह छलांग नहीं मार सकते, न भैंसेकी तरह बलवान ही हैं और न उनके पास सींघोंका हथियार ही है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि परमात्माने यह संसार बाघोंके सुखके लिये ही बनाया है। इसीसे व्याघ्रोंके उपादेय भोज्य पशुको भागने या आत्म रक्षा करनेकी सामर्थ तक न दी। वास्तवमें मनुष्यको इतना कमजोर देखकर आश्चर्य्य होता है। न जाने भगवानने इन्हें क्यों बनाया। न इनके दांत हैं और न सींघ। इनकी चाल भी बड़ी धीमी है। स्वभाव बड़ा कोमल है। बाघोंका पेट भरनेके सिवा इनके जीवनका और कुछ उद्देश्य नहीं मालूम होता है।

इन कारणोंसे, विशेष कर मनुष्योंके मांसकी कोमलताके कारण हमलोग उन्हें बहुत पसन्द करते हैं। देखते ही उन्हें खा जाते हैं।

आश्चर्य्यका विषय तो यह है कि मनुष्य भी वड़े व्याघ्र भक्त होते हैं। यदि आपको इसका विश्वास न होतो मैं एक आप बीती घटना सुनाता हूं।

आप जानते हैं कि मैं वहुत दिनों तक देशाटन कर बहुदर्शी होगया हूं। मैं जिस देशमें था वह इस व्याघ्रभूमि सुन्दरवनके उत्तर है। वहां गाय वैल मनुष्य आदि छोटे छोटे हिंसा न करने वाले जीव रहते हैं। वहां दो रङ्गके मनुष्य हैं—काले रंग और गोरे रंगके। वहां एकवार मैं सांसारिक कर्म्मके लिये चला गया।"

यह सुन वड़दन्ता नामक एक ढीठ बाघ वोल उठा कि सांसारिक कर्म्म किसे कहते हैं ?.

वड़ पुंच्छाने कहा "सांसारिक कर्म्म आहारान्वेषण यानी खानेकी तलाशका नाम है। अव सभ्य लोग खानेकी तलाशको सांसारिक कर्म्म कहते हैं। सभी खानेकी खोजको सांसारिक कर्म्म कहते हैं यह वात नहीं है। बड़े लोगोंके आहारान्वेषण यानी खानेकी तलाशका नाम सांसारिक कर्म्म है, छोटे लोगोंके खानेकी तलाशका नाम ठगी, भिखमंगी है। धूर्त्तोंके खानेकी तलाशका नाम चोरी और जवरदस्तके खानेकी तलाशका नाम डकैती है। मनुष्य विशेषके सम्बन्धमें डकैती शब्दका व्यवहार न हो वीरताका होता है। जिस डाकूको दण्ड देनेवाला है उसीके कामका नाम डकैती है जिस डाकूको दण्ड देनेवाला नहीं है उसके कामका नाम वीरता है। आपलोग जब सभ्य समाजमें रहें तब इस नाम वैचित्रयको याद रखें, नहीं तो लोग असभ्य कहेंगे। वास्तवमें मेरी समझसे इतने वैचित्रयकी आवश्यकता नहीं। एक पेट पूजा कह देनेसे ही वीरतादि सब हीं बातें समझी जाती हैं।

खैर, जो कह रहा था वह सुनिये। मनुष्य बड़े व्याघ्र भक्त हैं।

मैं सांसारिककर्मके लिये एकवार मनुष्योंकी वस्तीमें जा पहुंचा आप लोगोंने सुना होगा कि इस सुन्दरवनमें कई साल हुए पो कैनिङ्गकम्पनी खड़ी हुई थी।"

बड़दन्ता फिर पूछ बैठा कि पोर्टकैनिङ्ग कम्पनी कैसा जानवर है बड़ पुंच्छा बोला "यह मुझे ठीक मालूम नहीं। इस जानवरकी सूर शकल, हाथ पैर कैसे थे, हत्या करनेको प्रकृति कैसी थी यह मालू नहीं, सुना है मनुष्योंने ही इस जानवरको खड़ा किया था। मनुष्यों के हृदयका रक्त ही वह पीता था। रक्त पी पीकर इतना मोटा हुआ कि मरही गया। मनुष्य कभी किसी बातका परिणाम नहीं सोचते अपने मरनेका उपाय आपही ढूंढ़ निकालते हैं। इसका प्रमाण उनके अस्त्रादि हैं। मनुष्योंका संहार करना ही इन अस्त्रोंका उद्देश्य है सुना है कभी कभी एक एक हजार मनुष्य मैदानमें इकट्ठे हो इन अस्त्रों से एक दूसरेको मार डालते हैं। मालूम होता है मनुष्योंने एक दूसरेकी हत्या करनेके लिये ही पोर्ट कैनिङ्ग कम्पनी नामक राक्षसीको खड़ा किया था। खैर, आप लोग मनुष्य वृत्तान्त ध्यान लगा सुनिये। बीच बीचमें छेड़छाड़ करनेसे वक्तृताका मजा बिगड़ जाता है। सभ्यजातियोंका यह नियम नहीं है। अब हम लोग सभ्य हो गये हैं। सब काम सभ्योंके नियमानुसार होने चाहियें।

मैं एकबार इसी पोर्ट कैनिङ्गकम्पनी के वासस्थान मातला में सांसारिक कर्म्म के हेतु चला गया। वहाँ बांस के माण्डपमें कोमल मांसवाला बकरी का एक बच्चा कूदता हुआ नज़र आया। मैं उसका स्वाद लेने के लिये मण्डप में घुस गया। वह मण्डप जादू का था पीछे मालूम हुआ कि, मनुष्य उसे फन्दा कहते हैं। मेरे घुसते ही द्वार आप ही आप बन्द होगया। पीछे कई मनुष्य वहाँ आ पहुंचे।

वह मेरे दर्शन से बड़े आनन्दित हुए, कोई हंसता था, कोई चिल्लाता था और कोई ठठोली करता था। वह लोग मेरी बड़ी बड़ाई कर रहे हैं यह मैंने समझ लिया था। कोई तो मेरी सूरत की तारीफ़ करता कोई दांतों पर कुर्बान था, कोई नखोंपर मोहित था और कोई दुम के ही गीत गाता था। जोड़ू के भाई को जो कहते हैं खुश हो-होकर वही मुझे कहने लगे। इसके बाद भक्तिपूर्वक उन लोगों ने मण्डप सहित मुझे उठा कर गाड़ी पर रख दिया। इसमें दो सफेद बैल जुते हुए थे, उन्हें देख कर मेरे मुंह से राल टपक पड़ी। मण्डप से बाहर निकलने का कोई उपाय न था। लाचार बचे हुए बकरे से ही सन्तोष किया। मैं आनन्द से गाड़ी पर बैठा बकरे का माँस खाता एक मनुष्य के घरमें घुसा, मेरे सत्कार के लिये उसने स्वयं द्वार पर आकर मेरा स्वागत किया। लोहेके एक घरमें मेरे रहनेका प्रबन्ध हुआ, जीते या तुरंतके मरे बकरे, मेंढ़े, बैल वगैरहके उपादेय मांस और रक्तसे मेरा सत्कार होने लगा। दूरदूरके मनुष्य मुझे देखनेको आने लगे, मैं भी समझता था कि यह मुझे देख कर कृतार्थ हो रहे हैं।

मैंने बहुत दिनों तक उस लोहे के घर में वास किया। वह सुख छोड़कर आने की इच्छा न थी, पर स्वदेशानुराग के कारण न रह सका। अहा! जब जन्मभूमि की याद आती तो दहाड़ता और कहता था कि हे माता सुन्दर वनभूमि, मैं क्या कभी तुझे भूल सकता हूं? जब तेरी याद आती तो मैं बकरे का मांस, भेड़ेका मांस छोड़ देता (यानी हड्डी और चमड़ा ही छोड़ता) और पूंछ पटक-पटक कर मनकी चिन्ता सबको बताता था। जन्मभूमि, जबतक तुझे मैंने नहीं देखा तबतक मैंने भूख लगे बिना खाया नहीं, नींद बिना सोया नहीं। अपने कष्टकी बात और क्या बताऊं—पेटमें जितना समाता उतना ही

खाता, ऊपरसे दो चार सेर मांस और खा लेता था। और कुछ नहीं खाता।

जन्मभूमिके प्रेमसे विह्वल हो बड़पुंच्छाजी बहुत देर तक चुप रहे। मालूम हुआ उनकी आंखें डब-डबा आयी हैं, दो चार बूंदें गिरने का निशान भी जमीन पर दिखाई दिया था। पर कुछ युवक व्याघ्र यह बात मानने के लिये तैयार न थे, वह कहते थे कि यह बड़पुंच्छाके आंसुओंकी बून्दें नहीं हैं, राल है जो मनुष्योंके यहाँ के खाने की याद आजाने से गिरी थी।

व्याख्याता ने धैर्य्य धारण कर फिर बोलना आरम्भ किया। मैं कैसे वह स्थान छोड़ा यह बताने की जरूरत नहीं। मेरी इच्छा जान कर या भूलसे चाहे जैसे हो मेरे नौकरने एक रोज घर में झाड़ू लगानेके बाद द्वार खुला छोड़ दिया, बस मैं बाहर निकल आया और मालीराम को उठा कर चलता हुआ।

यह सब बातें विस्तारपूर्वक कहने का कारण यही है कि मैं बहुत रोजतक मनुष्यों में रह चुका हूं और उनका चरित अच्छी तरह जानता हूं। इससे आप लोग मेरी बातों पर अच्छी तरह विश्वास करेंगे इसमें सन्देह नहीं। मैंने जो कुछ देखा हैं वही कहूंगा, और यात्रियों की तरह बेजड़ बातें बोलने की मेरी आदत नहीं। मनुष्यों के सम्बन्ध में बहुतेरे उपन्यास हम लोग बहुत रोज से सुनते चले आये हैं। मुझे इन बातों का विश्वास नहीं हैं। हम लोग बहुत दिनोंसे सुनते चले आरहे हैं कि मनुष्य क्षुद्रजीवी होकर भी पर्व्वताकार विचित्र गृह बनाते हैं। इन घरों में वह रहते हैं सही पर उन्हें ऐसा घर बनाते आंखों से कभी नहीं देखा, इसलिये वह लोग स्वयं ऐसे घर बनाते हैं इसका प्रमाण नहीं मिला। मालूम होता है वह लोग जिन

घरों में रहते हैं, वह वास्तव में पर्व्वत हैं—प्रकृति के बनाये हैं। उनमें बहुत सो खोह कन्दराएं देख बुद्धिजीवी मनुष्यपशु रहने लगे हैं।*

मनुष्यजन्तु मांस और फल मूल दोनों खाते हैं। बड़े बड़े पेड़ नहीं खा सकते, पर छोटे छोटे पेड़ जड़ सहित भकोस जाते है। मनुष्य छोटे छोटे पेड़ इतना पसन्द करते हैं कि उनकी खेती कर हिफाजत से रखते हैं। हिफाजत से रखी हुई ऐसी जगह को खेत या बागीचा कहते हैं, एक के बाग में दूसरा नहीं चर सकता।

मनुष्य फल मूल लता पत्ते तो जरूर खाते हैं पर घास चरते हैं या नहीं, पता नहीं। कभी किसी मनुष्य को घास चरते नहीं देखा, पर इसमें मुझे कुछ शक है। गोरे और काले धनी मनुष्य अपने अपने बागीचेमें बड़ी मिहनत से घास लगाते हैं। मेरी समझ से वह लोग घास खाते हैं। नहीं तो घास के लिये इतनी मिहनत क्यों? मैंने एक काले मनुष्य से यह सुना था, वह कहता था—"देश का सत्यानाश होगया—जितने बड़े बड़े धनी और साहब हैं बैठे बैठे घास खाते हैं। इसलिये बड़े लोग घास खाते हैं, यह एक तरह से ठीक ही है।

मनुष्य क्रुद्ध होते हैं तब कहते हैं—क्या मैं घास चरता हूं। मैं जानता हूं मनुष्योंका स्वभाव ऐसा ही है वह जो काम करते हैं, उसे बड़ी मिहनतसे छिपाते हैं। इसलिये जब वह लोग घास खानेकी बात पर नाराज होते हैं तब यह अवश्य सिद्धान्त करना होगा कि वह घास खाते हैं।

---

* पाठक बड़ पुंच्छा की न्याय शास्त्र में व्युत्पत्ति देखकर विस्मित न हों। इसी प्रकार के तर्क से (Máxmuler) मोक्षमूलर ने सिद्ध किया है कि प्राचीन भारतवासी लिखना नहीं जानते थे। इसी तरह के तर्क से (James Mill) जेम्समिल ने सिद्ध किया है कि प्राचीन काल के भारतवासी असभ्य थे और संस्कृत असभ्य भाषा है। सचमुच व्याघ्र विद्वान और मनुष्य विद्वान में अधिक भेद नहीं है।

मनुष्य पशु पूजा करते हैं। मेरी जैसी पूजा की थी वह बता चुका हूं। घोड़ों की भी वह इसी तरह पूजा करते हैं, घोड़ों को रहने के लिये जगह देते हैं, खाने का बन्दोबस्त करते हैं—और नहलाते धुलाते हैं। मालूम होता है घोड़े मनुष्य से श्रेष्ठ पशु हैं इसीसे मनुष्य उनकी पूजा करते हैं।

मनुष्य भेड़ बकरियां गाय बैल भी पालते हैं। गाय बैलोंके साथ उनका अजीब सलूक देखा गया है। वह गायों का दूध पीते हैं; इसीसे पुराने समय के व्याघ्र विद्वानों ने यह सिद्धान्त निकाला है कि मनुष्य किसी समय गायों के बछड़े थे। मैं यह तो नहीं कहता पर इतना जरूर कहता हूं कि दूध पीने के सबब ही मनुष्य और बैलोंकी बुद्धि में समानता है।

खैर, मनुष्य भोजनके सुभीतेके लिये गाय, बैल, भेड़ बकरियाँ पालते हैं। बेशक, यह अच्छी चाल है। मैंने यह प्रस्ताव करनेका विचार किया है कि हम लोग भी मनुष्यशाला बनवा कर मनुष्योंको पालें।

भेड़ बकरियों के सिवा हाथी, ऊंट, गधे, कुत्ते, बिल्लियाँ, यहाँतक कि चिड़ियाँ भी इनके यहाँ भोजन पाती हैं। इसलिये मनुष्य सब पशुओं का सेवक भी कहा जा सकता है।

मनुष्यों में बन्दर भी बहुत दिखाई दिये, पर बन्दर दो प्रकार के हैं। एक दुमदार, और दूसरे बेदुम। दुमदार बन्दर अकसर छत पर या पेड़ों पर रहते हैं; नीचे भी बहुतेरे बन्दर रहते हैं पर अधिकांश ऊंचे पदपर ही रहते हैं। कुल मर्य्यादा या जाति गौरव ही इसका कारण प्रतीत होता है।

मनुष्य चरित्र बड़ा विचित्र है। इनके विवाह की रीति बड़ी ही मजेदार है। इनकी राजनीति तो और भी गजब की है, धीरे-धीरे मैं सब बताता हूं।

यहाँतक प्रबन्ध पढ़े जाने पर सभापति महाशय की दृष्टि दूर खड़े एक मृग छौने पर जा पड़ी। फिर क्या था, आप कुर्सी से कूद कर चम्पत हो गये। बड़पेटा बाघ इसी दूरदर्शिताके कारण सभापति बनाये गये थे। सभापति को अकस्मात् विद्यालोचना से भागते देख प्रबन्ध पाठक मनमें कुछ खिन्न हुआ। एक विज्ञ सभासदने उसके मनका भाव देखकर कहा—"आप नाराज न हों। सभापति महाशय सांसारिक कर्म्मके लिये भागे हैं। हरिणोंका झुण्ड आया है, मुझे मँहक लगी है।"

इतना सुनते ही सभासद लोग सांसारिक कर्म्म के लिये जिधर पाया उधर पूंछ उठाकर दौड़ गये। प्रबन्ध पढ़नेवाले ने भी इन विद्यार्थियोंका अनुगमन किया। इस प्रकार उस दिन व्याघ्रों की सभा बीच में ही भङ्ग होगई।

एक दिन फिर उन लोगोंने सलाह कर खानेके बाद सभा कर डाली। उस दिन सभा का काम निर्विघ्न हुआ। प्रबन्ध का शेषांश पढ़ा गया था। इसकी रिपोर्ट आने पर प्रकाशित की जायगी।

दूसरा प्रबन्ध.

सभापति महाशय, बाघनियो और भले बाघो !

पहले व्याख्यान में मैंने मनुष्योंके विवाह तथा और और विषयों के बारे में कुछ कहने की प्रतिज्ञा की थी। भलेमानसों का प्रधान धर्म्म प्रतिज्ञापालन नहीं हैं। इसलिये मैं एक साथ ही अपने विषय पर कहना आरम्भ करता हूं।

विवाह किसे कहते हैं यह आप लोग जानते ही हैं। अवकाशके अनुसार सब ही बीच बीच में व्याह करते रहते हैं। पर मनुष्यों के

विवाह में कुछ विचित्रता है। व्याघ्रादि सभ्य पशुओं का व्याह जरूरत पड़ने पर होता है, मनुष्य पशुओंमें ऐसी चाल नहीं है। उनमें अधिक लोग एक ही समय जन्म भरके लिये व्याह कर लेते हैं।

मनुष्यों के विवाह नित्य और नैमित्तिक दो प्रकार के होते हैं। इनमें नित्य अर्थात पुरोहित विवाह ही मान्य है। पुरोहित को बीच में डालकर जो विवाह होता है उसका ही नाम पौरोहित विवाह है।

वड़दन्ता। पुरोहित किसे कहते हैं ?

वड़पुंच्छा। कोष में लिखा है कि पुरोहित लड्डू खानेवाला और धूर्त्तता करनेवाला मनुष्य विशेष है, पर यह व्याख्या ठीक नहीं। क्योंकि सबही पुरोहित लड्डू खानेवाले नहीं हैं। बहुतेरे शराब और कवाब उड़ाते हैं और कुछ तो सब कुछ भकोसते हैं। इसके सिवा लड्डू खाने से ही कोई पुरोहित नहीं होता है। बनारस नामके नगर में साँड़ मिठाई खाते हैं पर वह पुरोहित नहीं, क्योंकि वह धूर्त्त नहीं होते। धूर्त्त यदि लड्डू खाय तो वह पुरोहित होता है।

पौरोहित विवाह में वर कन्याके बीच में एक पुरोहित बैठता है, और कुछ बकता है। इस बकवाद का नाम मन्त्र है। इसका अर्थ क्या है यह मैं अच्छी तरह नहीं जानता। पर विद्वान् होनेके कारण मैंने उसका अभिप्राय क्या है यह एक तरहसे अनुमान कर लिया है। शायद पुरोहित कहता है—

"हे वर, कन्या! मैं आज्ञा देता हूं तुम दोनों व्याह कर लो। तुम्हारे व्याह करने से मुझे रोज लड्डू मिला करेंगे—इसलिये व्याह कर लो। इस कन्याके गर्भाधान, सीमन्तोन्नयन, और प्रसूतिकागार में लड्डू मिलेंगे इसलिये व्याह करो। बालक की छठी, अन्नप्रासन, कर्णछेदन चूड़ाकरण या उपनयन के समय बहुत लड्डू मिलेंगे इसलिये व्याह

करो। तुम्हारे गृहस्थ होने से बराबर तीज त्योहार और पूजा पाठ और श्राद्ध हुआ करेंगे तो मुझे भी लड्डू मिलेंगे इस हेतु व्याह करो। व्याह करो और कभी इस सम्बन्ध को मत तोड़ो, अगर तोड़ोगे तो मेरे लड्डुओं की हानि होगी। हानि होनेसे मैं मारे थप्पड़ोंके मुंह लाल कर दूंगा। हमारे पुरखों की यही आज्ञा है।"

इसीसे मालूम होता है कि पौरोहित विवाह कभी नहीं टूटता है।

हम लोगों में विवाह की जो प्रथा प्रचलित है उसे नैमित्तिक प्रथा कह सकते हैं। मनुष्यों में यह विवाह भी साधारणतः प्रचलित है। बहुतेरे नर नारी नित्य नैमित्तिक दोनों व्याह करते हैं। नित्य और नैमित्तिक विवाहों में केवल यही अन्तर है कि, नित्य विवाह को कोई छिपाता नहीं पर नैमित्तिक को प्राणपन से लोग छिपाते हैं। अगर कोई मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य के नैमित्तिक विवाह का हाल जान पाता है तो वह उसे कभी कभी ठोंकता भी है। मेरी समझ से पुरोहितजी ही इस अनर्थ के मूल हैं। नैमित्तिक विवाहमें उन्हें लड्डू नहीं मिलते, इसीसे इस विवाह को वह लोग रोकते हैं। उनकी शिक्षा के अनुसार नैमित्तिक विवाह करनेवाले को सभी पकड़ कर पीटते हैं। लेकिन मजा यह है कि छिपछिपकर सभी नैमित्तिक विवाह कर लेते हैं पर दूसरों को करते देखकर ठोंकते हैं।

इससे मैंने यही समझा है कि, नैमित्तिक विवाह करने के लिये अधिक मनुष्य सहमत हैं पर पुरोहित आदि के डर से बोल नहीं सकते। मैंने मनुष्यों में रहकर जान लिया है कि बहुत से बड़े आदमी नैमित्तिक विवाह का बहुत आदर करते हैं। जो हम लोगों की तरह सुसभ्य हैं अर्थात् जिनको पशुओं की सी प्रवृत्ति है वही इसमें हमारी नकल करते हैं। मुझे विश्वास है कि समय पाकर मनुष्य हमारी

तरह सुसभ्य होंगे तो नैमित्तिक विवाह मनुष्य समाज में चल जायगा, बहुत से मनुष्य विद्वान् इस विषय के रुचिकर ग्रन्थ लिख रहे हैं। वह स्वजाति हितैषी हैं इसमें सन्देह नहीं। मेरी समझ से उनका सम्मान वढ़ाने के लिये उन्हें व्याघ्र समाज का अनाड़ी मेम्बर बनाना अच्छा है। आशा है वह सभा में उपस्थित हों तो आप उनका कलेवा न कर जायंगे। क्योंकि वह हम लोगों की तरह नीतिज्ञ और संसार हितैषी हैं! मनुष्यों में एक विशेष प्रकार का नैमित्तिक विवाह प्रचलित है इसका नाम मौद्रिक यानी रुपये का ब्याह है। इसमें मनुष्य रुपये से मानुषी का हाथ पकड़ता है बस ब्याह होजाता है।

बड़दन्ता—रुपया क्या?

बड़पुंच्छा—रुपया मनुष्योंका एक पूज्य देवता है। यदि आप लोगों को अधिक चाव हो तो उसी की कथा सुनाऊँ।

मनुष्य जितने देवता पूजते हैं उनमें इसीपर उनकी अधिक भक्ति है। वह साकार है, सोने, चाँदी और ताम्बेकी इसकी मूर्त्ति बनती है। लोहे, टीन और लकड़ीका मन्दिर होता है। रेशम, ऊन, कपास चमड़े का सिंहासन बनता है। मनुष्य रातदिन इसका ध्यान करते और इसके दर्शनके लिये व्याकुल हो इधर-उधर दौड़े फिरते हैं। मनुष्योंको जिस घरमें रुपयेका पता लगता है वहाँ वह बराबर आवाजाई करते हैं और मार खाने पर भी वहाँसे नहीं टलते। इस देवताका जो पुरोहित है यानी जिसके घरमें रुपया रहता है वही मनुष्योंमें वड़ा माना जाता है। लोग रुपयेवालेकी हाथ जोड़े सदा स्तुति करते हैं। रुपयेवाला नजर उठाकर जिसकी ओर देखता है वह अपनेको कृतार्थ समझता है।

रुपये की बड़ी जागती जोत है, ऐसा कोई काम हो नहीं जो इसकी कृपा से न होता हो। संसार में ऐसी कोई वस्तु ही नहीं जो इसके

प्रसाद से न मिल सकती हो। ऐसा कोई दुष्कर्म्म ही नहीं जो इसके द्वारा न हो सकता हो। ऐसा कौन दोष है जो इसकी दया से न छिप जाता हो? रुपये से ही मनुष्य समाज में गुण का आदर होता है। जिसके पास रुपया नहीं, भला वह कैसे गुणी हो सकता है? जिसके पास है, वह भला कभी दोषी होसकता है? कभी नहीं, जिसके ऊपर रुपये की कृपा है वही धर्म्म-ध्वजी है। रुपये का अभाव ही अधर्म्म है। रुपया होना ही विद्वत्ता है, विद्वान् होकर भी जिसके पास रुपया नहीं, वह मनुष्यशास्त्र के अनुसार मूर्ख है। 'बड़े बाघ' कहने से बड़पेटा, बड़दन्ता आदि बड़े-बड़े डीलडौलवाले बाघ समझे जाते हैं पर मनुष्यों में यह बात नहीं है। वहाँ जिसके घरमें रुपये होते हैं वही "बड़ा आदमी" समझा जाता है। जिनके घरमें रुपये नहीं वह डीलडौलवाले होनेपर भी "छोटे आदमी" ही कहलाते हैं।

रुपये की इतनी बड़ाई सुनकर मैंने विचारा था कि मनुष्योंके यहाँ से रुपयाजी को लाकर व्याघ्रपुरी में स्थापित करेंगे। पर पीछे यह विचार त्यागना पड़ा। क्योंकि, सुनने में आया कि रुपया ही मनुष्यों के अनिष्ट का मूल है। व्याघ्रादि प्रधान पशु कभी स्वजाति की हत्या नहीं करते पर मनुष्य सदा करते हैं। रुपये की पूजा ही इसका कारण है, रुपये के लालच में पड़कर एक दूसरे का अनिष्ट करनेमें लगे रहते हैं। पहले व्याख्यान में कह चुका हूं कि हजारों मनुष्य मैदान में इकट्ठे हों एक दूसरे की हत्या करते हैं। इसका कारण रुपया ही है, रुपये से मतवाले बनकर मनुष्य सदा एक दूसरे को मारते-काटते, बाँधते-सताते, घायल करते और बेइज्जत करते हैं। ऐसा कोई अनिष्ट ही नहीं, जो रुपये से न होता हो। यह सब हाल सुनकर मैंने रुपये को दूर ही से प्रणाम किया और उसकी पूजा का ध्यान छोड़ दिया।

पर मनुष्य यह नहीं समझते, मैं कह चुका हूं कि, मनुष्य अपरिणामदर्शी होते हैं। सदा एक दूसरे की बुराई किया करते हैं। वह लोग बराबर चाँदी और तामे की चकती इकट्ठी करने के लिये चक्कर काटा करते हैं।

मनुष्यों का विवाह तत्त्व जैसा आश्चर्य्य से भरा हुआ है वैसे ही और काम भी हैं। पर इस समय लम्बा व्याख्यान देनेसे आप लोगों के सांसारिक कर्म्म का समय फिर आपहुंचेगा। इसलिये आज यहीं बस करता हूं। यदि छुट्टी मिली तो और बातें फिर कभी सुनाऊँगा।

व्याख्यान समाप्त कर बड़पुंच्छा बाघाचारज महाराज पूंछोंकी विकट फटफट में बैठ गये। बड़नखा नाम का एक सुशिक्षित युवा व्याघ्र उठ कर कहने लगा—

व्याघ्र सज्जनो ! मैं, सुन्दर वक्तृता झाड़ने के कारण वक्ताजी को धन्यवाद देने का प्रस्ताव करता हूं। पर, साथ ही यह भी कहना अपना कर्त्तव्य समझता हूं कि, यह वक्तृता बड़ी रद्दी हुई है। वक्ता बड़ा मूर्ख है और उसकी बातें असत्य हैं।

बड़पेटा बोला "आप शान्त हों। सभ्य जातियां इतनी साफ गालियां नहीं देती हैं। गुप्त रूपसे आप चाहे इनसे भी बढ़कर गालियां दे सकते हैं।"

बड़नखाने कहा "जो आज्ञा। वक्ता बड़ा सत्यवादी है। उसने जो कुछ कहा उसमें अधिकांश बातें अस्वाभाविक होनेपर भी एकाध बात सच्ची है आप बड़े विद्वान हैं। बहुत लोग समझते होगें कि इसमें कुछ सार नहीं है। पर हम लोगोंने जो कुछ सुना उसके लिये कृतज्ञ होना चाहिये। फिर भी मैं वक्ता की सब बातोंसे सहमत नहीं सकता विशेष कर मनुष्योंके ब्याहके बारेमें वक्ता महाशय कुछ नहीं जानते हैं। पहले

तो वह यही नहीं जानते कि मनुष्य व्याह किसे कहते हैं। वाघोंमें वंश रक्षाके लिये जव कोई वाघ किसी बाघिनको सहचरी (साथमें चरने वाली) वनाता है तो हमलोग उसे ही व्याह कहते हैं। पर मनुष्योंका व्याह ऐसा नहीं है। मनुष्य स्वभावसे ही दुर्व्वल और प्रभु-भक्त होते हैं। इस लिये प्रत्येक मनुष्यको एक एक प्रभु चाहिये। सभी मनुष्य ही एक एक स्त्रीको प्रभु नियत करते हैं। इसीका नाम उनके यहां व्याह है। जव वह किसीको साक्षी बना प्रभु नियत करते हैं तो वह पौरोहित विवाह कहाता है। साक्षीका नाम पुरोहित है। वड़पुंच्छाजीने विवाहके मन्त्रोंकी जो व्याख्या की है वह ठीक नहीं। वह मंत्र यों है।

पुरोहित। कहिए मुझे किस बातकी गवाही देनी होगी?

वर—आप साक्षी हों कि मैं इस स्त्रीको जन्मभरके लिये प्रभु नियुक्त करता हूं।

पुरो—और?

वर—और मैं इसके श्रीचरणोंका दास हुआ। इसके आहार जुटानेका वोझ मेरे ऊपर और खानेका इसके ऊपर है।

पुरो—(कन्यासे) तू क्या कहती है।

कन्या—मैं खुशीसे इस दासको ग्रहण करती हूं। जबतक चाहूंगी इसे सेवा करने दूंगी नहीं तो लात मार निकाल बाहर करूंगी।

पुरो—शुभमस्तु।

और भी बहुत सी भूलें हैं। रुपयेको इन्होंने मनुष्योंका देवता बताया है पर वास्तबमें वह देवता नहीं है। रुपया एक तरहका विष-चक्र है। मनुष्य विषको बहुत पसन्द करते हैं। इसीसे रुपयेके लिये वह लोग मरते हैं। मनुष्योंको रुपयेका इतना भक्त जानकर मैंने

पहले समझा था कि रुपया न जाने कैसी अच्छी चीज है। इसका एक रोज स्वाद लेना चाहिये। एकदिन विद्याधरी नदीके किनारे एक आदमीको मारकर खाने लगा तो उसके कपड़ेमें कई रुपये मिले। मैंने तुरत उन्हें पेटमें धरलिया। दूसरे दिन पेटमें बड़ा दर्द उठा। इससे रुपया विष है इसमें सन्देह ही क्या है? बड़नखाकी वक्तृता समाप्त होने पर और बाघोंने भी व्याख्यान झाड़े थे। पीछे सभापति बड़पेटाने यों व्याख्यान देना आरम्भ किया—"अब रात अधिक हुई, सांसारिक कर्म्मका समय हो गया। हरिणोंका झुण्ड कब आयेगा इसका क्या ठिकाना! इस लिये लम्बी वक्तृता देकर समय विताना उचित नहीं। आजका व्याख्यान बड़ा अच्छा हुआ, हम बाघाचारजजीका बड़ा गुण मानते हैं। मैं बस एक ही बात कहना चाहता हूं कि इन दो रोजके व्याख्यानोंसे आप लोगोंको जरूर मालूम हुआ होगा कि मनुष्य बड़े असभ्य पशु हैं। हमलोग सभ्य हैं। इसलिये मनुष्योंको अपनी तरह सभ्य बनाना हमारा कर्त्तव्य है। मालूम होता है, भगवानने मनुष्योंको सभ्य बनानेके लिये ही हमें इस सुन्दर बनमें भेजा है। मनुष्योंके सभ्य होनेसे उनका मांस और भी स्वादिष्ट हो जायगा। और वह लोग जल्दी पकड़े भी जा सकेंगे। क्योंकि सभ्य होकर वह जान जायंगे कि बाघोंको अपने शरीरका भोजन कराना ही मनुष्योंका कर्त्तव्य है। बस यही सभ्यता उन्हें सिखानी चाहिये इस लिये अब इधर ध्यान देना आवश्यक है। बाघोंको उचित है कि पहले मनुष्योंको सभ्य बनावें पीछे उन्हें भोजन करें।"

दुमोंकी चटाचटमें सभापतिने व्याख्यान समाप्त कर आसनग्रहण किया। सभापतिको धन्यवाद दिये जानेपर सभा भङ्ग हुई। जिसे जिधर भाया सांसारिक कर्म्मके लिये चला गया।

जहां महासभा का अधिवेशन हुआ था वहां चारों ओर बड़े बड़े वृक्ष थे। कुछ बन्दर पत्तों में छिप कर उनपर बैठ गये और शेरों की वक्तृता सुनने लगे। शेरों के चले जाने पर एक बन्दरने सिर निकाल कर पूछा—क्यों, भाई डालों पर बैठे तो हो ?

दूसरे ने कहा—जी हां, बैठा हूं।

पहला—चलो हम लोग बाघों के व्याख्यान की आलोचना करें।

दूसरा—क्यों ?

पहला—यह बाघ हमारे जन्म के वैरी हैं। चलो निन्दा कर बैर निकालें।

दूसरा—जरूर जरूर, यह तो हमारी जाति के योग्य ही काम है।

पहला—अच्छा तो, देख लो, आसपास कोई बाघ नहीं है।

दूसरा—नहीं, तो भी आप जरा छिपकर ही बोलें।

पहला—तुमने यह ठीक ही कहा, नहीं तो जाने कब किसी बाघ के फेर में पड़कर जान देनी पड़े !

दूसरा—हां, कहिये व्याख्यानमें भूल क्या है ?

पहला—पहले तो व्याकरण अशुद्ध है, हम लोग व्याकरण के कैसे बड़े पण्डित होते हैं। इनका व्याकरण हमारे बन्दरोंके व्याकरण सा नहीं है।

दूसरा—इसके बाद ?

पहला—इनकी भाषा बड़ी निकम्मी है।

दूसरा—हां, वह बन्दरों की सी बोली नहीं बोल सकते हैं।

पहला—बड़ पेटाने जो यह कहा कि बाघों का कर्त्तव्य है कि मनुष्योंको पहले सभ्य बनावें, पीछे उनका भक्षण करें, सो यह गलत है कहना यह चाहिए था कि पहले भोजन करो, पीछे सभ्य बनाओ।

दूसरा—इसमें क्या सन्देह है—इसीसे तो हम बन्दर कहे जाते है।

पहला—कैसे व्याख्यान देना चाहिये, और क्या बोलना चाहिये यह वह नहीं जानता है। व्याख्यान देने के समय कभी किलकारियां मारना, कभी कूदना-फाँदना, कभी मुंह बनाना और कभी जरा शकरकन्द खाना चाहिये। उनको हमसे व्याख्यान देना सीखना चाहिये।

दूसरा—हमसे सीखते तो वह बन्दर बन जाते। बाघ न होते।

इतने में और भी दो चार बन्दर साहसकर बोल उठे—

एक ने कहा—"मेरी समझ से बड़पुंच्छा के व्याख्यान में सबसे बड़ा दोष यह है कि उसने अपनी अकल से गढ़कर नई नई बातें कही हैं। यह बातें किसी ग्रन्थ में नहीं मिलती हैं। जो पुराने लेखकों के चर्व्वितचर्वण में नहीं, वह दूषण के योग्य है। हम लोग सदा से चर्व्वितचर्वण करते हुए बन्दरों भी श्री वृद्धि करते चले आरहे हैं। बड़पुंच्छा ने ऐसा न कहकर बड़ा पाप किया है।

इसपर एक सुन्दर बन्दर बोल उठा—"मैं इस व्याख्यान में हजारों दोष दिखा सकता हूं। मैंने हजारों जगह समझा ही नहीं, जो हमारी समझ के बाहर है वह दोष के सिवा और क्या होसकता है?"

तीसरे ने कहा—"मैं कोई विशेष दोष नहीं दिखा सकता। पर मैं बावन तरह से मुंह चिढ़ा सकता हूं और खुली खुली गालियां देकर अपनी भलमनसी और ठठोलपन दिखला सकता हूं।"

बन्दरों को बाघों की इस तरह निन्दा करते देख एक लम्बोदर बन्दर ने कहा—"हमारे कोसा काटी से बड़पुंच्छा घर जाकर जरूर मर जायगा। चलो हम लोग शकरकन्द खायं।

विशेष संवाददाताका पत्र

युवराज प्रिन्स आफ वेल्सके साथ जो संवाददाता आये थे उनमेंसे एक ने किसी विलायती पत्रमें एक चिट्ठी छपवायी थी। उस पत्रका नाम जाननेके लिये कोई जिद्द न करे क्योंकि उसका नाम हमें याद नहीं है। उस चिट्ठीका सारांश इस प्रकार है :—

युवराजके साथ आकर मैंने बङ्गालको जैसा पाया वह अवकाशानुसार वर्णन कर आप लोगोंको प्रसन्न करने की इच्छा है। मैंने इस देशके विषयमें बहुत अनुसन्धान किया है। इसलिये मुझसे जैसी ठीक खबर मिलेगी वैसी दूसरेसे नहीं मिल सकती। इस देशका नाम बङ्गाला है, यह नाम क्यों पड़ा यह वहां वाले नहीं बता सकते। वहांवाले उस देशकी अवस्था अच्छी तरह जानते ही नहीं फिर भला वह कैसे बता सकते हैं? उनका कहना है कि इसके एक प्रान्तका नाम पहले बंग था। उस प्रान्तके वासी अब भी "बङ्गाल" कहलाते हैं। इसीसे इसका नाम "बङ्गाला" हुआ है। पर इसका नाम बङ्गाला नहीं 'बेङ्गाल' है यह आप लोग जानते ही हैं। इसलिये उनका कहना गलत है, मालूम होता है Benjamin Gall बेनजामिन गैल संक्षेपमें बेनगल नामक किसी अङ्गरेजने इस देशको आविष्कृत और अधिकृत कर अपना नाम प्रसिद्ध किया है।

राजधानीका नाम "कालकाटा" Calcutta है। काल और काटा इन दो बङ्गला शब्दोंसे इसकी उत्पत्ति है। उस नगरमें काल काटने यानी समय बितानेमें कोई कष्ट नहीं है इसीसे इसका नाम 'कालकाटा' पड़ा।

वहांके निवासी कुछ तो घोर काले और कुछ गोरे हैं। जो काले हैं उनके पुरखे शायद अफ्रिकासे आकर यहां बसे हैं क्योंकि उनके बाल घूंघरवाले हैं। नरतत्वविदोंका सिद्धान्त है कि जिनके बाल घूंघर-वाले हों वे बस हब्शी ही हैं। ओर जो ज़रा गोरे हैं वे मालूम होता है उक्त बेनगल साहबके वंशज हैं।

अधिकांश बंगालियोंको मनचेस्टरके बने कपड़े पहनते देखा। इससे यह साफ सिद्धान्त निकलता है कि मनचेस्टरसे कपड़े जानेके पहले बङ्गाली नंगे रहते थे। अब मनचेस्टरकी कृपासे लज्जा निवारण कर सकते हैं। इन्होंने हालहीमें कपड़ा पहनना सीखा है। इससे कैसे कपड़े पहनने चाहिएं अभी ठीक नहीं कर सके हैं। कोई हम लोगोंकी तरह पेंट पहनता है, कोई मुसलमानों की तरह पाजामा चढ़ाता है, और कोई किसकी नकल करनी चाहिये यह स्थिर न कर सकनेके कारण कमरसे कपड़ा लपेट लेते हैं।

वङ्गालमें अङ्गरेजी राज्यको बस एक ही सौ वर्ष हुए हैं। इसी बीचमें असभ्य नंगी जातियोंको कपड़े पहनना सिखा दिया है। इससे इङ्गलैण्डकी कैसी महिमा है और उससे भारतके धन और ऐश्वर्य्यकी कितनी वृद्धि हुई है यह वर्णन नहीं किया जा सकता। यह अङ्गरेज ही समझते हैं। बङ्गालियोंमें इतनी बुद्धि कहां जो समझें।

अफसोस है, मैं इतने थोड़े दिनोंमें बङ्गालियोंकी भाषा अच्छी तरह न सीख सका। हां कुछ थोड़ीसी सीख ली है। गुलिस्तां और बोस्तां नामकी जो दो बङ्गला पुस्तकें हैं उनका अनुवाद पढ़ा है। इन दोनोंका सारांश यही है कि युधिष्ठिर नामके राजाने रावण नामके राजाको मार उसकी रानी मन्दोदरीको हर लिया। मन्दोदरी कुछ दिन वृन्दाबनमें रह कर कृष्णके साथ रास करने लगी। अन्तमें उसने

दक्षयज्ञमें प्राण त्याग किया, क्योंकि उसके पिताने कृष्णको निमन्त्रण नहीं दिया था।

मैंने कुछ कुछ बङ्गला सीखी है। बङ्गाली हाइकोर्टको हाईकोर्ट, गवर्न्मेन्टको गवर्न्मेन्ट, डिक्रीको डिक्री, डिसमिसको डिसमिस रेलको रेल, डोरको डोर, और डबलको डबल कहते हैं। ऐसे ही और भी शब्द हैं। इससे साफ प्रकट होता है कि बंगला भाषा अङ्गरेजी की शाखा मात्र है।

इसमें एक सन्देह है। अगर बंगला अङ्गरेजी की शाखा है तो अङ्गरेजोंके आनेके पहले बङ्गालियोंकी कोई भाषा थी या नहीं? हमारे क्राइस्टके नाम पर उनके प्रधान देवता कृष्णका नाम रखा गया है। और यूरपके अनेक विद्वानोंके मातानुसार इनकी प्रधान पुस्तक भगवद्गीता बाइबलका उल्था है। इसलिये बाइबलके पहले इनकी कोई भाषा नहीं थी यह एक तरहसे निश्चित ही है। इसके बाद कब इनकी भाषा बनी यह नहीं कहा जा सकता। पण्डित मोक्षमूलर यदि ध्यान दें तो कुछ पता चल सकता है। जिसने पता लगाया है कि अशोकके पहले आर्य्य गण लिखना नहीं जानते थे वही भयंकर विद्वान् इसका भी पता लगानेमें समर्थ होंगे।

और एक बात है। विलियम जोन्ससे ले कर मोक्षमूलर तक कहते हैं कि बङ्गालमें संस्कृत नाम की एक भाषा और है। पर वहां जाकर मैंने किसी को संस्कृत बोलते या लिखते नहीं देखा। इस लिये वहां संस्कृत भाषा है इसका मुझे विश्वास नहीं है। शायद यह विलियम जोन्सकी कारस्तानी है। उन्होंने नामवरीके लिये संस्कृत भाषाकी सृष्टिकी है।*

---

* यह [illegible] यही राय थी।

खैर, अब बंगालियोंकी सामाजिक अवस्थाकी बात सुनिये। आप लोगोंने सुना होगा कि हिन्दू चार जातियोंमें बंटे हुए हैं। पर यह बात नहीं है। उनमें बहुत सी जातियां हैं। उनके नाम यों हैं—

१–ब्राह्मण, २–कायस्थ, ३–शूद्र, ४–कुलीन, ५–वंशज, ६–वैष्णव, ७–शाक्त, ८–राय, ९–घोषाल, १०–टेगोर, ११–मुल्ला, १२–फराजी, १३–रामायण, १४–महाभारत, १५–आसामगोआलपाड़ा, १६–परियाकुत्ते

बङ्गालियोंका चरित्र बड़ा खराब है, वे बड़े ही झूठे हैं। बिना सबब भी झूठ बोलते हैं। सुनते हैं बङ्गालियोंमें सबसे बड़ा विद्वान् बाबू राजेन्द्रलाल मित्र है। मैंने कई बङ्गालियोंसे पूछा था कि, वह कौन जाति है? सबने कहा—कायस्थ। पर वह सब मुझे धोखा न दे सके, क्योंकि मैंने विद्वद्वर मोक्षमूलरकी पुस्तकोंमें पढ़ा था कि राजेन्द्रलाल मित्र ब्राह्मण है। इसके सिवा (Mitra) शब्द (Mitres) का अपभ्रंश मालूम होता है इससे मित्र महाशय पुरोहित जातिकेही जान पड़ते हैं।

बङ्गालियोंका एक विशेष गुण यही है कि, वह बड़े ही राजभक्त हैं। जिस तरह लाखों आदमी युवराजको देखने आये थे उससे यही मालूम हुआ कि ऐसी राजभक्त जाति संसारमें दूसरी नहीं जन्मी है। ईश्वर हमारा कल्याण करे जिससे उनका भी कुछ न कुछ कल्याण हो ही रहेगा।

सुना है बङ्गाली अपनी स्त्रियोंको परदेमें रखते हैं। यह ठीक है पर सब जगह नहीं।* जहां कुछ लाभकी आशा नहीं है वहां स्त्रियाँ परदेमें रखी जाती हैं पर लाभका तार होतेही वह बाहर निकाली जाती हैं। हम लोग Fowling piece (शिकारी बन्दूक) से जो काम लेते हैं बङ्गाली अपनी परदेनशीन औरतोंसे वही काम लेते हैं। जरूरत न होनेसे बक्समें बन्द रखते हैं। शिकार देखते ही बाहर निकाल उनमें बारूद

* कुछ बङ्गालिनोंने परदेसे निकल युवराजकी अभ्यर्थना की थी।

भरते हैं। बन्दूककी गोलियोंसे पंछियोंके पर गिरते हैं। बङ्गालिनोंके नयनवाणसे किसके पर गिरनेकी सम्भावना है नहीं कह सकता। बङ्गालिनोंके गहनेके जैसे गुण मैंने देखे हैं उससे मैंने भी Fowling piece को सोनेका गहना पहनाना विचारा है। देखें चिड़िया लौट कर बन्दूक पर गिरती है या नहीं।

नयनवाण ही क्यों? सुना है बङ्गालिनें पुष्पवाण चलानेमें भी बड़ी चतुर होती हैं। हिन्दू साहित्यके पुष्पवाण और बङ्गालिनों के छोड़े पुष्पवाणमें कुछ सम्बन्ध है या नहीं मैं नहीं जानता। यदि हो तो उन्हें दुराकांक्षिणी कहना पड़ेगा। जो हो, इस फूलवानका प्रचार न हो यही अच्छा है। नहीं तो अङ्गरेजोंका वहाँ ठहरना कठिन हो जायगा। मैं सदा डरता रहता हूं कि कहीं बङ्गालिनोंके छोड़े पुष्पवाण फटे तम्बूको छेद कर मेरे कलेजेको न पार कर जायं। अगर ऐसा हुआ तो फिर मैं किसी कामका न रहूंगा। मैं वेचारा गरीब वनिये का बेटा दो पैसे पैदा करने यहाँ आया हूं, बेमौत मारा जाऊंगा। मेरी क्या दशा होगी! हाय मेरे मुंहमें कौन पानी देगा!

मैं यह नहीं कहता कि, सब बङ्गालिनें ही शिकारी बन्दूक हैं या सभी फूलवाण छोड़नेमें चतुर हैं। हां, कुछ अवश्य हैं यह मैंने सुना है। यह भी सुना है कि वह पतिकी प्रेरणा से ही ऐसा करती हैं। और पति अपने शास्त्रके अनुसार ही यह काम कराते हैं। हिन्दुओंके चार वेद हैं उनमें चाणक्य श्लोक नामक वेदमें लिखा है—

"आत्मानं सततं रक्षेत् दारैरपि धनैरपि।"

अर्थात् हे पद्मपलाशलोचन श्रीकृष्ण! मैं अपनी उन्नतिके लिये इन वन फूलोंकी माला तुम्हें देता हूं, तुम इसे गले में पहन लो। यह कहना भूल ही गया कि मैं इन वेदोंमें बड़ा व्युत्पन्न हो गया हूं।

ग्राम्यकथा

(१)

पाठशालाके पण्डितजी.

रिमझिम रिमझिम बून्दें पड़ रही हैं। मैं छाता लगाये देहाती सड़कसे जा रहा हूं। बून्दें जरा जोरसे पड़ने लगीं, मैं एक चौपालके छप्परमें जा छिपा। देखा, भीतर कुछ लड़के हाथमें पुस्तक लिये पढ़ रहे हैं। पण्डितजी पढ़ा रहे हैं, कान लगा कर पढ़ाना जरा सुना। देखा, व्याकरण पर पण्डितजीका बड़ा अनुराग है। इसका प्रमाण लीजिये, पण्डितजीने एक छात्रसे पूछा—"भू धातुके परे क्त प्रत्यय लगानेसे क्या होता है?"

छात्रका नाम भोंदू था। उसने सोच समझकर कहा—"भू धातुके परे क्त प्रत्यय लगानेसे भुक्त होता है।"

पण्डितजीने बिगड़कर कहा—"मूर्ख गदहा कहींका।"

भोंदू भी गरम होकर बोला—"क्या भुक्त शब्द नहीं है?"

पण्डितजी—है क्यों नहीं, पर भुक्त कैसे बनता है यह क्या तू नहीं जानता है?

भोंदू—क्यों नहीं जानता हूं? अच्छी तरह खाने से ही भुक्त होता है।

पण्डित—उल्लू कहीं का, क्या मैं यही पूछता हूं?

भोंदूसे नाराज होकर पण्डिजीने बगलमें बैठे हुए दूसरे लड़केसे पूछा—"रामा तू तो बता भुक्त शब्द कैसे बनता है?"

रामा—जी, भुज् धातुके परे क्त लगाने से।

पण्डितजी भोंदूसे बोले—"सुन लिया, तू कुछ नहीं होने जानेका।"

भोंदूने नाराज होकर कहा—"न होऊंगा न सही–आप तो पक्षपात करते हैं।"

पं०—गधे, मैं क्या पक्षपात करता हूं (चपत मारकर) अब तो बता भू धातुके परे क्त लगाने से क्या होता है?

भोंदू—(आंखें डबडबाकर) मैं नहीं जानता हूं।

पं:—नहीं जानता है, भूत कैसे होता है यह नहीं जानता है?

भोंदू—हां, यह तो जानता हूं, मरनेसे भूत होता है।

पं०—उल्लू कहीं का, भू धातुके परे क्त लगाने से भूत होता है।

भोंदूने अब समझा, उसने मन ही मन सोचा कि, मरने से जो होता है भू धातुमें क्त लगाने से भी वही होता है। उसने विनीत-भावसे पूछा—"पण्डितजी, भू धातुके परे क्त लगाने से क्या श्राद्ध भी करना पड़ता हैं?"

पण्डितजी और जब्त न कर सके, तड़से एक तमाचा उसके गाल पर जड़ दिया। भोंदू किताबें फेंक रोता-धोता घर चला गया। उस समय बून्दें कम होगई थीं, मैं भी तमाशा देखने के लिये उसके साथ चला। भोंदूका घर पाठशालासे दूर न था, घर पहुंचकर भोंदूने रोनेका सुर दूना कर दिया। और पछाड़ खाकर गिर पड़ा। भोंदूकी मा यह देख उसके पास आयी और समझाने लगी। पूछा—"क्यों क्या हुआ बेटा?"

बेटेने मुंह बनाकर कहा—"हरामजादी, पूछती है क्या हुआ बेटा, ऐसी पाठशालामें मुझे क्यों भेजा था।"

मा—हुआ क्या बच्चा बता तो सही ?

बेटा—अब रांड पूछती है, क्या हुआ बच्चा ! जल्दी तू भू धातु के परे क्त हो। जल्दी हो, मैं तेरा श्राद्ध करूं ।

मा—क्या बेटा ! क्या बात है ?

बेटा—जल्दी तू भू धातु के परे क्त हो।

मा—क्या मरनेको कहते हैं ?

बेटा—और नहीं तो क्या ? मैं यही न बता सका इसपर गुरुजी ने मुझे मारा है ।

मा—डाढ़ी जार गुरुको अकल नहीं है, मेरे इस नन्हें से बच्चे को और कितनी विद्या होगी ? जो बात कोई नहीं जानता है वह न बता सकने पर बच्चेको मारता है, आज उसे मैं देखूंगी !

यह कह कमर कसकर भोंदूकी मा पण्डितजीके दर्शनोंको चली। मैं भी पीछे पीछे चला, भोंदूकी माँ को बहुत दूर जानेका कष्ट न उठाना पड़ा। पाठशाला बन्द होने पर पण्डितजी घर जा रहे थे, रास्ते में ही मुठभेड़ हो गई। भोंदू की माँ बोली—"हां पण्डितजी, जो बात कोई नहीं जानता है वह बताने के लिये तुमने मेरे लड़के को इस तरह पीट दिया।"

पण्डित—अरे, ऐसी कठिन बात मैंने नहीं पूछी थी। केवल यही पूछा था कि भूत कैसे होता है ?

भों॰ मां—गंगा न मिलने से ही भूत होता है, भला यह सब बातें लड़के कहां से बता सकेंगे। यह सब मुझसे पूछो।

पण्डित—अरे वह भूत नहीं।

भों॰ मां—वह भूत नहीं तब कौन भूत ?

पण्डित—वह भूत तुम नहीं जानती हो, भूत एक शब्द है।

भों० मां—भूतका शब्द मैंने कितनी ही वार सुना है। भला, लड़कोंको कोई ऐसी बातोंसे डराता है।

मैंने देखा कि, पण्डितोंका झगड़ा मिटनेवाला नहीं है। मजा देखनेके लिये मैंने आगे बढ़कर कहा—"महाराज, स्त्रियोंके साथ क्या शास्त्रार्थ करते हैं, आइये मेरे साथ कीजिये।" पण्डितजी मुझे ब्राह्मण जानकर आदर सहित बोले—"अच्छा आप प्रश्न करें।"

मैं बोला—"आप भूत-भूत कह रहे हैं कहिये कै भूत हैं?"

पण्डितजी प्रसन्न होकर बोले—"भोंदूकी मां देखती है, पण्डित पण्डितोंकी तरहही बोलते हैं।" फिर मेरी ओर मुंह बनाकर बोले—"भूत पांच हैं?"

इतना सुन भोंदूकी मां कड़क कर बोली—"क्योंरे पण्डित, इसी विद्याके भरोसे मेरे लालको मारता है? भूत पांच हैं या बारह?"

पण्डित—पागल कहीं की, पूछ तो किसी पण्डित से भूत पांच हैं या बारह?

भों० मां—बारह भूत नहीं हैं तो मेरा सरबस कौन खागया। मैं क्या ऐसी ही दुःखी थी?

वह रोने लगी! मैं उसका पक्ष लेकर बोला—"वह जो कहती है यह ठीक होसकता है, क्योंकि मनुजी कहते हैं:—

"कृपणानां धनञ्चैव पोष्य कुष्माण्डपालिनां।
भूतानां पितृश्राद्धेषु भवेन्नष्टं न संशयः॥"

अर्थात् जो कृपणोंकी तरह धन और पोष्यपुत्रस्वरूप कुम्हड़े रखते हैं उनका धन भूतोंके बापके श्राद्धमें नष्ट होता है।

पण्डितजी जरा सीधे आदमी थे, वह मेरी व्यंगबाजी न समझ सके। उन्होंने देखा कि यहां कुछ न बोलने से भोंदूकी मां के आगे

हारना पड़ेगा। चट उन्होंने कहा कि इसमें क्या सन्देह है। वेदोंमें भी तो लिखा है—

"अस्ति गोदावरीतीरे विशालः शाल्मलीतरुः।"

इतना सुनकर भोंदू की मां बड़ी खुश हुई, वह पण्डितजी की बड़ी बड़ाई कर बोली—"पण्डितजी तुम्हारे पेटमें इतनी विद्या है तो फिर मेरे बेटेको क्यों मारते हो?"

पण्डित—अरी पगली इसीलिये तो मारता हूं जिससे वह भी मेरी तरह पण्डित होजाय। बिना मारे क्या विद्या आती है?

भों० मां—पण्डितजी, मारनेसे ही विद्या आती तो भोंदूके बापको क्यों न आई। मैंने तो उन्हें झाडू तकसे पीटनेमें कसर न की, पर कुछ न हुआ।

पण्डित—अरी तेरे हाथ से थोड़े ही कुछ होगा, होगा तो मेरे हाथ से।

भों० मां—मेरे हाथोंने क्या बिगाड़ा है? क्या उनमें जोर नहीं है। देखो भला,—यह कहकर भोंदूकी मांने कुछ कमचियाँ उठालीं। पण्डितजी अधिक लाभकी सम्भावना देख नौ दो ग्यारह हुए। उसी दिनसे पण्डितजीने भोंदूको फिर नहीं मारा और न भू धातुका झगड़ा उठाया। भोंदू कहा करता है कि मांने एकही झाडूमें पण्डितजीका भूत भगा दिया।
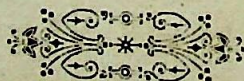
ग्राम्यकथा.

(२)

धर्मशिक्षा.

"Theory" सिद्धान्त.

"पढ़ो बेटा, मातृवत् परदारेषु ।"

बेटा—बाबूजी, इसका क्या अर्थ हुआ ?

बाप—इसका अर्थ यही है कि जितनी पराई स्त्रियां हैं सबको अपनी माता समझनी चाहिये ।

बेटा—तो सब स्त्रियां ही मेरी मां हैं ।

बाप—हां बेटा, सब तेरी मां हैं ।

बेटा—तो आपको बड़ी तकलीफ होगी ।

बाप—क्यों ?

बेटा—मेरी मां होनेसे तो वह सब आपकी कौन हुईं बाबूजी ।

बाप—चल, ऐसी बात मत निकाल । पढ़, "मातृवत् परदारेषु पर द्रव्येषु लोष्ठवत् ।"

बेटा—इसके माने बताइये ।

बाप—परायी चीज को लोष्ठ समझना ।

बेटा—लोष्ठ क्या ?

बाप—मिट्टी का ढेला ।

बेटा—तब तो हलवाई को पेड़े का दाम न देना चाहिये क्योंकि मिट्टी के ढेले का दाम ही क्या है ।

बाप—यह बात नहीं है । परायी चीज को मिट्टीकी तरह समझो जिसमें लेने की इच्छा न हो ।

बेटा—कुम्हार का पेशा सीखने से क्या काम न चलेगा ?

बाप—तुझे कुछ न आवेगा ले पढ़। "मातृवत् परदारेषु पर द्रव्येषु लोष्ठवत्। आत्मवत् सर्व्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः।"

बेटा—आत्मवत् सर्व्वभूतेषु यह क्या बाबूजी ?

बाप—अपने ऐसा सबको देखो।

बेटा—तो बस काम बनगया, यदि दूसरों को अपने ऐसा समझूं तो दूसरों की चीज अपनी ही समझना होगा, और दूसरों की स्त्री को भी अपनी स्त्री समझना होगा।

बाप—चल दूर हो, पाजी बदमाश (इति थप्पड़)

अभ्यास.

(१)

किशोरी नाम की एक प्रौढ़ा गगरी लिये जल भरने जारही है। इसी समय अधीत शास्त्र वह बालक उसके सामने आ खड़ा हुआ।

बालक—मां।

किशोरी—क्यों बेटा, अहा ! इसकी बोली कैसी मीठी है। सुनकर छाती ठण्ढी होगई।

बालक—मिठाई खाने को एक पैसा दे माँ।

किशोरी—मैं आप गरीबिन हूँ, पैसा कहाँ से लाऊं बेटा।

बालक—न देगी चुड़ैल।

किशोरी—आग लगे तेरे मुंहमें ! दाढ़ीजार किसका जाया है ?

बालक—न देगी तो ले (मारता है और गगरी फोड़ता है)

[बालक का बाप आता है]

(२)

वाप—यह क्या ! पाजी !

बेटा—क्यों वावूजी ! यह तो मेरी मां है न ! जैसे मा के साथ करता हूं, वैसे इसके साथ भी किया। "मातृवत् परदारेषु" क्योंरी तूने वावूजी को देखकर घूंघट भी नहीं काढ़ा।

हलवाई ने बेटे के वाप के पास आकर नालिश की कि, तुम्हारे लड़के के मारे दूकान खोलना कठिन है क्योंकि वह जो कुछ मिठाई पाता है उठा लाता है। दूधवाले ने भी दही दूधके वारे में आकर यही वात कही।

वापने बेटे को पकड़ पीटना शुरू किया।

बेटा वोला—वावूजी क्यों मारते हैं ?

वाप—तू दूसरों की चीजें क्यों उठा लाता है।

बेटा—वावूजी आजकल चोरों का डर है, इसलिये यह ढेले जमा करता हूं क्योंकि पराये का माल ढेले के वरावर है।

(३)

सरस्वती पूजा का दिन है, वापने सवेरे बेटे से कहा—जा गङ्गाजी में गोता लगा आ और सरस्वतीजी की पूजा कर, नहीं तो खाने को न मिलेगा।

बेटा—खा पीकर पूजा नहीं होती ?

वाप—नहीं पागल, खा पीकर कहीं पूजा होती है।

बेटा—इसवार पूजा न कर अगले साल दोवार कर दूंगा। अवके वड़ा जाड़ा है।

वाप—ऐसा नहीं होता है। सरस्वती पूजाके विना विद्या नहीं आती।

बेटा—तो क्या एक साल विद्या उधार न मिलेगी।

बाप—चल मूर्ख। जा नहा आ। पूजा करनेसे मैं दो रसगुल्ले दूंगा।

"अच्छा" कह कर बालक नाचता कूदता नहाने चला गया। मगर जाड़ा बड़ा था। ठण्ढी ठण्ढी हवा चल रही थी। जल भी वर्फ की तरह ठण्ढा हो रहा था। मल्लाहका पांच सालका एक लड़का वहां खड़ा था। बालकने सोच समझ कर उस बच्चेको दो तीन गोते लगवाये। फिर उसे खैंच कर बापके पास ले गया। बोला—बाबूजी, नहा आया।

बाप—कहां नहाया ?

बेटा—बाबूजी, "आत्मवत् सर्व्वभूतेषु" के अनुसार मुझमें और उसमें क्या अन्तर है ? उसके नहानेसे मेरा नहाना हो गया, लाओ मेरी मिठाई, बाप यह सुन बेंत ले उसके पीछे दौड़ा। बेटा यह बोलता हुआ भाग चला कि "बाबूजी शास्त्रवास्त्र कुछ नहीं जानते हैं।"

थोड़ी देरके बाद बापने सुना कि बेटेने विद्यालयके पण्डितजीको खूब ठोंका है। घर आनेपर बापने बेटेसे पूछा"—अबके यह क्या कर आया ?"

बेटा—क्या करता बाबूजी ! तुम तो छोड़ते नहीं, बेंत मारते ही। इस लिये मैंने खुद ही मार खा ली।

बाप—अरे नालायक तूने मार खाली या पंडितजीको मार आया ?

बेटा—पंडितजी और मुझमें क्या भेद है। उन्होंने मार खायी मानों मैंने खायी क्योंकि आत्मवत् सर्व्वभूतेषु।

पिताने प्रतिज्ञा की कि अब इस लड़केको न पढ़ाऊंगा।

रामायणकी समालोचना

(एक विलायती समालोचक कृत)

मैं रामायण आद्यन्त पढ़कर बड़ा ही विस्मित होगया हूं। अनेक स्थानोंकी रचना प्रायः यूरपके निम्न श्रेणीके कवियोंकी सी हो गयी है। हिन्दू कवियोंके लिये यह साधारण गौरवकी बात नहीं है। रामायणका रचयिता यदि और कुछ दिन अभ्यास करता तो अच्छा कवि हो जाता इसमें सन्देह नहीं।

रामायणका स्थूल तात्पर्य्य बन्दरोंकी महिमा वर्णन है। बन्दर आधुनिक बोएरवाल—Boerwal नामक हिमाचल प्रदेश वासी अनार्य्य जातिके शायद पुरखे थे। अनार्य्य बन्दरोंका लङ्का जीतना और राक्षसोंको सपरिवार मारना इसका वर्णनीय विषय है। उस समय आर्य्य असभ्य और अनार्य्य सभ्य थे।

रामायणमें नीति युक्त कुछ कथाएं भी हैं। बुद्धिहीनता कितना बड़ा दोष है यह दिखानेकी कविने चेष्टा की है। एक मूर्ख बृद्ध राजाके चार रानियां थीं। उसे बहुविवाहका विषैला फल सहज ही प्राप्त हुआ। बुद्धिमती कैकेयीने अपने पुत्रकी उन्नतिके लिये असभ्य बूढ़े राजाको बहका सौतके जाये बड़े पुत्रको छलसे बन भेज दिया। उस पुत्रने भारतवासियोंके स्वभावसिद्ध आलस्यके वशीभूत हो अपने स्वत्वाधिकारकी रक्षा न की। बूढ़े बापका वचन मान जङ्गल चला गया। इससे महातेजस्वी मुगलवंशी औरंगजेबकी तुलना करो तो

समझमें आजायगा कि मुसलमानोंने हिन्दुओं पर इतने दिनों तक कैसे राज्य किया। राम वन जानेके समय अपनी युवती भार्य्याको साथ ले गया था। इससे जो होना था वही हुआ।

भारतवर्षकी स्त्रियां स्वभावसे ही असती होती हैं; सीताका व्यवहार ही इसका उत्तम प्रमाण है। सीताने घरसे निकलते ही रामका साथ छोड़ दिया। रावणके संग लङ्का जा सुख भोगने लगी। मूर्ख राम रोता पीटता इधर उधर भटकने लगा। इसीसे हिन्दू स्त्रियोंको घरसे बाहर नहीं निकालते हैं।

हिन्दू स्वभावकी जघन्यताका दूसरा उदाहरण लक्ष्मण है। लक्ष्मणका चरित्र जैसा चित्रित हुआ है उससे वह कर्म्मवीर मालूम होता है। यदि वह किसी दूसरी जातिका होता तो बड़ा आदमी होजाता पर उसका ध्यान एक दिनके लिये भी उधर नहीं गया। वह रामके पीछे पीछे केवल घूमा और अपनी उन्नतिके लिये कुछ प्रयत्न न किया। यह केवल भारतवासियोंकी स्वभावसिद्ध निश्चेष्टताका फल है।

भरत भी बड़ा असभ्य और मूर्ख था। हाथ आया हुआ राज्य उसने भाईको लौटा दिया। रामायण निकम्मे लोगोंके इतिहाससे ही पूर्ण है। ग्रन्थकारका यह भी एक उद्देश्य है। राम अपनी पत्नीको खो कर बड़ा दुःखी हुआ। अनार्य्य (बन्दर) जातिने तर्स खाकर रावणको सवंश मारा और सीताको छीन रामको दिया। पर बर्व्वर जातिकी नृशंसता कहां जा सकती है? राम सीतासे नाराज हो उसे जला डालनेके लिये तैयार हो गया। पर दैवयोगसे उस दिन वह बच गयी। स्वदेश आनेपर चार दिन सुखसे रही पर पीछे औरोंके कहनेसे क्रोधमें आ रामने सीताको घरसे निकाल बाहर किया। बर्व्वरोंका ऐसा क्रोध स्वभावसिद्ध है। सीता भूखों मर कई सालके

बाद रामके द्वारपर आ खड़ी हुई। रामने उसे देखते ही क्रोधमें आ जीते जी मिट्टीमें गाड़ दिया। असभ्य जातियोंमें ऐसा होता ही है। रामायणका बस यही सारांश है।

इसका रचयिता कौन है यह सहज ही नहीं कहा जा सकता। लोग कहते हैं कि वाल्मीकिने इसे बनाया है। वाल्मीकि नामका कभी कोई ग्रन्थकार था या नहीं, इसका अभी निश्चय नहीं। बल्मीकसे वाल्मीकि शब्द की उत्पत्ति देखी जाती है। इससे मैं समझता हूं कि कहीं किसी बल्मीकमें यह ग्रन्थ मिला है। इससे क्या सिद्धान्त निकलता है यह देखना चाहिये।

रामायण नामकी एक हिन्दी पुस्तक मैंने देखी है। यह तुलसी-दास की बनायी है। दोनोंकी बहुतसी बातें मिलती जुलती हैं। इससे वाल्मीकि रामायणका तुलसीकृत रामायणसे संगृहीत होना असम्भव नहीं है। वाल्मीकिने तुलसीदासकी नकल की या तुलसीने वाल्मी-किकी यह निश्चय करना सहज नहीं है, यह मैं मानता हूं। पर रामायण नाम ही इसका एक प्रमाण है। रामायण शब्दका संस्कृतमें कोई अर्थ नहीं होता है। हां, हिन्दीमें होता है। रामायण शायद "रामा यवन" शब्दका अपभ्रंश मात्र है। केवल 'व'कार लोप हो गया है "रामा यवन" या रामा मुसलमान नामक किसी व्यक्तिके चरित्रके आधार पर तुलसीदासने पहले रामायण लिखी होगी। पीछे किसीने संस्कृतमें उसका उल्था कर बल्मीकमें छिपा रखा होगा। इसके बाद यह बल्मीकमें मिला इससे इसका नाम वाल्मीकि हो गया।

रामायणकी मैंने कुछ प्रशंसा की है पर अधिक नहीं कर सकता। इसमें कई बड़े बड़े दोष हैं। आदिसे अन्त तक अश्लीलता भरी है।

सीताका विवाह, रावणका सीताहरण आदि अश्लीलताके सिवा और क्या है? रामायणमें करुणारस नाममात्रको है। बन्दरोंका समुद्र बांधना बस यही उसमें करुणारसका विषय है। लक्ष्मणके भोजनमें वीररसकी तनिक गन्ध है। वशिष्ठादि ऋषियोंमें हास्यरसका जरा लेश है। ऋषि बड़े हास्यप्रिय थे। धर्म्म पर प्रायः हास परिहास किया करते थे।

रामायणकी भाषा प्राञ्जल और विशद होनेपर भी अत्यन्त अशुद्ध कही जायगी। रामायणके एक काण्डमें योद्धाओंका कुछ भी वर्णन न रहने पर भी उसका नाम 'अयोध्या काण्ड' है। ग्रन्थकारने 'अयोद्धाओं काण्ड' न लिखा कर "अयोध्या काण्ड" लिख दिया है। प्राचीन संस्कृत ग्रन्थोंमें ऐसी अशुद्ध संस्कृत प्रायः देखी जाती है। यूरपके आधुनिक विद्वान् ही विशुद्ध संस्कृतके अधिकारी हैं।

सिंहावलोकन।

समाचार पत्रोंकी रीति है कि, नये वर्षमें पैर रखनेपर वह गये वर्ष की घटनावली का सिंहावलोकन करते हैं। मासिक-पत्रिकाएं इससे बरी हैं। पर क्या उन्हें इसका शौक नहीं है? बहुतसे लोग राजा न होकर भी जैसे राजसी-ठाठसे रहते हैं, हिन्दुस्थानी काले होकर भी साहब बननेके लिये जैसे कोट पेंट डाटते हैं वैसेही यह छोटी-मोटी पत्रिका भी दोर्दण्ड प्रचण्डप्रतापशाली समाचार-पत्र का अधिकार ग्रहण करनेकी इच्छा करती है। अच्छा तो गतवर्षजी महाराज! आप सावधान होजायं। हम आपका सिंहावलोकन करते हैं।

गये वर्ष राजकाज का निर्वाह कैसे हुआ इसकी बहुत खोज-ढूंढ़ करने पर मालूम हुआ कि, सालभर में पूरे तीन सौ पैंसठ दिन हुए। एक दिनकी भी कमी नहीं हुई, हरएक दिनमें चौबीस घण्टे और हर घण्टे में साठ मिनट थे। इसमें कुछ भी हेरफेर नहीं हुआ, राजकर्मचारियोंने भी इसमें किसी प्रकारका हस्तक्षेप नहीं किया। इससे उनकी विज्ञताही प्रकट होती है, बहुतों की राय है कि सालमें कुछ दिन घटा दिये जायं, पर हम इसका अनुमोदन नहीं करते क्योंकि इससे पबलिक का कुछ लाभ नहीं। हां, लाभ होगा नौकरी पेशावालोंका, जिन्हें पूरा वेतन मिलेगा, और लाभ होगा सम्पादकों का जिन्हें कम लेख लिखने पड़ेंगे। मासिक-पत्रिकाओं को क्या लाभ होगा? उनसे तो बारह महीनेके बारह अङ्क लोग ले ही लेंगे, इसलिये मेरी राय है कि यह सब कुछ न कर गर्मीका मौसम ही उठा देना चाहिये। मैं अधिकारियोंसे

अनुरोध करता हूं कि, वह एक ऐसा कानून बनादें जिससे बारहों महीने जाड़ा ही रहे।

सुननेमें आया है कि, इस वर्ष सबकी एक-एक वर्षकी आयु चोरी हो गई है। यह दुःखका विषय है, पर इसका हमें विश्वास नहीं होता है। यह प्रत्यक्ष देखनेमें आता है कि, जिनकी उम्र ७० की थी उनकी ७१ की होगई। अगर आयु चोरी गई तो यह उम्र बढ़ी कैसे ? मालूम होता है निन्दकोंने यह झूंठी गप उड़ायी है।

यह वर्ष अच्छा था इसका प्रमाण यही है कि, इस साल बहुतों के सन्तानें हुई हैं। रिस्टिमेस्टल डिपार्टमेण्ट के सुदक्ष कर्मचारियोंने विशेष अनुसन्धान करके जाना है कि किसीके पुत्र हुआ है किसीके पुत्री हुई है और किसीका गर्भ गिरा है। दुःख की बात है कि अबके कई मनुष्य रोगसे मरे हैं। सुनने में आया है कि कोई महामण्डल नामकी सभा पार्लिमेण्टसे प्रार्थना करने वाली है कि पुण्यभूमि भारतके मनुष्योंकी मृत्यु जिसमें न हुआ करे! मण्डलका प्रस्ताव है कि यदि किसीको मरना बहुत ही जरूरी हो तो पुलिस से हुक्म लेकर मरे।

इस साल अर्थ-विभाग की लीला बड़ी विचित्र हुई, सुना है कि सरकार को आमदनी भी हुई और खर्च भी। यह उतने आश्चर्य्य की बात चाहे न हो पर यह तो महा आश्चर्य्य की बात है कि सरकार को इस आय-व्यय से कुछ जमा हुआ हो या कुछ खर्च हुआ हो या जमा: खर्च बराबर हो गया हो। अगले साल टैक्स लगेगा या नहीं यह अभी नहीं कहा जा सकता। पर आशा है अगला साल खतम होजाने पर ठीक बता सकेंगे।

इस साल विचारालयोंकी सब बातोंकी बड़ाई न कर सकूंगा,

क्योंकि जिन्होंने नालिश की उनका विचार हुआ या होने का प्रवन्ध हुआ पर जिन्होंने नालिश नहीं की उनका कुछ भी विचार नहीं हुआ। इसका कारण कुछ समझ में न आया, भला जहां साधारण विचारालय है वहां कोई नालिश करे या न करे विचार होना ही चाहिये। कोई धूप चाहे या न चाहे सूर्य्य सर्वत्र धूप करते हैं। कोई पानी चाहे या न चाहे बादल सब खेतोंमें बरसते हैं, इसी तरह कोई चाहे या न चाहे विचारकों को घर-घर घुसकर विचार कर आना चाहिये। यदि कोई कहे कि, विचारक इस तरह घरमें घुस-घुसकर विचार करेंगे तो गृहस्थोंकी मार्जनी अकस्मात् विघ्न डाल सकती है। इसका जवाब यह है कि सरकारी कर्म्मचारी मार्जनीसे उतना नहीं डरते हैं। छोटे-छोटे हाकिमों की झाड़ुओंसे अच्छी जान पहचान है। और अकसर दोनोंकी मुठभेड़ हो जाती है, जैसे मोर सबको प्रिय है वैसे इन्हें भी झाड़ू प्रिय है। देखते ही खा लेते हैं। सुननेमें आया है कि किसी छोटे-मोटे हाकिमने गवर्नमेण्टसे प्रस्ताव किया है कि, बड़े-बड़े हुक्कामोंको "आर्डर आफ दि स्टार आफ इन्डिया" का खिताब जैसे मिलता है, वैसे छोटे-छोटे हाकिमों को "आर्डर आफ दि ब्रूम स्टिक" यानी झाड़ूदासका खिताब मिलना चाहिये। और चुने हुए गुणवान् डिपटी और सदरआलाओंके गलेमें यह महारत्न लटका देना चाहिये। कोट, पेंट, घड़ी-छड़ीसे विभूषित सदा कम्पमान् वक्षस्थल पर यह अपूर्व शोभा धारण करेगा। यह झाड़ू अगर सरकारसे खिताबके बतौर मिलेगी तो मैं कसम खाकर कह सकता हूं कि लोग बड़ी खुशीसे इसे माथे चढ़ावेंगे। फिर इतने उम्मीदवार खड़े होजायंगे कि मुझे भय है कि कहीं झाड़ुओंका टोटा न होजाय।

गतवर्ष अच्छी वर्षा हुई थी, पर सर्वत्र समान नहीं हुई। यह

निश्चय ही बादलोंका पक्षपात है, जहां वर्षा नहीं हुई वहांवालोंने सरकारके पास प्रार्थनापत्र भेजा है कि, सब जगह एकसी वृष्टि हो इसका कुछ उपाय निकालना चाहिये। मेरी समझसे इस कामके लिये एक समिति बना दी जाय, वही उपाय ढूंढेगी। कुछ लोगों का कहना है कि सरकार मेघोंको कुछ भत्ता दिया करे तो उन्हें कहीं जानेमें उज्र न होगा। पर मैं समझता हूं कि इससे कुछ लाभ न होगा क्योंकि बङ्गाल के बादल बड़े सौदामिनी प्रिय हैं। वह सौदामिनियोंको छोड़ रुपये के वास्ते कभी विदेश जाना मंजूर न करेंगे। मेरी समझसे बादलोंको बिदा कर सिक्कोंका बन्दोबस्त करना चाहिये। हर खेतमें एक-एक चपरासी या सुयोग्य डिपटी लम्बे बांसमें एक-एक भिश्ती बांध ऊपर उठाये रहें। भिश्ती वहांसे खेतमें जल छोड़कर बन पड़े तो नीचे उतर आवे, क्या यह उपाय अच्छा नहीं है?

हमारे देशकी स्त्रियां देशहितैषिणी नहीं हैं, यदि होतीं तो भिश्तियोंकी क्यों जरूरत पड़ती? यही खेतों में जाकर रो आतीं, बस, आंसुओं से खेत सिंच जाते और बादल भी बरतरफ कर दिये जाते। हां, लोगोंके शारीरिक और मानसिक मङ्गलार्थ यह कह देता हूं कि, आकाश की वृष्टि के बदले नारी नयनों की अश्रुवृष्टिका आयोजन हो तो पुलिसका खासा बन्दोबस्त कर रखना चाहिये। बादलकी बिजली से अधिक लोग नहीं मरते हैं पर रमणी-नयन मेघ के कटाक्ष विद्युत्से खेतों में किसानों के बालकों की क्या दशा होगी नहीं कहा जा सकता, इससे पुलिसका रहना ही अच्छा है।

सुनने में आया है कि शिक्षा-विभाग में बड़ा गड़बड़ाध्याय होगया है। सुनते हैं कि कई विद्यालयोंके छात्रोंने कान नापनेका एक एक गज तैयार किया है; उनके मनमें सन्देह उठ खड़ा हुआ है। वह कहते

हैं कि हम मास्टरों के कान नापेंगे, नहीं तो उनसे नहीं पढ़ेंगे। कान से गज छोटा होगा ऐसी सम्भावना कहीं नहीं है।

साल अच्छा रहा चाहे बुरा, पर तीन गूढ़ बातें हमने जान ली हैं इसमें जरा भी सन्देह नहीं है।

पहली—साल बीत गया इसमें मतभेद नहीं है।

दूसरी—साल बीत गया अब वह लौटने का नहीं, लौटानेका कोई उपाय न करे क्योंकि कुछ फल न होगा।

तीसरी—लौटे या न लौटे हमारे तुम्हारे लिये एकसी बात है। क्योंकि हमारे लिये गये साल भी दाना घास था और आगे साल भी रहेगा। खैर, आपका मङ्गल हो दाने घासको याद रखना।
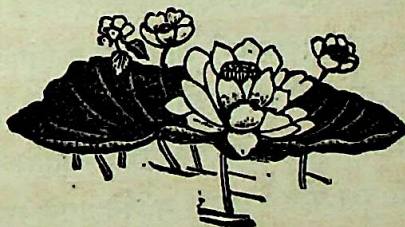
बन्दर बाबू संवाद.

एक बार प्रातःकालके सूर्य्य की किरणोंसे प्रकाशित कदलीकुञ्ज में श्रीमान् बन्दरजी हवा खा रहे थे। उनका परम सुन्दर लांगूल कुण्डलीकृत हो कभी पीठपर, कभी कन्धेपर और कभी वृक्षकी डालीपर शोभित हो रहा था। चारों ओर मर्त्तवान, चम्पा आदि बहुत तरह के कच्चे पक्के केले सुगन्ध फैला रहे थे। श्रीमान् भी कभी सूंघकर, कभी चूसकर कभी चाटकर और कभी चबाकर केलें का रसास्वादन कर मानसिक प्रशंसा कर रहे थे। इतनेमें दैवसंयोगसे कोट, बूट, पेंट, चेन, चश्मा, चुरुट, चाबुकधारी टोप्यावृत एक नवीन बाबू वहाँ आ पहुंचे। बन्दरचन्दने दूरसे इस अपूर्व्व मूर्त्ति को देखकर मनमें सोचा—"यह कौन है? रङ्गरूपसे तो निश्चय ही किष्किन्धापुरवासी प्रतीत होता है। ढङ्ग तो नकली है पर ऐसी चाल ढाल दूसरे देशमें होना असम्भव है। यह मेरा स्वदेशी भाई है। इसकी आवभगत करनी चाहिये।"

यह सोचकर बन्दरजी महाराजने चम्पा केलेकी पकी फलियां तोड़ कर सूंघी। उसकी मंहकसे परितृप्त होकर अतिथिका सत्कार करना विचारा। इतनेमें उस कोट पेंटधारी मूर्त्तिने उनके सम्मुख आ पूछा—

"Good morning Mr. Monkey! how do you do? So glad to see you! Ah! I see you are at breakfast already."

(बन्दर साहब सलाम! मिजाज़ मुबारक? आप से मिलकर मैं बहुत खुश हुआ। ओह हो! आप तो नाश्ता करने बैठ गये।)

वन्दरने कहा—"किमिदं ? किं वदसि ?

बाबू—What is that ? I suppose that is the kish-kindha patois ? It is a glorious country—is it not ? "There is a land of every land the pride and "so on, as you know ?"

वन्दर—कस्त्वं ? कस्माज्जनपदात् आगतोसि ?

वन्दर—(स्वगत) It seems most barbarous gibberish—that precious lingo of his; but I suppose I must put up with it (प्रगट) My dear Mr. Monkey, I am ashamed to confess that I am not quite familiar with your beautiful vernacular I dare say it is a very polished language. I presume you can talk a little English.

इतना सुनते ही महावीरजीने आंखें लालकर पूंछसे बाबू साहबके गलेको लपेट लिया।

बाबू साहब हक्के बक्के होगये, मुँहसे चुरुट गिर पड़ा। वह बोले—

"I say, this seems some what—"

दुम ज़रा और कस ली।

"Some what unmannerly to say the least—"

जरा और कसी।

"Dear Mr. Monkey—you will hurt me."

फिर कसा।

"Kind-good Mr. Monkey."

इतनेमें हनुमानजीने पूंछसे बाबूको ऊपर उठा लिया, बाबू की टोपी, चश्मा और चाबुक नीचे गिर पड़ी। घड़ी पाकेट से निकल

कर लटकने लगी। बाबूका मुंह सूख गया, वह चिल्लाने लगे—"महावीरजी, अपराध हुआ, क्षमा करो—बचाओ नहीं तो मरा!"

महावीरजीने कृपाकर उसे जमीनपर रख दिया और पूंछ खोल ली। बाबूने मौका पा चश्मा, चाबुक उठा ली। बन्दर बोला—"बाबू साहब, बुरा न मानना, आपकी बोली अङ्गरेजी, वेश बन्दरों की तरह और मूर्खता पहाड़ की सी। कुछ समझ न सका कि आप कौन हैं। लाचार आपकी जाति जाननेके लिये आपको इतना कष्ट दिया। अब मालूम हो गया—

बाबू—क्या मालूम होगया?

बन्दर—यही कि, आपका जन्म किसी बङ्गालिनके गर्भसे हुआ है। आप थक गये हैं, क्या केला भोजन कीजियेगा?

बाबू साहबका मुंह सूख गया था, इसलिये पका केला खाना उन्होंने मुनासिब जाना। बोले—"With the greatest pleasure."

बन्दर—आपका जिस देशमें जन्म है वहां केले और बैंगनकी खोजमें अकसर जाता हूं। वहांकी औरतें "बरा" नामका जो स्वादिष्ट पदार्थ तैयार करती हैं, वह भी आज्ञाके बिना ही रामदासको भोग लगाया करता हूं। इसलिये मैं भाषा अच्छी तरह समझता हूं, तुम मातृभाषा में ही मुझसे बातचीत करो।

बाबू—इसमें आश्चर्य्य ही क्या है? आप केला देना चाहते हैं? मैं बड़ी खुशीसे आपका केला भक्षण करूंगा।

यह सुनकर कपिराजने केले की कई फलियाँ बाबू की ओर फेंक दीं। उन देव दुर्लभ कदलीके भक्षणसे बाबू बड़े प्रसन्न हुए। कपिजी ने पूछा—"केले कैसे हैं?"

बाबू—बड़े मीठे—Delicious.

बन्दर—हे टोपधारी ! मातृभाषामें बोलो।

बाबू—भूल हुई—Excuse me.

बन्दर—इसका क्या अर्थ ?

बाबू—माफ कीजिये ! मैं बड़ा-क्या कहूं—अङ्गरेजी में तो—Forgetfut भाषा में क्या कहूं ?

बन्दर—बच्चा ! तुम्हारी बातसे मैं प्रसन्न हुआ हूं। तुम और भी केला खा सकते हो। जितना मन हो उतना खाओ मेरे लायक कोई काम हो तो वह भी कहो।

बाबू—धन्यवाद, हे कपिराज ! यदि आप एक बात मुझे कृपाकर बता दें तो बड़ा उपकार मानूंगा।

बन्दर—कौनसी बात ?

बाबू—वही बात जिसके लिये मैं आपके पास आया हूं, आपने राम राज्य देखा है। वैसा राज्य क्या कभी नहीं हुआ ? कुछ लोगोंकी राय है कि यह गप्प (Fable) है।

बन्दर—(आँखें लाल और दाँत निकाल कर) रामराज्य गप्प है, तब तो मैं भी गप्प हूं—मेरी पूंछ भी गप्प है, देख तेरी कैसी गप्प है।

इतना कह कपिराजने क्रोधकर अपनी लम्बी पूंछ बेचारे बाबू की गर्दन में लपेट दी, बाबूका मुंह सूख गया। वह बोला—"ठहरो महाराज, न तुम गप हो और न तुम्हारी पूंछ। यह मैं शपथ कर कह सकता हूं। लेहाजा तुम्हारा रामराज भी गप नहीं है। The proof of the pudding is in the eating thereof—बात यह है कि; तुम रामचन्द्रके दास हो और मैं अङ्गरेजोंका हूं। तुम्हारे राम बड़े

या मेरे अङ्गरेज बड़े हैं ? मेरे अङ्गरेज राज्यमें एक नई चीज हुई है वह क्या रामराज्य में थी ?

बन्दर—वह चीज कौनसी है ? क्या, पका केला ?

बाबू—नहीं, Local self Government.

बन्दर—यह क्या बला है ?

बाबू—स्थानीय आत्मशासन, क्या यह उस समय था ?

बन्दर—था नहीं तो क्या ? स्थानीय आत्मशासन स्थान विशेषका आत्मशासन है ? वह तो सदा से ही है। मेरा आत्मशासन था मेरी पूंछ में। पूंछमें आत्मशासन न करता तो त्रेतायुगके आधे आदमी समुद्र में डूब मरते। जब मेरी दुममें खुजलाहट होती यानी किसी की गर्दनमें दुम लपेटनेकी इच्छा होती तभी मैं पूंछ का आत्म-शासन करता—दोनों पैरों के बीचमें उसे छिपा लेता। यहाँतक कि जिसदिन रामचन्द्रजीने सीताजीको अग्निमें प्रवेश करने के लिये कहा था उसदिन मेरा यह स्थानीय आत्मशासन न होता तो यह दुम राम-चन्द्रजी की गर्दन में पहुंचती, पर स्थानीय आत्मशासन के कारण मैं दुम दबाकर रह गया। और भी सुनो। हम लोग जब लङ्का घेर कर बैठे थे तब आहाराभाव से हमारा आत्मशासन पेटमें निहित हो वहां का स्थानीय होगया था।

बाबू—यह आपके समझने की भूल है। वैसे आत्मशासन की बात मैं नहीं कहता हूं।

बन्दर—सुनो न, स्थानीय आत्मशासन बड़ा अच्छा है। स्त्रियोंका आत्मशासन जीभ में हो तो उत्तम स्थानीय आत्मशासन हुआ। ब्राह्मणोंका आत्मशासन पेड़े बरफी पर अच्छा होता है। तुम्हारा आत्मशासन

बाबू—कहाँ ? पीठ पर ?

बन्दर—नहीं, तुम्हारी पीठ दूसरे शासनका क्षेत्र है। किन्तु तुम्हारे आत्मशासनका उचित स्थान तुम्हारी आंखें हैं।

बाबू—कैसे ?

बन्दर—तुम रुलाई आनेपर भी नहीं रोते, यह अच्छा है। दिनरात कायँ-कायँ भायँ-भायँ करनेसे हुजूर लोग दिक हो जाते हैं।

बाबू—जो हो, मैं इस अर्थमें आत्मशासनकी बात नहीं कहता हूं।

बन्दर—तो किस अर्थ में कहते हो ?

बाबू—शासन किसे कहते हैं जानते हो ?

बन्दर—अवश्य, तुम्हें थप्पड़ लगाऊं तो तुम शासित हुए। इसी का नाम तो शासन है न ?

बाबू—यह नहीं, राजशासन क्या नहीं जानते ?

बन्दर—जानता हूं, किन्तु तुम खुद राजा हुए बिना आत्मशासन कैसे करोगे ?

बाबू—(स्वगत) इसीका नाम है बन्दर बुद्धि, (प्रगट) यदि राजा दया करके अपना काम हमें देदें तो ?

बन्दर—इसमें राजा का ही लाभ है। अपने सिर का बोझ दूसरे के सिरपर डाल मजेमें रानीके साथ सोए, और हम लोग मिहनत करके मरें। इसे ही तुम कहते हो रामराज्य ! हा राम !

बाबू—आपने अभी यह समझा ही नहीं। Freedom Liberty किसे कहते हैं आप जानते हैं ?

बन्दर—किष्किन्धाके स्कूलमें यह नहीं पढ़ाया जाता है।

बाबू—Freedom कहते हैं स्वाधीनता को, स्वाधीनता किसे कहते हैं यह तो जानते हैं ?

बन्दर—मैं वनका पशु हूं, मैं नहीं जानता तो क्या तुम जानते हो?

बाबू—अच्छा तो मनुष्य जितना स्वाधीन होगा उतना ही सुखी होगा।

बन्दर—अर्थात् मनुष्य में जितना पशुभाव होगा उतना ही वह सुखी होगा।

बाबू—महाशय! क्रोध मत कीजिये–यह वात ठीक वन्दरों की सी हुई।

बन्दर—मैं तो बन्दर हूं हो, बाबू की तरह कैसे बोलूं!

बाबू—स्वाधीनता विना मनुष्यजन्म, पशुजन्म, है पराधीन मनुष्य गाय बैलों की तरह बंधे रहकर मार खाते हैं। सौभाग्य से हमारे राजपुरुष जन्म से ही स्वाधीन Freeborn हैं।

बन्दर—हमारी तरह।

बाबू—उसी स्वाधीनताका लक्षण आत्मशासन है।

बन्दर—हम भी उसी लक्षणवाले हैं, हममें आत्मशासनके सिवा राजशासन नहीं है। हम पृथ्वीपर स्वाधीन जाति हैं, तुम क्या मेरी तरह हो सकते हो?

बाबू—बस रहने दो, मैं समझ गया बन्दरकी समझमें आत्मशासन नहीं आसकता।

बन्दर—बहुत ठीक, चलो दोनों मिलकर केले खायँ।

साहब और हाकिम

BRASONISM *

जौन डिकसन फौजदारी अदालतमें पकड़ कर लाये गये हैं। साहब रङ्गमें तो आवनूसके कुन्देको मात करते हैं, पर साहबका मुकद्दमा देखनेके लिये देहातकी कचहरीमें बहुतसे रंगीले लोग इकट्ठे हुए हैं। मुकद्दमा एक डिपटीके इजलासमें है, इससे साहब जरा खिन्न हैं पर मनमें भरोसा है कि बंगाली डिपटी डर कर छोड़ देगा। डिपटी बाबूके ढङ्गसे भी यही बात जाहिर होती है। वह बेचारा बड़ा बूढ़ा और सीधा सादा भलामानस है, किसी तरह सिमट कर वहां बैठा था, इधर चपरासियोंने भी डरते-डरते साहबको कठघरेमें ला खड़ा किया। साहबने जरा रंग बदल हाकिमकी ओर देख अकड़ कर कहा—"टुम हमको एहां किसवास्ते लाया ?"

हाकिमने कहा—"मैं क्या जानूं तुम क्यों लाये गये, तुमने क्या किया है ?"

साहब—जो किया, टोमारा साथ बाट नहीं मांगटा।

हाकिम—क्यों ?

साहब—टुम काला आदमी है।

हाकिम—फिर ?

---

* Ilbert बिलके सम्बन्धमें वाद विवाद होनेके समय लिखा गया था।

साहब—हम साहब है।

हाकिम—यह तो मैं देखता हूं इससे क्या मतलब ?

साहब—टुमको क्या बोलटा वह नेई है।

हाकिम—क्या नहीं है ?

साहब—वही जिसका जोर से मुकद्दमा करटा है। टुम नहीं जानटा क्या ?

हाकिम—मैं भला आदमी हूं, इससे कुछ नहीं कहता अब टुम टुम करोगे तो जुर्माना कर दूंगा।

साहब—टुम हमको जुर्माना नहीं करने सकटा। हम साहब है—टूमको क्या कहटा—वह नहीं है।

हाकिम—क्या नहीं है ?

साहब—ओ Yes जुस्टीकेशन।

साहब—अहा Jurisdiction कहो। हां, तो क्या तुम अहले विलायत हो ?

साहब—हम साहब है।

हा०—रंग इतना काला क्यों हैं ?

सा०—कोलका काम करटा था।

हा०—बापका नाम क्या है ?

सा०—बापका नामसे कोर्टको क्या काम ?

हा०—मालूम तो है न ?

सा०—हमारा बाप बड़ा आदमी था, नाम याड नहीं।

हा०—याद करो। खैर तुम्हारा नाम क्या हैं ?

सा०—मेरा नाम जान साहब—जानडिकसन।

हा०—बापका नाम भी क्या डिकसन था।

सा०—होने सकता है। लेकिन इतनेमें मुद्दईका मुखतार बोल उठा "हुजूर इसके बापका नाम गोवर्द्धन साहब है।"

साहब गर्म होकर बोले "गोवर्द्धन होनेसे क्या होगा—तेरे बापका नाम रामकान्त है। वह चावल बेचता था। मेरा बाप बड़ा आदमी था।"

हा०—तुम्हारा बाप क्या करता था।

सा०—बड़े आदमियोंका सादी कराता था।

हा०—क्या वह नाईका काम करता था।

मुखतार—हुजूर, नहीं—बाजा बजाता था।

लोग हंस पड़े। हाकिमने जुरिसडिकसनका उज्र नामंजूर किया। और मुकद्दमा सुनने लगे। फरियादीकी पुकार होनेपर चांदीके कड़े पहने कालीकलूटी एक औरत हाजिर हुई। उससे जो कुछ सवाल हुए और उनका उसने जो जवाब दिया वह नीचे दर्ज है।

प्रश्न—तुम्हारा नाम क्या है ?

उत्तर—जमुना मल्लाहिन।

प्र०—तुम क्या करती हो ?

उ०—मछली फंसा फंसा कर बेचती हूं।

असामी साहब बोला। "झूठा बात, सुटकी मछली बेचता है।"

मल्लाहिन—वह भी बेचती हूं। उसीसे तो तुम मरे हो।

प्र०—तुम्हारी नालिश क्या है ?

उ०—चोरी की।

प्र०—किसने चोरी की ?

उ०—(साहबकी ओर बताकर) इस बागदीके बेटेने।

सा०—हम साहब है बागदी नहीं।

प्र०—क्या चुराया है ?

उ०—यही तो कहा था सुटकी मछली।

प्र०—कैसे चोरी की ?

उ०—मैं डल्लेमें सुटकी मछली रख कर बेच रही थी, एक खरीदार से बात करने लगी इतनेमें साहबने आ कर एक मुट्ठी मछली उठाकर जेबमें रख ली।

प्र०—फिर तुम्हें मालूम कैसे हुआ ?

उ०—जेब फटी है यह साहबको मालूम नहीं था जेबमें डालते ही मछली जमीन पर आ गिरी।

यह सुन साहब गुस्से होकर बोले "नहीं बाबूसाहब! उसकी डलिया टूटी थी उसीसे मछली निकली थी।

मल्लाहिन बोली "उसकी जेबमें भी दो चार मछलियाँ मिली थीं।

साहबने कहा "वह तो दाम दूंगा कह कर लीं थी।" गवाहोंसे साबित हुआ कि डिकसन साहबने मछली चुरायी थी। हाकिमने तब जवाब लिखा, साहबने जवाबमें सिर्फ यही लिखाया कि काले आदमीका हमपर जुस्टीकेशन नहीं है। हाकिमने यह बात मंजूर न कर एक हफ्तेकी कैदका हुकम दिया। दो चार रोजके बाद यह खबर कलकत्तेके एक अंगरेजी अखबारके सम्पादकके कानों तक पहुंची। फिर क्या था दूसरे ही दिन नीचे लिखी टिप्पणी उसमें निकली—

"THE WISDOM OF A NATIVE MAGISTRATE.—A story of lamentable failure of justice and race antipathy has reached us from the Mofussil. John Dickson, an English gentleman of good birth though at present rather in straightened circumstances had fallen under the displeasure of a clique of designing natives headed by one Jamuna Mallahin, a person, as we are assured on

good authority, of great wealth, and considerable influence in native society. He was hauled up before a native Magistrate on a charge of some petty larceny which, if the trial had taken place before a European magistrate, would have been at once thrown out as preposterous, when preferred against a European of Mr. Dickson's position and character. But Baboo Jaladhar Gangooly, the ebony-coloured Daniel before whose awful tribunal, Mr. Dickson had the misfortune to be dragged, was incapable of understanding that petty larcenies, however congenial to sharp intellects of his own country, have never been known to be perpetrated by men born and bred on English soil, and the poor man was convicted on evidene the trumpery character of which, was probably as well known to the magistrate as to the prosecutors themselves. The poor man pleaded his birth, and his rights as a European British subject, to be tried by a magistrate of his own race, but the plea was negatived for reasons we neither know nor are able to conjecture. Possibly the Babu was under the impression that Lord Ripon's cruel and nefarious Government had already passed into Law the Bill which is to authorize every man with a dark skin lawully to murder and hang every man with a white one. May that day be distant yet! Meanwhile we leave our readers to conjecture from a study of the names *Jaladhar* and *Jamuna* whether the tie of kindred which obviously exists between prosecuter and magis-

trate has had no influence in producing this extraordinary decision."

यह टिप्पणी पढ़ कर जिला मजिस्ट्रेट साहबने जलधर बाबूको चपरासी भेजकर बुलवाया।

गरीब ब्राह्मण कांपता हुआ हुजूरमें हाजिर हुआ। वह पूरे तौरसे सलाम भी न कर पाया कि हुजूरने डपट कर पूछा—What do you mean, Babu, by convicting a European British subject (बाबू, युरोपिअन बृटिश प्रजाको क्यों दण्ड दिया ?)

डिपटी—What European British subject, Sir ?

(किस युरोपिअन बृटिश प्रजाको दण्ड दिया हुजूर।)

मजिस्ट्रेट—Read here, I suppose you can do that. I am going to report you to the Government for this piece of folly.

यह पढ़ लो। मैं समझता हूं तुम पढ़ सकते हो। तुम्हारी इस मूर्खताकी रिपोर्ट गवर्नमेंटके यहां करूंगा यह कह कर साहबने कागज बाबू की तरफ फेंक दिया। बाबूने उठाकर पढ़ लिया। साहबने कहा—Do you now understand? अब समझमें आया ?

डिपटी—हां साहब ! पर यह यूरोपिअन बृटिश प्रजा नहीं था।

साहब—यह तुमने कैसे जाना ?

डिपटी—वह बड़ा काला था।

साहब—क्या यह कानूनमें लिखा है कि युरोपिअन की पहचान सिर्फ गोरा रङ्ग ही है ?

डिपटी—नहीं हुजूर।

यह डिपटी पुराना घुराट था। वह जानता था कि दलीलमें

जीतनेसे आफत है। इसलिये उसने दलील छोड़ दी और जो नौकरों-को कहना उचित है वही कहा—मैं हुजूरसे बहस करने की गुस्ताखी नहीं कर सकता। इस भूलके लिये मैं बहुत अफसोस करता हूं।"

मजिस्ट्रेट साहब भी निरे उल्लूके पट्ठे न थे। वह जरा दिल्लगी-पसन्द भी थे। उन्होंने पूछा—किस बातके लिये बहुत अफसोस करते हो?

डिपटी—युरोपिअन ब्रिटिश प्रजाको सजा देनेके लिये।

मजि०—क्यों?

डिपटी—इसलिये कि हिन्दुस्थानियोंके लिये यह बड़ा भारी दोष है कि वह युरोपिअन ब्रिटिश प्रजाको सजा दें।

मजि—क्यों बड़ा भारी दोष है?

डिपटी बड़ा चालाक था। छूटते ही कहा—"इसलिये दोष है कि युरोपिअन ब्रिटिश प्रजा जुर्म नहीं कर सकती और देशी लोग ईमानदारीसे इनसाफ नहीं कर सकते।"

मजि०—क्या ऐसा तुम मानते हो?

डिपटी—नहीं माननेकी कोई वजह नहीं देखता। मैं तो अपनी लयाकत भर अपना फर्ज अदा करनेकी कोशिश करता हूं। लेकिन मैं देशी भाइयोंकी बात कहता हूं।

मजि०—तुम समझते हो कि देशी आदमियोंको युरोपिअनोंके मुकद्दमें न करने चाहियें।

डिपटी—जरूर ही उन्हें न करना चाहिये। अगर वह ऐसा करें तो यह गौरवशाली अङ्गरेजी राज्य मिट्टीमें मिल जायगा।

मजि—बाबू, मैं तुम्हारी समझदारी की बात सुनकर बड़ा खुश

हुआ। मैं चाहता हूं सब देशी आदमी ऐसे ही हों। कमसे कम देशी मजिस्ट्रेट तो तुमसे हों।

डिपटी—हुजूर भला ऐसा कब हो सकता है जब कि हमारे आला अफसर कुछ और ही सोचते हैं।

मजि—क्या तुम आला अफसरीके नजदीक नहीं पहुंचे? तुम तो बहुत रोजसे काम करते हो न?

डिप—बदनसीबीसे मेरी बराबर हकतलफी की गयी। मैं तो हजूरसे इस बारेमें अर्ज करने वाला था।

मजि—तुम तरक्कीके जरूर काबिल हो। मैं कमिश्नरको तुम्हारे लिये लिखूंगा। देखो क्या होता है! इतना सुन डिपटी बाबू लम्बा सलाम कर चल दिये और जन्ट साहब आ पहुंचे। डिपटीको बाहर जाते जन्टने देखा था। जन्टने मजिस्ट्रेटसे पूछा—"इससे तुम क्या कर रहे थे?

मजि०—ओह यह बड़ा मजेदार आदमी है।

जन्ट०—कैसे?

मजि०—यह बेवकूफ और कमीना दोनों है। यह अपने देशी भाइयोंकी शिकायत कर मुझे खुश करना चाहता था।

जन्ट०—क्या मनकी बात उससे कह दी?

मजि०—नहीं! मैंने तो तरक्कीका वादा किया है। इसके लिये कोशिश करुंगा। कमसे कम वह घमण्डी नहीं है! घमण्डी देशी आदमी मातहतीमें रखना बिलकुल फालतू है। मैं घमण्डियोंसे उन्हें पसन्द करता हूं जो अपनी लयाकतमें चूर नहीं रहते हैं।

इधर वापस आनेपर डिपटी बाबूकी एक दूसरे डिपटीसे भेंट हुई। उसने जलधरसे पूछा—"साहबके पास गये या नहीं?"

जल—हां बड़ी मुश्किलमें पड़ गये।

डिपटी—क्यों।

जल—उस बागदी सुसरेको कैद करनेके कारण साहब कहते थे मैं रिपोर्ट कर दूंगा।

डिपटी—फिर?

जल०—फिर क्या तरक्कीका तार जमा आया।

डिप०—यह कैसे? किस जादूसे?

जल०—और कैसे? ठकुर सुहाती करके।

नाटक के पात्र।

१—उच्च शिक्षा प्राप्त बाबू।

२—इनकी स्त्री।

बाबू—क्या करती हो ?

स्त्री—पढ़ती हूं।

बाबू—क्या पढ़ती हो ?

स्त्री—जो पढ़ना जानती हूं, मैं तुम्हारी अङ्गरेजी नहीं जानती और ओर न फारसी जानती हूं, भाग्यमें जो है वही पढ़ती हूं।

बाबू—यह वाहियात, खुराफात, खाक पत्थर भाषा क्यों पढ़ती हो ? इससे तो न पढ़ना ही अच्छा है।

स्त्री—क्यों ?

बाबू—यह Immoral, obscene, filthy. है।

स्त्री—इसका क्या मतलब हुआ ?

बाबू— Immoral किसे कहते हैं जानती हो अरे वही-वही जो morality के खिलाफ हो।

स्त्री—यह क्या किसी चौपाये का नाम है ?

बाबू—नहीं-नहीं, अरे इसे भाषामें क्या कहते हैं ? अरे वही-वही जो moral नहीं है और क्या ?

स्त्री—मराल क्या हंस ?

बाबू—Nonsense ! O woman ! thy name is stupidity.

स्त्री—क्या अर्थ हुआ ?

बाबू—भाषामें तो इतनी बातें समझाई नहीं जा सकतीं। मतलब तो यह है कि भाषा पढ़ना अच्छा नहीं।

स्त्री—पर यह पुस्तक इतनी बुरी नहीं है—कहानी अच्छी है।

बाबू—राजा और दो रानियोंकी कहानी होगी, या नलदमयन्ती की होगी।

स्त्री—इनके सिवा क्या और कहानी नहीं है ?

बाबू—फिर तुम्हारी भाषामें और क्या हो सकता है ?

स्त्री—इसमें वह नहीं है, इसमें शराब है, कबाब है—विधवा ब्याह हैं और जोगिनके गीत हैं।

बाबू—Exactly इसीसे तो कहता हूं कि यह सब क्यों पढ़ती हो ?

स्त्री—पढ़नेसे क्या होता है।

बाबू—पढ़नेसे demoralize होता है।

स्त्री—यह फिर क्या कहा—डोम राजा होता है—

बाबू—कैसी मुश्किल है, demoralize यानी चालचलन बिगड़ता हैं।

स्त्री—प्यारे, आप तो बोतल-पर-बोतल उड़ाते हैं, जिनके साथ बैठकर आप खाते पीते हैं उनका चालचलन ऐसा है कि उनके मुंह देखने से भी पाप होता है। आपके भाई-बन्ध डिनरके बाद जिस भाषाका प्रयोग करते हैं उसे सुनकर खानसामे भी कानोंमें उंगलियां डालते हैं। आप जिनके यहां जाकर शराब-कबाबकी लज्जत चखते हैं उनसे संसारका एक भी कुकर्म्म नहीं बचा है, चुपके-चुपके सब करते हैं। उनसे आपका चालचलन खराब होनेका डर नहीं है, मेरे भाषा

पुस्तक पढ़नेसे आपको बड़ा डर लगता है कि, मैं कहीं बिगड़ न जाऊं !

बाबू—हम ठहरे; Brass pot और तुम ठहरीं Earthen pot.

स्त्री—इतना पट-पट क्यों करते हो ? क्या तत्ते घीमें पानीकी बून्दें पड़ गईं खैर, इसे जरा पढ़कर देखो तो सही।

बाबू—(पीछे हटकर) क्या मैं उसे छूकर hand contaminate करूं।

स्त्री—क्या मतलब हुआ ?

बाबू—मैं उसे छूकर हाथ मैला नहीं करता।

स्त्री—हाथ मैला नहीं होगा, झाड़-पोंछ कर देती हूं। (आंचलसे पुस्तक झाड़-पोंछकर पतिके हाथमें देती है, मानसिक मलीनताके भयसे पुस्तक बाबूके हाथसे गिर जाती है।)

स्त्री—फूटे करम ! तुम जितनी घृणा इस पुस्तकसे करते हो उतनी तो तुम्हारे अङ्गरेज भी नहीं करते। सुना है, अङ्गरेज इसका उल्था कर रहे हैं।

बाबू—पागल तो नहीं होगयी ?

स्त्री—क्यों ?

बाबू—भाषा किताबका तर्जुमा अङ्गरेजीमें होगा ? यह चण्डूखाने की गप्प तुमने कहां सुनी ? कहीं यह Seditious किताब तो नहीं है ? ऐसा हो तो Government का तर्जुमा कराना मुमकिन है। यह कौन किताब है ?

स्त्री—विषवृक्ष।

बाबू—मतलब क्या हुआ ?

स्त्री—विष किसे कहते हैं नहीं जानते ? उसीका वृक्ष।

बाबू—बीस यानी एक कोड़ी।

स्त्री—वह नहीं, एक चीज और है जो तुम्हारे मारे मैं खाऊंगी।

बाबू—ओ हो Poison ! Dear me ! उसीका दरख्त, नाम ठीक है–फेंको-फेंको।

स्त्री—अच्छा पेड़की अङ्गरेजी क्या है।

बाबू—Tree.

स्त्री—अब दोनों शब्दोंको इकट्ठा करो तो।

बाबू—Poison Tree ! अहा Poison Tree इस नामकी एक पुस्तकका हाल अखबारोंमें पढ़ा था सही। तो क्या यह भाषाका तर्जुमा था।

स्त्री—तुम्हें क्या मालूम होता है ?

बाबू—मेरा idea था कि यह अङ्गरेजी किताब है। इसीका भाषा तर्जुमा हुआ है। जब अङ्गरेजी है ही तब भाषा क्यों पढ़ती हो ?

स्त्री—अङ्गरेजी ढङ्गसे पढ़ना ही अच्छा है—चाहे बोतल हो चाहे किताब, अच्छा तो वही लो। यह पोथी लो,यह अङ्गरेजीका उल्था है लेखकने स्वयं कहा है—

बाबू—यह पढ़ना तो भी अच्छा है ! किस पुस्तक का उल्था है Robinson Crusoe या Watt on the Improvement of the Mind ?

स्त्री—रङ्गरेजी नाम तो मैं नहीं जानती, भाषा का नाम "छाया-मयी" है।

बाबू—छायामयी ? इसके माने क्या हुआ ? देखूं, (पुस्तक हाथ में लेकर) Dante, by Jove.

स्त्री—(मुस्कराकर) यह मेरी समझमें नहीं आता, मैं गंवार यह सब क्या समझूं, तुम क्या समझा दोगे ?

बाबू—इसमें ताज्जुबकी कौनसी बात है ? Dante lived in the fourteenth century यानी वह fourteenth century में flourish हुआ था।

स्त्री—फुटना सुन्दरीकी पालिश करता था ? तब तो बड़ा कवि था ?

बाबू—बड़ी मुश्किल है ! अरे fourteenth माने चौदह है चौदह ।

स्त्री—चौदह सुन्दरियोंकी पालिश करता था ? चौदह या सोलह, पर सुन्दरियोंकी पालिश क्यों करता था ?

बाबू—यह नहीं, मैं कहता हूं चौदहवीं सेनचुरीमें वह मौजूद था ?

स्त्री—वह चौदह सुन्दरियोंमें न सही चौदह सौ में रहा हो । मैं तो पुस्तकका तात्पर्य जानना चाहती हूं ।

बाबू—Author की Life तो जान लो, वह Florence शहर में पैदा हुआ था वहां बड़े-बड़े Appointments hold करते थे ।

स्त्री—पोर्टमेएटोंमें हलदी करते थे तो ठीक ही है पर आजकल तो नहीं होता है ।

बाबू—अरी वह बड़ी-बड़ी नौकरियाँ करते थे । पीछे Guelph और Ghibilline के झगड़े—

स्त्री—बस अब कृपा करो, समझाना हो तो समझाओ नहीं तो जाने दो ।

बाबू—वही तो समझा रहा हूं, Author की Life जाने बिना उसका लिखा कैसे समझोगी ?

स्त्री—मुझे इन बातोंसे क्या प्रयोजन ? समझाना हो तो पुस्तक का मतलब समझा दो।

बाबू—लाओ देखें इसमें क्या लिखा है ?

[पुस्तक लेकर पहली पंक्ति का पाठ।]

"सन्ध्यागगने निविड़ कालिमा,"

'तुम्हारे पास कोष है क्या ?"

स्त्री—क्यों, किस शब्दका अर्थ चाहिये ?

बाबू—गगन किसे कहते हैं ?

स्त्री—गगन नाम आकाश का है !

बाबू—सन्ध्यागगने निविड़ कालिमा ? निविड़ किसे कहते हैं ?

स्त्री—राम-राम ! इसी विद्यासे तुम मुझे पढ़ाओगे ? निविड़ कहते हैं घनेको, इतना भी नहीं जानते—लाज नहीं आती !

बाबू—लाज क्यों आवे—भाषा वाखा गंवार पढ़ते हैं हम लोग नहीं पढ़ते। पढ़नेसे हमारी बेइज़्ज़ती है।

स्त्री—क्यों तुम लोग कौन हो ?

बाबू—हम लोगोंकी Polished society हैं। गंवार भाषा लिखते और गंवार ही पढ़ते हैं। साहब लोगोंके यहां इसकी कदर नहीं है। Polished Society में भाषा नहीं चलती है।

स्त्री—मातृभाषापर पालिश षष्ठीकी इतनी कड़ी नजर क्यों है।

बाबू—अरे मा तो न जाने कब मर खप गई। उसकी जबान से अब क्या लेना देना है ?

स्त्री—मेरी भी तो वही भाषा है—मैं तो नहीं मरखप गई।

बाबू—Yes for thy sake, my jewel, I shall do it तुम्हारी खातिरसे एक भाषा किताब पढ़ूंगा। पर mind एक ही पढ़ूंगा।

स्त्री—एक ही क्या कम है।

बाबू—लेकिन घरके भीतर द्वार वन्द करके पढ़ूंगा, जिसमें कोई न देख सके।

स्त्री—अच्छा वैसे ही सही।

(चुनकर एक बुरी अश्लील और कुरुचि पूर्ण परन्तु सरस पुस्तक स्वामीके हाथमें देती है। स्वामी आद्योपान्त पढ़ता है।)

स्त्री—कैसी पुस्तक है?

बाबू—अच्छी है। भाषा में भी ऐसी पुस्तकें हैं यह मैं नहीं जानता था।

स्त्री—(घृणा सहित) राम-राम, बस मालूम हुआ तुम्हारी पालिश षष्ठीका हाल। इसी समझपर यह अभिमान, मैं तो समझती थी कि अङ्गरेजी पढ़-लिखकर कुछ अक्ल आती होगी लेकिन देखती हूं तुमलोग रही सही अक्लसे भी हाथ धो बैठते हो—घरके धान पुआल में मिला देते हो। चलो आराम करो।
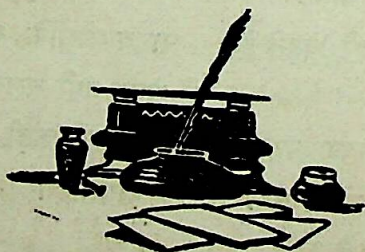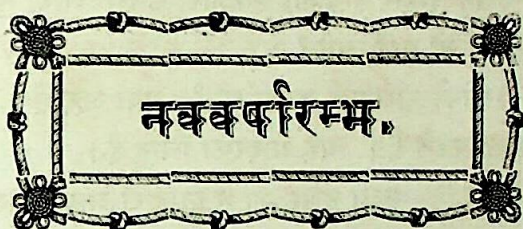
नाटकके पात्र ।

राम बाबू

श्याम बाबू ।

राम बाबूकी स्त्री ।

(देहातिन)

(राम और श्यामका प्रवेश)

(रामकी स्त्री आड़में खड़ी है ।)

श्याम—गुडमौर्निङ्ग राम बाबू हा डू डू ?

राम—गुडमौर्निङ्ग श्याम बाबू हा डू डू ।

(दोनों हाथ मिलाते हैं ।)

श्याम—I wish you a happy new year, and many many returns of the same.

राम—The same to you.

(श्याम बाबूका प्रस्थान और राम बाबूका घरमें प्रवेश)

राम बाबूकी स्त्री—वह कौन आया था ?

राम—वह श्याम बाबू थे ।

स्त्री—उनसे हाथापाई क्यों होती थी ?

राम—क्या कहा हाथापाई कहां हुई ?

स्त्री—उसने तुम्हारे हाथको झकझोर डाला और तुमने उसके हाथोंको—चोट तो नहीं लगी ?

राम—इसीको हाथापाई कहती थी ? क्या अक्ल है। इसे shaking hands कहते हैं। यह आदरका चिन्ह है।

स्त्री—ऐसा ! अच्छा हुआ जो मैं तुम्हारी आदरकी स्त्री नहीं। खैर, चोट तो नहीं लगी ?

राम—जरा सा नखून लग गया है पर उसका कुछ ख्याल नहीं करता।

स्त्री—हाय हाय यह तो छिल गया है। डाढ़ीजार सवेरे सवेरे हाथापाई करने आया था। और ऊपरसे हां डू डू डू करके खेलने आया था। डाढ़ीजारके साथ अब न खेल पाओगे ?

राम—क्या कहा ? खेलकी बात कब हुई ?

स्त्री—जब उसने कहा था हां डू डू डू और तुमने भी वही कहा था। अब यह सब करनेकी उमर तुम्हारी नहीं है।

राम—गंवार स्त्रीके फेरमें पड़कर हैरान हो गया हां डू डू डू नहीं हा डू डू यानी How do ye do ? इसका उच्चारण हा डू डू होता है।

स्त्री—इसके माने ?

राम—इसके माने "तुम कैसे हो ?"

स्त्री—यह कैसे होगा ? उसने पूछा तुम कैसे हो ? तुमने इसका उत्तर न देकर वही सवाल कर डाला।

राम—यही आजकलकी सभ्यताकी रीति है।

स्त्री—बातको दुहराना ही क्या सभ्योंकी रीति है ? तुम अगर मेरे लड़केसे कहो कि क्यों नहीं लिखता पढ़ता है रे गधे ; तो क्या

वह भी इस बातको दुहरावेगा ? क्या यही सभ्योंकी चाल है ?

राम—अरी ऐसा नहीं है। कैसे हो, पूछनेपर उत्तर न दे उलट-कर पूछता है कि कैसे हो, यही सभ्योंकी चाल है।

स्त्री—(हाथ जोड़कर) मैं एक भीख मांगती हूं। तुम्हारी तबी-यत दोनों वेला खराव रहती है। मुझे दिनमें पांच वेर हाल पूछनेको तुम्हारे पास आना पड़ता है। जब मैं आऊं तो हा डू डू कह मुझे भगाया मत करो। मेरे सामने सभ्य न हुए न सही।

राम—नहीं नहीं। ऐसा न होगा। पर यह सब तुम्हें जान रखना अच्छा है।

स्त्री—बतानेसे ही जान लूंगी। बता दो। श्याम बाबू क्या गिटपिट करके चले गये ? अगर हा डू डू खेलने न आये थे तो क्यों आये थे ?

राम—आज नये वर्षका पहला दिन है, इसीसे नये वर्षका आशी-र्वाद देने आया था।

स्त्री—आज नये वर्षका पहला दिन है। मेरे ससुर सास तो चैत सुदी १ को नया वर्ष मानते थे।

राम—आज पहली जनवरी है। हमलोग आजही नया वर्ष मानते हैं।

स्त्री—ससुर तो चैत सुदी १ को मानते थे और तुम १ ली जन-वरीसे मानते हो अब लड़के मुहर्रमसे मानेंगे ?

राम—ऐसा क्या होगा ? अब अङ्गरेजोंका राज है। उनके नये वर्षसे हमारा भी नया वर्ष है।

स्त्री—यह तो अच्छा ही है। पर नये वर्षमें शराबकी इतनी बोतलें क्यों आयी हैं।

राम—खुशीका दिन है, दोस्तोंके साथ खाना पीना होगा।

स्त्री—बहुत ठीक। मैं देहातकी रहनेवाली, मैंने समझा था वर्षारम्भ में जैसे हम जल घट (घड़ा) दान करती हैं वैसे ही तुमलोग वर्षारम्भमें ये शराबकी बोतलें दान करोगे। तुम्हें मना करना चाहती थी कि भगवानके लिए मेरे सास-ससुरके नामपर यह सब दान न करना।

राम—तुम बड़ी बेसमझ हो!

स्त्री—इसमें तो शक ही क्या है। इसीसे और कुछ पूछते डर लगता है।

राम—और भी कुछ पूछोगी?

स्त्री—ये इतने गोभी, सलगम, गाजर, अनार, अंगूर, पिस्ता, बदाम वगैरह क्यों लाये हो? क्या खानेमें इतने खर्च हो जायंगे!

राम—नहीं। वह सब साहबोंकी डाली सजानेके लिए है।

स्त्री—राम राम, ऐसा काम न करना। लोग बड़ी बदनामी करेंगे।

राम—भला क्या कहेंगे?

स्त्री—कहेंगे कि वर्षारम्भमें ये लोग जलका घट दान करनेके साथ साथ चौदह पुरखोंका पिण्डदान भी करते हैं।

(इति—पिटनेके भयसे घरवालीका भागना। राम बाबूका वकील के घर जाना और पूछना कि हिन्दू Divorce कर सकता है कि नहीं।)
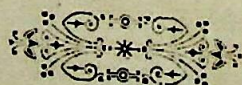
दाम्पत्य दण्ड विधान

अबला सरला समझ कर आज कल हम स्त्रियों पर घोर अत्याचार हो रहा है। मर्दों का मिजाज बहुत बढ़ गया है, अब मर्द स्त्रियों को मानते नहीं हैं, स्त्रियोंके पुराने सब हक मारे जा रहे हैं, अब औरतोंके हुक्मका कोई पाबन्द नहीं है। इन सब विषयोंको ठीक ठीक नियमसे चलानेके लिए हम लोगोंने स्त्रीस्वत्वरक्षिणीसभा स्थापित की है। उस सभाका विशेष समाचार पीछे प्रगट किया जायगा। इस समय कहना यह है कि हम लोगोंके स्वत्वों की रक्षाके लिए सभासे एक सदुपाय स्थिर हुआ है। इसके लिए हम लोगोंने भारत सरकार को दरख्वास्त भेजी है! और उसीके साथ पतिशासनके लिए एक दाम्पत्य दण्डविधानका मसविदा भी भेजा है।

जहां सबकी स्वत्व रक्षाके लिए रोज नये कानून गढ़े जा रहे हैं वहां हम लोगोंके सनातन स्वत्वोंकी रक्षाके लिए कोई कानून क्यों नहीं बनाया जाता। आशा है कि यह कानून जल्दी पास हो जायगा, इसी इच्छासे स्वामी समुदायको सूचित करनेके लिए मैं इसे बङ्गदर्शनमें भेज रही हूं। बहुतसे बाबूलोग मातृ भाषामें कानूनको भली भांति नहीं समझ सकते, खासकर कानूनका भाषानुवाद अक्सर अच्छा नहीं होता, यह कानून अङ्गरेजीमें ही पहले तैयार हुआ था और इसका भाषानुवाद अच्छा नहीं हुआ, जगह २ अङ्गरेजीसे और इससे अन्तर है, इसी लिए मैं अङ्गरेजी और भाषा दोनों भेजती हूं। आशा करती हूं कि बङ्गदर्शनके सम्पादक महोदय हमारे अनुरोधसे एक बार अङ्गरेजीका विरोध छोड़ कर अङ्गरेजी समेत इस कानूनका प्रचार करेंगे। देखनेसे सबको मालूम हो जायगा कि इस कानूनमें कोई नयापन नहीं है ; पहलेका Les Non Scripta केवल लिपिबद्ध हुआ है।

श्रीमती अनन्त सुन्दरी देवी

मन्त्री, स्त्रीस्वत्वरक्षिणीसभा।

THE MATRIMONIAL PENAL CODE.

CHAPTER I.

Introduction.

WHEREAS it is expedient to provide a special Penal Code for the coercion of refractory husbands and others who dispute the supreme authority of Woman, it is hereby enacted as follows :—

1. That this Act shall be entitled the "Matrimonial Penal Code" and shall take effect on all natives of India in the married state.

CHAPTER II.

Definitions.

2. A husband is a piece of moving and moveable property at the absolute disposal of a woman.

दाम्पत्य-दण्डविधान.

पहला अध्याय ।

प्रस्तावना ।

स्त्रियोंके उद्दंड स्वामियोंका शासन करने के लिये एक विशेष प्रकारके कानून की आवश्यकता है। इसलिये निम्नलिखित कानून बनाया जाता है :—

दफा १ । इस क़ानूनका नाम दाम्पत्यदण्ड-विधान होगा। भारतवर्षमें जितने देशी विवाहित पुरुष हैं उन सब पर इसका पूरा असर होगा ।

दूसरा अध्याय ।

साधारण व्याख्या ।

दफा २ । जो जंगम सजीव सम्पत्ति स्त्रियोंके सम्पूर्ण अधिकारमें है उसका नाम पति है ।

Illustrations.

(a) A trunk or a workbox is not a husband, as it is not moving, though a moveable piece of property.

(b) Cattle are not husbands, for though capable of locomotion they cannot be at the absolute disposal of any woman, as they often display a will of their own.

(c) Men in the married state having no will of their own are husbands.

3. A wife is a woman having the right of property in husband.

Explanation.

The right of property includes the right of flagellation.

उदाहरण।

(क) सन्दूक, पेटी आदिको पति नहीं कहना चाहिये, क्योंकि यद्यपि ये सब जंगम अर्थात् अस्थावर सम्पत्ति हैं तथापि सजीव नहीं हैं।

(ख) गाय, भैंस, बछड़े पति नहीं हो सकते क्योंकि यद्यपि ये सजीव पदार्थ हैं तथापि इनमें अपनी इच्छाके अनुसार कार्य करनेकी शक्ति है। इस लिये ये सब स्त्रियोंके सम्पूर्ण रूपसे अधीन नहीं हैं।

(ग) विवाहित पुरुष ही स्वतन्त्रतापूर्वक कोई काम नहीं कर सकते। अतएव पशुओंको पति न कह कर इन लोगोंको ही पति कहना चाहिये।

दफा ३। जो स्त्री अपने पति को सम्पत्ति बनानेका अधिकार रखती है वही अपने पतिकी पत्नी अथवा स्त्री है।

व्याख्या।

सम्पत्तिका अधिकारी अपनी सम्पत्तिको मारने पीटनेका भी अधिकारी है।

4. "The married state" is a state of penance into which men voluntarily enter for sins committed in a previous life.

CHAPTER III
Of punishment.

5. The punishments to which offenders are liable under the provisions of this Code are:—

Firstly—*Imprisonment* which may be either within the four walls of a bed-room or within the four walls of a house.

Imprisonments are of two descriptions, namely:—

(1) Rigoros, that is, accompanied by hard words.

(2) Simple.

Secondly—Transportation, that is to another bed-room.

Thirdly—Matrimonial, servitude.

Fourthly—Forfeiture of pocket-money.

6. "Capital punishment" under this Code means that the wife shall run away to her paternal roof, or to some other friendly house, with the intention of not returning in a hurry.

दफा ४। पुरुषोंके पूर्व जन्मकृत पापोंके प्रायश्चित्त विशेषको "विवाह" कहना चाहिये।

तीसरा अध्याय।
बाबत सज़ा।

दफा ५। इस कानूनके अनुसार अपराधीको निम्नलिखित सज़ा मिलनी चाहिये।

१—शयनागार या किसी अन्य मकानकी चहार दीवारीके बीच क़ैद।

क़ैद दो प्रकारकी होगी :—

(१) कठिन-तिरस्कार युक्त।

(२) तिरस्कार रहित।

२—काला पानी, अर्थात् दूसरी शय्यापर भेजना, अथवा शयन-गृहके बाहर कर देना।

३—पत्नीका दासत्व।

४—जुर्माना, अर्थात् पाकिट ख़र्चके लिये रुपया न देना।

दफा ६। इस कानूनमें फांसी का यह अर्थ समझा जायगा कि स्त्री अपने पिताके घर अथवा किसी सखीके घर चली जायगी और शीघ्र लौटनेकी इच्छा न करेगी।

7. The following punishments are also provided for minor offences:—

Firstly--Contemptuous silence on the part of the wife.

Secondly--Frowns.

Thirdly--Tears and lamentations.

Fourthly--Scolding and abuse.

दफा ७। छोटे-छोटे अपराधियोंके लिये निम्नलिखित दण्ड होने चाहिये :—

१, मान।

२, भृकुटी भंग।

३, चुपचाप आंसू बहाना, अथवा उच्च स्वरसे रोदन।

४, गाली बकना अथवा तिरस्कार करना।

CHAPTER IV

General Exceptions.

8. Nothing is an offence which is done by a wife.

9. Nothing is an offence which is done by a husband in obedience to the commands of a wife.

10. No person in married state shall be entitled to plead any other circumstances as grounds of exemption from the provisions of the Matrimonial Penal Code.

चौथा अध्याय।

साधारण अपवाद।

दफा ८। स्त्रीका किया हुआ कोई काम अपराध नहीं गिना जायगा।

दफा ६। स्त्रीकी आज्ञानुसार पतिका किया हुआ काम भी अपराध न गिना जायगा।

दफा १०। कोई विवाहित पुरुष यह उज्र नहीं पेश कर सकेगा कि वह दाम्पत्य-दण्ड-विधानकानूनके अनुसार दण्डनीय नहीं है।

CHAPTER V.

Of Abetment.

11. A person abets the doing of a matrimonial offence, who

पांचवां अध्याय।

अपराध करनेकी सहायताके विषय में।

दफा ११। वह व्यक्ति दाम्पत्य-अपराधोंकी सहायता करता है जो—

Firstly—Instigates, persuades, induces or encourages a husband to commit that offence.

Secondly—Joins him in the commission of that offence or keeps his company during its commission.

Explanation.

A man not in the married state or even a woman may be an abettor.

Illustrations.

(*a*) A, the husband of B and C, an unmarried man, drink together. Drinking is a Matrimonial offence. C has abetted A.

(*b*) A, the mother of B, the husband of C, persuades B to spend money in other ways than those which C approves. As spending money in such ways is a Matrimonial offence, A has abetted B.

१, पतिको अपराध करनेमें कान भरता, प्रवृत्ति दिलाता अथवा उत्साहित करता है।

२, या उसके सङ्ग उस अपराध करनेके समय तक रहता है।

व्याख्या।

अविवाहित पुरुष अथवा स्त्री दाम्पत्य-अपराधकी सहायता कर सकते हैं।

उदाहरण।

(क) राम श्यामाका पति है। यदुनाथ अविवाहित पुरुष है। दोनोंने एक साथ बैठकर मद्यपान किया है। मद्यपान करना दाम्पत्य-अपराध है। अतएव यदुनाथने रामकी सहायता की।

(ख) सुशीला रामकी माता है। राम श्यामा का पति है। श्यामा जिस प्रकार रुपया खर्च करनेके लिये कहती है वैसे न करके रामने सुशीलाके परामर्शसे रुपया खर्च किया। स्त्रीके मतके विरुद्ध खर्च करना दाम्पत्य-अपराध है। अतएव सुशीलाने उस अपराधकी सहायता की।

12, When a man in the married state, abets another man in the married state, in a Matrimonial offence, the abettor is liable to the same punishment as the principal provided that he can be so punished only by a Competent Court.

Explanation.

A Competent Court means the wife having right of property in the offending husband.

13. Abettors who are females or male offenders not in the married state are liable to be punished only with scolding, abuse, frowns, tears and lamentations.

CHAPTER VI.

Of offence against the State.

14. "The state" shall, in this Code, mean the married state only.

15. Whoever wages war against his wife or attempts to wage such war, or abets the waging of such war, shall be punished capitally, that is, by separation or by transportation

दफा १२। यदि कोई विवाहित पुरुष किसी विवाहित पुरुष को दाम्पत्य-अपराधमें सहायता करे, तो वह भी असल अपराधी के समान दण्डनीय होगा। उसका दण्ड उपयुक्त न्यायालय के बिना न होगा।

व्याख्या।

यहांपर उपयुक्त न्यायालय से मतलब उस स्त्री से है जिसके पतिने अपराध किया है।

दफा १३। स्त्री अथवा अविवाहित पुरुष दाम्पत्य-अपराध की सहायता करनेसे केवल तिरस्कार, भृकुटीभङ्ग, नीरव अश्रु-पात अथवा रोदन द्वारा ही दण्डनीय होंगे।

छठा अध्याय।

राजविद्रोहके बिषय में।

दफा १४। इस कानून में "राज" शब्द का अर्थ विवाहित दशा है।

दफा १५। जो कोई अपनी स्त्री के साथ विवाद करे, अथवा विवाद करने का उद्योग करे, अथवा विवाद करनेमें किसी को सहायता करे, उसको प्राण-दण्ड दिया जायगा—अर्थात् उसको

to another bed-room and shall forfeit all his pocket money.

स्त्री उसे त्याग देगी, अथवा शयनागरसे पृथक् कर देगी, और पाकेट खर्च बन्द कर देगी।

16. Whoever induces friends or gains children to side with him, or otherwise prepares to wage war with the intention of waging war against the wife, shall be punished by transporation to another bed-room and shall also be liable to be punished with scolding and with tears and lamentations.

दफा १६। जो कोई व्यक्ति अपने मित्रोंको सहायक बना कर अथवा सन्तानको वशीभूत करके अथवा और किसी प्रकार से स्त्री के साथ विवाद करनेके अभिप्राय से विवाद करेगा, उसको देश-निकाले को सज़ा दी जायगी—अर्थात् दूसरे शय्या-गृहमें भेजा जायगा, और अश्रुपात तिरस्कार तथा रोदन के द्वारा दण्डनीय होगा।

17. Whoever shall render allegiance to any woman other than his wife shall be guilty of incontinence.

दफा १७। जो व्यक्ति अपनी स्त्री को छोड़ अन्य स्त्रीपर आसक्त होगा वह "लाम्पट्य" नामक अपराधका अपराधी होगा।

Explanation.

१ व्याख्या।

(1) To show the slightest kindness to a young woman, who is not the wife, is to render such young woman allegiance.

स्त्री को छोड़ किसी अन्य युवती पर किसी प्रकार की दया अथवा अनुकूलता दिखाने से ही लाम्पट्य-दोष सिद्ध समझा जायगा।

Illustration.

उदाहरण।

A is the husband of B and C is a young woman. A likes C's baby because he is a nice

राम श्यामा का पति है। मोहिनी एक दूसरी युवती है। मोहिनी का छोटा बच्चा देखने में

child and gives him buns to eat. A has rendered allegiance to C.

Explanation.

(2) Wives shall be entitled to imagine offences under this section, and no husband shall be entitled to be acquitted on the ground that he has not committed the offence.

The simple accusation shall always be held to be conclusive proof of the offence.

Explanation.

(3) The right of imagining offence under this section shall be held to belong, in general to old wives, and to women with old and ugly husbands; and a young wife shall not be entitled to assume the right unless she can prove that she has a particularly cross temper or was brought up a spoilt child or is herself supremely ugly.

18. Whoever is guilty of incontinence shall be liable to all the punishments mentioned in this Code and to

बड़ा सुन्दर है। इसलिये राम उसको प्यार करता है और कभी कभी उसे मिठाई भी खिलाता है। अतएव राम मोहिनीपर आसक्त है।

२ व्याख्या।

इस अपराधमें विना कारण पति को अपराधी ठहराने का स्त्रियों को अधिकार होगा। मैंने अपराध नहीं किया है, यह कह कर कोई पति छुटकारा न पा सकेगा।

अपराध लगानेही से अपराध प्रमाणित समझ लिया जायगा।

३ व्याख्या।

विना कारण पति को इस अपराध का अपराधी होने की विवेचना करने का अधिकार विशेष रूपसे प्राचीना स्त्रियों को ही होगा, अथवा जिन लोगों के पति कुरूप अथवा बूढ़े हैं उन्हीं स्त्रियों को होगा। यदि कोई युवती इस अधिकार को लेना चाहे तो उसे पहले यह प्रमाणित करना होगा कि वह बदमिज़ाज है अथवा बापके घरकी लाडली है।

दफा १८। जो पुरुष लम्पट होगा वह इस कानूनमें लिखे हुए सब प्रकार के दण्डों द्वारा दण्डित

other punishments not mentioned in the Code.

होगा। उनके सिवा और दण्ड भी, जो इस कानूनमें नहीं लिखे, हैं उसको दिये जायंगे।

CHAPTER VII.

Of Offence relating to the Army and Navy.

सातवां अध्याय।

पल्टन और नौका-सम्बन्धी अपराध।

19. The Army and Navy shall, in this Code, mean the sons and daughters and the daughters-in-law,

दफा १९। इस कानून में पल्टन और नौ-सेना का अर्थ लड़के, कन्या और पुत्रवधू समझा जायगा।

20. Whoever abets the committing of mutiny by a son or a daughter-in-law shall be liable to be punished by scolding and tears and lamentations.

दफा २०। गृहिणी के साथ विद्रोह करनेमें जो पति पुत्र कन्या अथवा पुत्रवधू की सहायता करेगा वह तिरस्कार और रोदनके द्वारा दण्डनीय होगा।

CHAPTER VIII.

Of Offences against the domestic Tranquillity.

आठवां अध्याय।

घरमें शान्ति-भङ्ग करने का अपराध।

21. An assembly of two or more husbands is designated an unlawful assembly if the common object of such husband is,

दफा २१। दो अथवा इससे अधिक विवाहित पुरुषोंका जमाव यदि निम्न-लिखित किसी अभिप्रायके निमित्त हो तो वह बेकानूनी जमाव कहा जायगा:—

Firstly—To drink as definded below or to commit any other matrimonial offence;

१, मद्यपान करना अथवा किसी अन्य प्रकार का दाम्पत्य-अपराध करना,

Secondly—To over-awe, by show of authority, their wives from the exercise of the lawful authority of such wives;

२, अधिकारके बलपर डरा कर कानून के अनुसार प्रभुत्व प्रकाशित करनेसे निवृत्त करने के लिये स्त्रियोंको धमकी देना;

Thirdly—To resist the execution of a wife's order.

22. Whoever is a member of an unlawful assembly shall be punished by imprisonments with hard words, and shall also be liable to contemptuous silence or to scolding.

Of drinking wines and spirits.

23. Any liquid kept in a bottle and taken in a glass vessel is wine and spirits.

24. Whoever has in his possession wine and spirits as above defined, is said to drink.

Explanation.

He is said to drink even though he never touches the liquid himself.

25. Whoever is guilty of drinking shall be punished with imprisonment of either description within the four walls of a bedroom during the evening hours and shall also be liable to scolding.

Of rioting.

26. Whoever shall speak in a ungentle voice to his wife shall be guilty of domes-

३, किसी स्त्री के आज्ञानुसार काम होनेमें विघ्न डालना;

दफा २२। जो पुरुष बेकानूनी जमावमें शामिल होगा वह कठिन तिरस्कार-युक्त क़ैद, अथवा मान या तिरस्कार के द्वारा दण्डित होगा।

मद्यपान के विषय में।

दफा २३। जो जलवत् तरल वस्तु बोतलमें रहती है और कांच के ग्लासमें डाली जाती है उसे मद्य कहते हैं।

दफा २४। पूर्वोक्त लिखित मद्य जो घरमें रक्खे वही मद्यपायी है।

व्याख्या।

यदि वह उसे अपने हाथ से छुये भी नहीं तो भी मद्यपायी कहा जायेगा।

दफा २५। जो मद्यपायी है वह रोज सन्ध्या होते ही शय्या-गृहकी चहारदीवारीके अन्दर क़ैद किया जायगा और तिरस्कार वाक्य सुना करेगा।

दंगा करने की बाबत।

दफा २६। स्त्री के साथ कर्कश स्वर से बात करने का ही

tic rioting

27. Whoever is guilty of domestic rioting shall be punished by contemptuous silence or by scolding or by tears and lamentations.

नाम दंगा करना है।

दफा २७। जो कोई अपने घर में दंगा करेगा, उसको रोने, तिरस्कार और अश्रुपात के दण्ड से दण्डनीय हो पड़ेगा।

हिन्दी के चुने हुए उपन्यास।

वङ्गभाषाके साहित्य सम्राट्, भारतीय उपन्यास
जगत् के राजा

बाबू बंकिमचन्द्र चटर्जी के

उपन्यासों का हिन्दी अनुवाद।
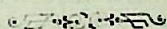
इन्दिरा	॥)	युगलाङ्गुरीय	।)
कपाल-कुण्डला	॥=)	रजनी	॥)
कृष्णकान्त की विल	१)	राधारानी	।)
चन्द्रशेखर	१॥)	राजसिंह	१॥)
दुर्गेशनन्दिनी	॥)	विषवृक्ष	१)
देवी चौधरानी—सजिल्द	१।)	सीताराम-रेशमी जिल्द	१॥)
मृणालिनी	॥=)	मृणमयी	॥)

हास्य—कौतुक।

उलट फेर-जी० पी० श्रीवास्तव	॥≡)	बीरबल विनोद	१-)
कलियुगी प्रहलाद	≡)	भोज और कालिदास	॥=)
चुटकुले	।=)	मिस्टर व्यास की कथा	।)
नोक झोंक (जी० पी० श्रीवास्तव	॥=)	चौबेका चिट्ठा-वङ्किम बाबू	॥)
नवीन बाबू	≡)	मार-मार कर हकीम	॥=)
		शिव शम्भूका चिट्ठा	।)

हिन्दीमें बिलकुल नई चीज

सेवासदन

हिन्दीमें यह सबसे पहला सर्वोत्तम, स्वतन्त्र, अत्यन्त रोचक और शिक्षाप्रद उपन्यास है। इस उपन्यासकी हिन्दीके बड़े २ सम्पादकों, विद्वानों और लेखकोंकी मुक्तकगठसे की हुई प्रशंसाका सारांश पढ़िए--

अभ्युदय सम्पादक **श्रीयुक्त कृष्णकान्तजी मालवीय बी० ए०**— "इस उपन्याससे हिन्दी भाषाका मस्तक ऊंचा हुआ है और बंगला, मारठी, गुजराती तथा अंगरेजीके श्रेष्ठ उपन्यासोंसे इसकी तुलना की जा सकती है। कथानककी दृष्टिसे देखिये, विषयकी मार्मिकताकी दृष्टिसे देखि , उप, देशके भावसे देखिये, भाषाकी दृष्टिसे देखिये, सभी दृष्टियोंसे आपको यह स्वीकार करना पड़ेगा कि यह उपन्यास नहीं वरन् उन्यास सम्राट् है। पुस्तक पढ़नेके बाद आपकी आत्मा पवित्रतर हो जाती है, आप साधारण मनुष्य जीवनसे ऊपर उठ जाते हैं। प्रेमचन्दजीमें विलक्षण लिखनेकी शक्ति है उनकी बातं हृदय पर चोट करती हैं जगह करती हैं और भीतर प्रवेश कर जाती है। मेरी समझमें हिन्दीके उपन्यासोंमें सर्व श्रेष्ठ है और प्रत्येक पुरुष, स्त्री और बालकको इसे पढ़ना चाहिए। बालक और बालिकाओंके लिए इसका पढ़ना उतना ही आवश्यक होना चाहिये जितना कि उनका अच्छासे अच्छा और जरूरीसे जरूरी उनका सर्वोत्तम काम। आधुनिक समयमें इसकेपढ़नेसे रामायण और गीता पाठकरनेका फल मिलेगा।"

प्रसिद्ध राष्ट्रीयपत्र प्रतापके सम्पादक **श्रीयुक्त गणेशशङ्करजी विद्यार्थी, प्रोफेसर रामदासजी गौड़ एम० ए० और पं० पद्मसिंहजी शर्म्मा,** जैन-समाजके प्रसिद्ध विद्वान् **श्रीमान् पूर्णचन्दजी नाहर एम० ए० बी० एल०,** कलकत्ता कस्टमके असिस्टंट कलक्टर **श्रीयुक्त शिवचरणजी सत्यवादी एम० ए०,** प्रसिद्ध चित्रकार **श्रीयुक्त रामेश्वरप्रसादजी वर्मा** आदि सज्जनोंने इस उपन्यास को हिन्दीमें सर्व श्रेष्ठ बतलाते हुए इसकी बड़ी प्रशंसा की है।

५२५ पृष्ठ की एंटिक कागजपर साफ छपी हुई बढ़िया कपड़ेकी सुनहरे अक्षरोंकी मनोहर मजबूत जिल्द मूल्य केवल ३॥) रु०

हिन्दीकी उपयोगी पुस्तकें।

सप्तसरोज—हिन्दीके सर्व श्रेष्ठ उपन्यास सेवासदन लेखक श्रीमान् प्रेमचन्द्जीकी रचना। इसमें सात अत्यन्त रोचक ओर शिक्षाप्रद गल्पें हैं। सबके पढ़ने योग्य हैं। भाषा सरल और मधुर है। अनेक भाषा के विद्वानों ने इस पुस्तक की प्रशंसा की है। कवरिङ्ग बहुत ही भावमय सुन्दर सचित्र है, कागज़ छपाई आला दर्जे की। मूल्य केवल ॥) आना।

कर्मवीर गान्धी के महत्व पूर्ण लेख और व्याख्यान।

इसमें गान्धीके २१ लेख और व्याख्यान हैं, उनका कोई खास लेख या व्याख्यान छूटने नहीं पाया है। गान्धीजी के सिद्धान्त समझ कर अपने जीवन को उच्च बनाने के लिये यह एक ही पुस्तक है। इसे पढ़ कर मन पवित्र होजाता है और हृदय में सन्तोष उत्पन्न होता है। सरस्वतीने इस पुस्तक की बहुत तारीफ की थी। कागज़ और छपाई बढ़िया, मूल्य केवल १।) उपहार देने लायक बढ़िया रेशमी जिल्द १॥)

महात्मा शेखसादी—लेखक श्रीमान् प्रेमचन्दजी, जगत् प्रसिद्ध महात्मा शेखसादी का मनोरञ्जक और उपदेशप्रद जीवन चरित, उनका अनूठा भ्रमण वृत्तान्त, उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ गुलिस्तां और बोस्तां की उदाहरणों सहित आलोचना। सादी की ऐसी अच्छी अच्छी कहावतें और नीति कथायें हैं कि पढ़कर सदा स्मरण रखने की इच्छा होती है। दाम ।✓)

जमसेदजी नसरवानजी ताता—भारत के उद्योग-वीर, दानवीर ताता का नाम भारतमें किसी पढ़े-लिखे आदमीसे छिपा नहीं है। उन्हींका यह जीवन-चरित्र हिन्दी संसारके सुप्रसिद्ध लेखक श्रीमान् पण्डित मन्ननजी द्विवेदी गजपुरी बी. ए. एम. आर. ए. एसने लिखा है। सरस्वती, माडर्न रिव्यू तथा लीडर आदि अनेक बड़े-बड़े पत्रोंने इसकी तारीफ की है। सचित्र है। मूल्य केवल ।)

विवेक वचनावली—इसे स्वामी विवेकानन्दके ग्रन्थों का सार कहना चाहिये। इसके उपदेश आपको काम करना और संसार में मर्दों की तरह जीवन व्यतीत करना सिखावेंगे। हर आदमी को यह गुटका पाकेट में रखना चाहिये। कवरिङ्गपर स्वामीजी का अति सुन्दर चित्र। दाम सिर्फ ≋)

जेवनार—लेखिका श्रीमती सत्यवतीदेवी गजपुरी। इसमें दाल, भात, रोटी, साग, तरकारी, चटनी, पकौड़ी, रायता, पापड़, आचार, मुरब्बा नमकीन, मिठाई आदि सैकड़ों चीजें वनाने की सरल भाषामें समझाई गई हैं। इस पुस्तक में मांसका कहीं जिक्र नहीं है। हर गृहस्थको इसकी एक-एक प्रति मंगाकर अपनी बहू, बेटी और स्त्री के हाथमें देनी चाहिए। ३३३ पन्ने की पुस्तक का मूल्य केवल ।)

यू० पी० को टेक्स्टबुककमेटीने इसे लड़कियों को इनाम देने के लिये लाइब्रेरियोंके लिए और अध्यापकों के लिये स्वीकार किया है।

सद्दर्शन—यदि परमात्मा और जीवका, स्वर्ग नर्कका, इस जन्म और पुनर्जन्म का रहस्य जानना चाहते हों, आध्यात्मिक बातों से प्रेम हो तो पुस्तक को जरूर मंगाकर पढ़िये। भाषा बहुत ही मनोहर और जोरदार है, बीच-बीच में सुन्दर उपदेशप्रद कवितायें हैं। २३० पेजकी रायल आटपेजी पुस्तक का मूल्य केवल ॥≤) रेशमी जिल्द ४।) बड़ सस्ती पुस्तक है।

ज्योतिष-शास्त्र--लेखक श्रीयुक्त दुर्गाप्रसाद खेतान एम. ए. बी. एल. एटर्नी कलकत्ता हाईकोर्ट। रात-दिन क्यों होते हैं? जाड़ा गर्मी बरसात का क्या भेद है? चन्द्रमा, सूर्य, पृथ्वी और इन तारों का क्या तत्त्व है? ग्रहण किसे कहते हैं? ये सब बातें बड़े बड़े पण्डित भी नहीं जानते। लेकिन आप इस पुस्तक की सहायता से सब बातें जान सकते हैं। ३६ परिच्छेदों में ४६ तस्वीरें देकर सब बातें समझाई गई हैं। सरस्वती ने दो बार इस पुस्तक की तारीफ की है। हर घरमें इसकी एक प्रति होनी चाहिये। मूल्य केवल ॥) इतनी सस्ती दूसरी पुस्तक न होगी।

विनोद--बच्चोंके लिये ५० मनोहर कवितायें। अगर आप अपने बच्चोंको सरल, उपदेशप्रद कवितायें याद कराना चाहते हों तो इसे जरूर खरीदिये। मूल्य केवल ≶)

ब्रजभाषा बनाम खड़ी बोली--दो हिन्दी के नामी गिरामी विद्वानों की लच्छेदार बहस। भाषा रसिकों के काम की चीज़। दाम ≶)

नेत्रोन्मीलन नाटक——हिन्दीके प्रसिद्ध लेखक मिश्र-बन्धुओंकी अनूठी रचना। इस नाटकमें पुलिसके हथकंड़ों और अत्याचारोंका सच्चा वर्णन है। इसमें दिखाया गया है कि वकील मुकद्दमे कैसे चलाते, झूठे गवाह कैसे गढ़ते और दिन दहाड़े न्यायकी आंखोंमें कैसे धूल झोंकते हैं और किस प्रकार एक झूठा मुकद्दमा बड़ेसे बड़े न्यायालयको भी धोखा दे सकता है। इसमें उर्दू, गंवारी तथा अन्य कितनी ही भाषाओंके मजेदार नमूने मिलेंगे। मूल्य ।≶)

ऐतिहासिक लेख संग्रह—लेखक श्रीयुक्त राम-

कुमार गोयनका। इसमें इतिहास सम्बन्धी ६ निबन्ध हैं। इन लेखों में बहुतसी उपयोगी बातें हैं। सरस्वती माडर्न रिव्यू आदि पत्र पत्रिकाओंने बहुत तारीफ की है। निबन्ध प्रेमियोंके कामकी चीज़ है। पुस्तकमें कई चित्र हैं। दाम ।≈)

परीक्षा गुरु—लेखक लाला श्रीनिवासदास। हिन्दीके उपन्यासोंमें वेजोड़ शिक्षाप्रद उपन्यास है। इसे पढ़कर आदमी संसारमें ठगाता नहीं और दुराचारसे बचा रहता है। ३३५ पन्नेकी मोटी पुस्तक दाम सिर्फ ॥।)

रणधीर प्रेम मोहिनी नाटक—हिन्दीमें जो कई अच्छे स्वतन्त्र नाटक हैं उनमें इसकी गणना की जाती है। इसमें आपको प्रेम रसकी चाशनी भी चखनेको मिलेगी। मूल्य ॥)

अभागिनी

रचयिता बङ्गभाषाके प्रसिद्ध लेखक श्रीयुक्त जलधर सेना। अनुवादक पं० सुरेन्द्रनाथ उपाध्याय। जिन उपन्यासोंको आप निस्सङ्कोच भावसे स्त्री, पुरुष, युवक, बालक बालिका सबके हाथमें दे सकते हैं उनमें इसका ऊंचा दर्जा होना चाहिए। समाजका चित्र हैं घटनायें हैं और शिक्षाप्रद है। बङ्गलामें इसके कई संस्करण हो चुके हैं। मूल्य केवल १)

धर्मतत्त्व.

यह पुस्तक बङ्ग भाषाके साहित्य सम्राट् बङ्किम बाबू की पुस्तकका अनुवाद है। धर्मका तत्त्व जानना हो तो इसे मंगाना चाहिए। मूल्य केवल ॥≈)

सब पुस्तकें मिलनेका पता :—

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, १२६, हरिसन रोड, कलकत्ता.

हिन्दीकी उत्तमोत्तम पुस्तकें
मँगानेके लिये हिन्दुस्थानमें सबसे बड़ी दूकान
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी.
हरिसनरोड, कलकत्ता.
बड़ा सूचीपत्र मुफ्त।
छपाईका काम
हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला, उर्दू चाहे जिस भाषाका
छोटा या बड़ा, रंगीन या सादा
अगर
बढ़िया चाहें,
जल्दी चाहें,
सस्ता चाहें,
तो यह पता याद रखिए
"वणिक् प्रेस"
मिर्जापुर स्ट्रीट, कलकत्ता.